बैतालपचीसी ॥

जिस्में

श्रीमन्महाराज राजेन्द्र वीर विक्रमादित्य और
बैताल के प्रश्नोत्तर न्याय शास्त्रानुसार
अनेक विचित्र और सुललित
कहानियों में वर्णित हैं

रस रसिक विलासियों और विद्यानुरागियों के मनोरंजनार्थ

पण्डित रामरत्न वाजपेयि के द्वारा देव नागरी
प्रचलित भाषा में शुद्ध होय"

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापाख़ाना यन्त्रालय में
तीसरीबार मुद्रित हुआ

जून सन् १८७७ ई०

पुस्तकों की फ़ेहरिस्त ॥

इस महीने अर्थात् जून सन् १८७७ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस सूचीपत्र में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर नियत हुवा है परंतु व्यापारियों के लिये [illegible] भी सस्ती होंगी जिनको व्योपार की इच्छा हो वह छापेखाने के [illegible] मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय कर[illegible] अथवा

नामपुस्तक	नामपुस्तक	[illegible]
दुर्गापाठसटीक	बिक्रमबिलास	
अपराधभंजनस्तोत्र	अवधयात्रा	हनूमान बाहु[illegible]
मार्कण्डेयपुराण	ज्ञानचालीसी	सुन्दरीचरित्र
श्रीमद्भागवतस०स्कन्ध१२	रसराज	पद्मावतीखण्डआलखंड
तथादशमस्कन्ध	सामुद्रिक	याज्ञवल्क्यटीका सहित
लघुकौमुदी	बारहमासाफ़क़ीर अला-	मुहूर्त्त चिन्तामणिसारिणी
शङ्करदिग्विजय भाषा	बख़्श	शब्दार्थकोश
वैद्यजीवन	इन्द्रजालनागरी	लावनीवशेरबनारसी
किताबपटवारी ४ भाग	कथागंगाजी	अमरबिनोद
वैतालपच्चीसीनागरी	रामायणनागरीटैपकी	पारासरीसटीक
दानलीलानागलीला	रामायण जिल्द बंधी	युगलबिलास
ब्रह्मसार	रामायणतुलसीकृत	ज्ञानमाला
परमार्थसार	रामायणतुलसीकृतस०	भा०महाभारतमुक्तावली
प्रेमसागर	सतसईरामायण	रमलसारनागरी
सूरसागर	कवितावलीरामायण	देवज्ञाभरण
रागप्रकाश	गीतावलीरामायण	जनकपच्चीसी
भक्तमाल	रामायणदोहावली	शृंगारप्रकाश
महिम्नस्तोत्र	कायस्थकुलभास्कर	नानार्थनोसंग्रहवली
सभाबिलास	क़िस्सह गोपीचन्दभरथरी	संग्रहावली
वैद्यमनोत्सव	शीघ्रबोध	दूसरीपुस्तकरामायण
लीलावतीभाषा	श्रीगोपालसहस्रनाम	माला
अमृतसागर	गणितकामधेनु	तीसरीरामायणगीतअष्टक
अमृतसागर बड़ी	बहारबिन्द्राबन	चौथी ज्ञान दोहावली
		पांचवीं रससारिणी

श्रीगणेशायनमः ॥

बैताल पच्चीसी

इस कथा का प्रारम्भ इस प्रकार से है कि मुहम्मदशाह बादशाह के ज़माने में राजा जयसिंह सवाईने जो मालिक जयनगर का था सूरत नाम कवीश्वर से कहा कि बैताल पच्चीसी को जो ज़बान संस्कृत में है तुम ब्रज भाषा में कहो तब उसने बमूजिब हुक्म राजा के ब्रज की बोली में कही अब वह खड़ी बोली में होकर छापी जाती है जिस में सब लोगों की समझ में आवै ॥

—0—

प्रथम कहानी का आरम्भ ॥

धारानगर नाम एक शहरथा वहां का राजा गन्धर्बसेन था उसके चार रानियां थीं उनसे छः बेटे थे एक से एक पण्डित और बलवानथा क़ज़ा बश थोड़े दिनों में वह राजा मरगया और उसकी जगह बड़ाबेटा शंखनाम राजा हुआ फिर कितने दिनों पीछे उसका छोटा भाई विक्रम बड़े भाई को मारकर आप राजा हुआ और निर्विघ्न राज करने लगा दिनों दिन उसका राज ऐसा बढ़ा कि सम्पूर्ण जम्बूद्वीप का राजा हुआ और अचल राज करके शाका बांधी कितने दिनोंके पीछे राजाने यह अपने मनमें विचारा कि जिन मुल्कों का नाम मैं सुनता हूं उनकी सैर किया चाहिये यह अपने मनमें ठान राजगद्दी अपने छोटे भाई भर्टहर को सौंप आप योगी बन मुल्क २ की और बन बनकी सैर करने लगा एक ब्राह्मण उस नगर में तपस्या करता था एक दिन देवता ने

यह उसे कहा कि इस नगर में चन्द्रभान नाम एक राजा
बड़ा दाता था संयोग वश एक दिन वह जंगल को निकल
गया तो देखता क्या है कि एक तपस्वी वृक्ष में उलटा लटका
हुआ है और धुआं पीपी कर रहता है न किसी से कुछ लेता
है न बात करता है उसकी यह दशा देख राजा ने अपने घर
सभा में बैठकर यह कहा जो कोई उस तपस्वी को लावे वह
लाख रुपये पावे इस बात को सुनकर एक वेश्याने राजा के
पास आ यह विनय की कि यदि महाराज की आज्ञा पाऊं
तो उसी तपस्वीसे एक लड़का उत्पन्न करा उसीके कांधेपर
चढ़ाकर लेआऊं इस बातके सुन्नेसे राजाको आश्चर्य हुआ
और उस वेश्याको तपस्वीके लानेके लिये बीड़ा देकर बिदा
किया वह उस बनमें गई और योगीकी कुटीपर पहुंच कर
देखती क्या है कि वह योगी सचही उलटा लटक रहा है न
कुछ खाता है न पीता है और सूख रहा है तो उस वेश्या ने
हलुआ पका उस तपस्वी के मुंह में दिया उसे मीठा मीठा
जो लगा तो वह उसे चाट गया फिर उस वेश्या ने और लगा
दिया इसीतरह से दो दिन तक हलुवा चटाया की उसके
खानेसे योगीके शरीरमें कुछ बल हुवा तब उसने आंखेंखोल
वृक्ष से नीचे उतर उसे पूछातू यहां किस कामको आई है
वेश्याने कहा मैं देव कन्या हूं स्वर्ग लोक में तपस्या करती
थी अब इस बनमें आईहूं फिर उस तपस्वीने कहा तुम्हारी
मढ़ी कहां है हमें दिखावो तब वह वेश्या उस तपस्वी को
अपनी मढ़ीमें लाकर षटरस भोजन करवाने लगी तो तप-
स्वी ने धुआं पीना छोड़ दिया और प्रति दिन खाना खाने
पानी पीने लगा निदान बल पाकर काम देवने उसे सताया
फिर तपस्वी ने उससे भोग किया योग खोया और वेश्या
को गर्भरहा समय पर पुत्र उत्पन्नहुआ जब कई महीने का
हुआ तब उस वेश्या ने तपस्वी से कहा कि गुसाईं जी अब

चलकर तीर्थयात्रा कीजिये जिस्से शरीर केसब पाप कटें
ऐसी बातें कर उसे भुला लड़का उसके कंधे पर चढ़ा रा-
जाकी मजलिसको चली कि जहांसे वह उस बातका बीरा
उठा आई थी जिस समय राजा के सम्मुख पहुंची राजा
उसको दूरसे पहिचान और लड़के को उस तपस्वी के कंधे
पर देख सभासदों से कहने लगा देखो तो यह वही वेश्या
है जो योगी के लेनेको गई थी उन्होंने बिनय की कि महा-
राज सच्च कहते हैं देखिये कि जो२ बातें हजूर में विनय
करगई थी वे सब देखने में आईं ये बातें राजा की और मज-
लिसियों की सब योगीने सुनी तौ समझा कि राजा नेमेरी
तपस्या डिगाने को यह यत्न किया था योगी यह अपने जीमें
बिचार कर वहां से उलटा फिर शहरके बाहर निकल उस
लड़केको मार डाला और जंगलमें जाय योग करनेलगा थोड़े
दिनोंमें वहराजा मृत्युवश हुआ और योगीने योगपूरा किया
इसका ब्यौरा इसप्रकारसे है कि तुम तीन आदमी एकनगर
और एक नक्षत्र योग मुहूर्त में पैदाहुये हो तुमने राजा के
घर में जन्म लिया दूसरा तेली के हुआ तीसरा योगी कुम्हार
के घरमें पैदा हुआ तुमतो यहां का राज करतेहो और ते-
लीका बेटा पातालके राज्यका मालिक था सो उस कुम्हारने
अच्छी तरह से अपना योग साधा और तेली को मार मर-
घटमें पिशाच बना सिरसे के वृक्ष में उलटा लटका रक्खा है
और तेरे मारनेके विचारमें है यदि तू उस्से बचेगा तौ राज
करैगा इस अहवालसे मैंने तुझे सचेत किया तू उस्से ग़ा-
फ़िलमत रहना इतनी बातकहकर देव तो चलागया राजा
अपने महलमें विराजमान हुआ जब सबेरा हुआ तौ राजा
बाहर निकल बैठा और दरबार आमको हुक्म दिया जितने
छोटेबड़े नौकर चाकरथे सबने आ२ कर हजूरमें नजरेंदीं
और बाजन बजने लगे सम्पूर्ण शहर में बड़ी आनन्द और

सबसामान ले मरघट में जा बैठा और यहां राजा अपने जी में विचार करने लगा इतने में वह समय भी आन पहुंचा तब राजा वहां तलवार बांध लंगोट कस अकेला रात को योगी के पास जा पहुंचा और उसको आदेश सुनाया योगी ने कहा आवो बैठो फिर राजा वहां बैठ गया तो देखता क्या है कि चारों तरफ भूतप्रेत डायन तरह तरहकी भयानक सूरतें बनाये नाचते हैं और योगी बीच में बैठा दो कपाल बजाताहै राजाने यह देखकुछ डरभय न किया और योगी से कहा मुझे क्या आज्ञाहै उसने कहाराजा तुम आये हो तो एक काम करो यहांसे दक्षिण ओर दो कोस पर एक मरघट है उसमें एक शिरस का वृक्ष है तिसमें एक मुर्दा लटका है उसे मेरे पास तुर्त लाओ कि मैं यहां पूजा करता हूं राजा को उधर भेज आप आसन मार जप करने लगा। एकतो अन्धेरी रात डरातीथी दूसरे मेहकी ऐसीझड़ी लगी हुई थी मानो आज बरस कर फिर कभी न बरसेगा और भूत प्रेत ऐसा शोर गुल करते थे कि शूर बीर भी हो तौ देख के घबरा जावे परंतु राजा अपनी राह चलाजाता था सांप जो आन २ कर पांव में लपटते तो उन को मंत्र पढ़ छुड़ा देता निदानज्यों त्योंकठिन बाटकाट कर राजा उस मसान में पहुंचा तो देखा कि भूत प्रेत हाथ पकड़ पकड़ आदमियों को दे दे मारते हैं डायन लड़कों के कलेजे चाबती हैं शेर दहाड़ते हैं हाथी चिंघाड़े मारते हैं निदान उसवृक्ष को जोध्यान कर देखा तो जड़ से फुनगी तलक हर एक डाल पात उसका दहड़ २ जल रहा है और चारों ओर शोर गुल हो रहा है कि मार २ ले२ खबरदार जाने न पावे राजा उस अहवाल को देख कुछ भय न किया और अपने जी में कहता था हो न हो यह वही योगी है जिसकी बात मुझसे देवने कही थी फिर उस वृक्ष के पास

जाकर जोदेखा तो एकमुर्दा रस्सीसे बंधा उलटालटकताहै मुर्देको देख प्रसन्नहुआ किमेरा परिश्रम सुफल हुआ फिर खांड़ाफरी ले उसवृक्षपरनिर्भयचढ़ एकहाथ तलवारकाऐसा माराकि रस्सीकट मुर्दा नीचे गिरपड़ा और गिरतेहीधाड़ें मारमार रोनेलगा फिरराजा उसकी आवाज सुन प्रसन्नहो अपनेमनमें कहनेलगा भला यह आदमी जीताहै फिर उतरकर उस्सेपूछा तूकौन है वह सुनतेही खिलखिला के हंसा राजाको इसबातका बड़ा अचम्भाहुआ फिरवह मुर्दा उसीवृक्षपर चढ़कर लटकगया राजाभी वहीं चढ़कर उसे बगलमेंदबा नीचेले आया और कहा ऐ चांडाल तू कौनहै मुझसे कह उसनेकुछ जवाबनदिया राजाने शोचकर जीमें कहा शायदयह वहीतेली है जोदेवने कहाथा कियोगीने समशानबनाकर रक्खाहै यह विचार उसेचादरमें बांधयोगी के पास लेचला जो नर ऐसा साहस करैगा वह सिद्धहोगा तबवह बैताल बोला तू कौनहै और मुझे कहांलियेजाताहै राजाने जवाबदिया किमैं राजाविक्रमहूं तुझे योगी के पास लियेजाताहूं उसनेकहा एकशर्तसे चलताहूं जोरस्तेमें बोलेगा तोमैं उलटा फिर जाऊंगा राजाने उसकी शर्तमानी औरलेचला फिर बैतालबोला ऐराजापण्डित चतुर बुद्धिवान लोग जोहैं तिनकेदिन गीत और शास्त्रके आनन्दमें कटतेहैं और कूरमूर्खों के दिनकलह और नींदमें, इससेभला यह है किइतनी राहअच्छी बातोंके चर्चेमें कटजाय ऐ राजा जो मैं कथा कहताहूं उसेसुन ॥ इति आरम्भ कहानी ॥

——0——

पहिली कहानी ॥

एकराजा प्रताप मुकुट नाम बनारस का था और उसके बेटेकानाम वज्रमुकुटजिसकीरानीकानाममहादेवीथा एक दिनवह अपने दीवानके बेटेको साथले शिकार कोगया और

बहुतदूर जंगलमें जा निकला और उसके बीच एक सुन्दर तालाव देखा कि उसके किनारे हंस चकवा चकई बगले मुर्गाबियां सबकेसब कलोलमेंथे और चारोंतरफ भांति२के पक्के घाटबने हुये थे कमल तालावमें फूलेहुये किनारोंपरके दृक्ष लगेहुये कि जिनकी घनी २ छांहमें ठंडी २ हवायें आतीथी और पक्षी पखेरू दृक्षोंपर चहचहों मेंथे और रंग बरंगके फूलबनमें फूलरहेथे उनपर भौंरोंके झुण्डके झुण्डगूंजरहेथे एदोनों उसतालाव के किनारे पहुंचे और मुंहहाथ धोकर ऊपर आये वहां एकमहादेवका मन्दिरथा घोड़ोंको बांध मन्दिर के भीतर जा महादेवका दर्शनकर बाहर निकले जितनीदेर उनको दर्शनमें लगी उतने अर्सेमें किसी राजा की बेटी सहेलियोंका झुण्ड साथलिये हुई उसीतालाव के दूसरेकिनारे पर स्नानकरने आई सो स्नान ध्यान पूजा कर सहेलियोंको साथलिये दृक्षोंकी छांह में टहलने लगी इधर दीवानका बेटा बैठाथा और राजा का बेटा फिरता था कि अचानक उसकी और राजा की बेटी की चार आंखें हुई देखतेही उसके रूपको राजा का बेटा मोहित हुआ और अपने दिलमें कहनेलगा कि ऐ चांडाल काम मुझको क्यों सताया है और उस राजपुत्री ने कुंअरको देखशिर में जो कमलका फूल पूजा करके रक्खाथा वह फूल हाथमेंले कान से लगा दांतसे कुतर पांवतले दिया फिरउसे छातीसे लगा लिया और सखियों को साथले सवारहो अपने मकान को गई और वह राजपुत्र निराशहो विरह में डूबा हुआ दीवानके लड़केके पासआया और लज्जाकेसाथ उसकेआगेसब हाल कहनेलगा कि ऐमित्र मैंने एक अति सुन्दर नायका देखीहै नउसका नाम जानताहूं न ठांव जो वहमुझे नमिलेगी तौमैं अपनी जान न रक्खूंगा यह मैंने जीमें निश्चय विचारा है यह अहवाल दीवान का बेटा सुन उसे सवार

करवा घरकोतो लेआया पर राजाका बेटा विरह की पीर से ऐसाबिकलथा कि लिखनापढ़ना खानापीना सोनाराज काज सब कुछ तज बैठा नक्शा उसकी सूरत का लिख २ देखता और रोता न अपनी कहता न और की सुनता दीवानके बेटेने यहदशा उसकी जो विरहसे हुईथी जब देखी तो उससे कहा जिसने इश्क़की राहमें पैररक्खाहै फिर वह जियानहीं और जोजियातो उसनेबहुत दुखपाया इसवास्ते ज्ञानीलोग इसराहमें पांवनहीं रखते फिरउसकी बातसुन राजकुमार बोला मैंनेतो इसपंथमें पांवदिया इसमें सुखहो या दुःख जबऐसी दृढ़बात उसकी सुनी तब वह बोला कि महाराज तुमसेचलते समयकुछ उसनेकहा था या तुमनेकुछ उससे कहा शाहजादेने जवाबदिया कि न मैंने कुछ कहा न उसने कुछ सुना तब दीवान का बेटा बोला उसका मिलना बहुतकठिन है शाहजादेने कहाजो वहमिली तो हमारी जानरही नहींतोगई फिरउसने पूछा कुछ इशाराभी किया था या नहीं कुंअरने कहाजो उसने हरकतेंकी थीं सोये हैं कि एकाएक मुझको देख शिर परसे कमलका फूल उतार कानसेलगा दांतसे कुतर पांवतले देकर छातीसे लगालिया यहसुन दीवानके बेटेनेकहा किउसके इशारोंको हमसमझे और नामठांव सबउसका जाना वहबोला जोसमझेहो सोबयान करो यह कहने लगा सुनो राजा कमलका फूल शिरसे उतार कानसे जोलगाया तो मानोउन्ने तुमको बताया कि मैं करनाटककी रहनेवालीहूं और दांतसे जोकुतरा सो कहाकि दन्तबाट राजाकी बेटीहूं और पांवसे जोदबाया सो कहाकि पद्मावती मेरानाम है और छातीसे जो लगाया सोकहा तुमतो मेरे हृदय में बसेहो जब इतनी बातें कुंअरने सुनीतो उसने कहा बेहतर यह है कि मुझे उसके शहर में ले चलो यह कहतेही कपड़े पहन हथियार बांध

कुछ जवाहिरले घोड़ों पर सवार हो दोनों ने उस तरफ की
राहली कई दिनके बाद करनाटक देश में पहुंचे शहरकी
सैर करते हुये राजाके महलोंके नीचेआये तो वहांदेखते
क्या हैं कि एक बुढ़िया अपने दरवाजे पर बैठी हुई चरखा
कातती है ये दोनों घोड़ोंसे उतर उसके पासजा कहने लगे
माईहम मुसाफिर सौदागरहैं मालहमारा पीछे आता है
और हमजगह ढूंढनेवास्ते आगेबढ़ आयेहैं जोहमें जगह
देतो हम रहें बुढ़िया उनकी सूरतोंको देख और बातोंको
सुन रहम करके बोली यहघर तुम्हारा है जबतक जी चाहे
रहो यह सुनवे मकान में उतरे तो कितनी एक देर पीछे
बुढ़िया उनके पास आ बैठकर बातेंकरने लगी इसमें दीवान
के बेटेने उससे पूछा तेरी आल औलाद और कुनबे में कौन
कौन है और क्योंकर निर्व्वाह होतीहै बुढ़ियाने कहा बेटा
मेरा राजाकी सेवामें आनन्द पूर्व्वक अच्छी तरहसे रहताहै
और पद्मावती जो राजकन्या है बन्दी उसकी दूध पिलाई है
इस बुढ़ापे के आने से घरमें रहती हूं पर राजा मेरे खाने
पीने की खबर लेताहै परन्तु उस लड़कीके देखने को नित्य
एक वक्त जातीहूं वहांसे आनकर घरमें अपना दुखड़ा किया
करतीहूं यहबात राजपुत्रने सुन दिलमें प्रसन्न हो बुढ़िया
से कहा कल जिस वक्त जाने लगो तो एक संदेशा हमारा
भी लेती जाइयो उसने कहा बेटा कलपर क्याहै अभी मु-
झसे जो कुछ कहे तो मैं तेरा संदेशा पहुंचादूं तब उसने
कहा तू इतना जाकर कहदे कि जेठ शुदी पंचमीको ता-
लाव के किनारे जिस राजपुत्र को तुमने देखा था सो आन
पहुंचाहै। इतनी बातके सुनतेही बुढ़िया लाठी हाथमें लिये
राजमन्दिरको गई वहां जाकर देखा कि राजकन्या अकेली
बैठी है जब यह साम्हने पहुंची तो उसने सलाम किया यह
असीस देकरबोली कि धिया बालकपनमें तेरीसेवाकी और

दूध पिलाया अब भगवानने तुझेबड़ी किया यहजी चाहता
है कि तेरी जवानीका सुख देखूं तो मुझेभी चैन होवे। इसी
तरहकी बातें प्रीतिसे भरीहुई कर कहने लगी कि जेठशुदी
पंचमीको तालाव किनारेजिस कुंवरका तूनेमन हरलियाहै
सो मेरेघर आनकर उतराहै उसने तुझेयह संदेशा दिया है
किजो हमसेबचन कियाथा वहपूरा करो हमआन पहुंचेहैं
और मैंभी यहकहती हूं कि वहकुंवर तेरेही योग्यहै जैसी
तू रूपवती है तैसाही वह गुणवन्त है। ये सब बातें सुनवह
खफा हो हाथोंमें चन्दन लगाय बुढ़ियाके गालोंमें तमाचा
मारा और कहनेलगी कम्बखत मेरेघरसे निकलयह अप्रसन्न
हो उसीतरहसे उठतीबैठतीकुंअरकेपासआई और सबवृत्तान्त
कहा राजकुमार सुनकर हक्कबक्क हो गया तब दीवान का
बेटा बोला महाराज कुछ शोच न कीजिये यह बात आपके
ध्यानमें नहीं आई फिर उसने कहा सच्चहै पर तू मुझे समझा
कि मेरे जीको चैनहोवे उसनेकहा जोदशों उंगलियां चन्दन
की भरकर मुंहपर मारीं तो उसने यह बताया कि दशरोज
चांदनीके बीतनेपर अंधेरी रातमें मिलूंगी निदान दशरोज
के बाद बुढ़ियाने उसकीखबर फिरजाकही तबउसने केसरसे
तीन उंगलियां भरउसके गालपर मारीं और कहा निकल
मेरे घरसे अन्तको बुढ़िया लाचार होकर वहांसे चली और
जोकुछ ब्यौराथा सोसबराजपुत्रसे आकर कहायह सुनतेही
राजपुत्र शोचसागरमें डूबगया उसकी यहदशा देख फिर
दीवानके बेटेने कहा अंदेशा न करो इसबात का सुद्दाकुछ
और है वह बोला मेरा जी बेचैन है मुझसे जल्द कहो तब
उसने कहावह उसहालमेंहै जो महीने२ औरतोंको होता
है इसलिये और तीनदिनका वादाकिया है चौथे दिनवह
तुम्हें बुलावेगी निदान जब तीन दिन होचुके तब बुढ़िया ने
जाकर उसकी ओरसे कुशलक्षेम पूछी तब उसने बुढ़िया को

बहुत ढाढस कर फिर आइये यह सुनतेही राज कुंव
वहांसे उठकर बाहर आया और रानीने विष मिलवातर
तरह की मिठाई बनवा कर भिजवाई कुंवर मंत्री के पा
जाकर बैठाही था कि इतने में वह मिठाई आन पहुंची
प्रधानके बेटेने पूछा महाराज यह मिठाई किस तरह
आई राजपुत्र बोला मैं वहां तेरी चिन्ता में उदास बैठा
कि रानीने आकरमेरी तरफ देखकरपूछा उदासक्यों बैठे
कुछ सबब उसकाबताओतो मैंनेतेरे भेद चतुराईकेसब उ
बयानकियेतब यह अहवालसुनकेउसनेमुझेतेरेपासआनेकी
आज्ञादी और यह तेरे वास्ते मिठाईभिजवाई है जोतू इ
खायगातो मेराभीजी प्रसन्न होगातब प्रधानका बेटा बोला
तुममेरे वास्ते जहर लाये इसीमें कुशलहुईकि आपनेनहीं
खाई महाराज एक बात मेरी सुनिये किरण्डी अपनेदोस्त
के दोस्त को नहीं चाहती आपने यह अच्छा न किया जो
मेरा नाम वहां लियायह बात सुनकुंवर बोला ऐसी बात
तुम कहते होजो कभी किसीसे नहो यदि आदमी आदमी
से न डरे पर भगवान से डरेगा इतना कहउसने उसमें
एक लड्डू कुत्ते के आगे डाल दिया ज्योंहीं कुत्ते ने खाया
त्योंहीं चटपटा के मरगया यह दशा देखराज पुत्रअपने जी
में क्रोधित हो कहने लगा ऐसी रण्डीसे मिलना उचितनहीं
आजतक तो मेरेदिलमें उसकीप्रीतिथी परअबमालूमहुआ
यह सुन दीवानका बेटा बोला महाराज जोहुआ सोहुआ
अब वह बात किया चाहिये जिस्से उसको अपने घर ले
चलिये राज पुत्र बोला भाई यहभी तुम्हीसे होगा दीवान
के बेटे ने कहा कि आज एक काम कीजिये फिर पद्मावती
के पास जाइये और जो मैं कहूं सो कीजिये पहिले तो
जाकर उसेबहुतसा प्यारकरो जब वहसोजावे तब उसका
गहना उतार यह त्रिशूल उसकी बांई जांघ में मार वहां

से तुरंत चले आओ यहसुन राजकुंवर रातको पद्मावती के
पासगया और बहुतसी मित्रताकी बातेंकर दोनों मिलकर
सोरहे परन्तु मनसे यह विचार कर रहाथा जब राजकन्या
सोगई तो उसने सारा गहना उतारलिया औ बाईं जांघमें
त्रिशूल मार अपने मकान को चला आया और सारा अह-
वाल प्रधानके बेटेसे बयान कर सब गहना उसके आगेरख
दिया फिर वह जेवर उठा राजकुमार को साथले योगीका
भेषबना एक श्मशानमें जाबैठा आपतो गुरू बना और उसे
चेला ठहरा कर उस्से कहातू बजार में जाकर इस गहने
को बेच यदि कोई इसमें तुझे पकड़े तो उसे मेरे पास ले
आना उसकी बातसुन राजपुत्र ने जेवर को ले शहर में
जा राजाकी ड्योढ़ीके निकट एक सुनारको दिखाया उसने
देखतेही पहिचान कर कहा राजकन्या का गहना है सच
कह तूने कहां पाया यह उसे कह रहाथा कि दशबीस
आदमी और भी इकट्ठे होगये निदान कोतवालने यह खबर
सुन आदमी भेज राजकुमार और सुनार को जेवर समेत
पकड़वा मंगाया और उस जेवर को देख उससे पूछा कि
सच कह यह तूने कहां से पाया जब उसने कहा मुझको
गुरूने बेचने को दियाहै पर मुझे मालूम नहीं कि वे कहां
से लाये तब कोतवालने उसके गुरूको भी पकड़वा मंगाया
और दोनों को जेवर समेत राजा के निकट लाकर तमाम
अहवाल अर्ज किया वह माजरा सुनके राजा योगी से
पूछने लगा कि नाथ जी यह गहना तुम ने कहां से पाया
योगी बोला महाराज काली चौदश की रातको मैं मरघट
में डाकिनी मंत्र सिद्ध करने को गया था जब वह डाकिनी
आई तो मैंने उसका जेवर उतार लिया और बांई जांघमें
उसकी त्रिशूलका निशान करदिया इसतरहसे यह गहना
मेरे हाथ आया है यह बात राजा योगीसे सुन महल में

गया और योगी आसनपर बैठा राजाने रानीसे कहाकि तू पद्मावतीकी बाईं जांघमें देख तो निशानहै कि नहीं और कैसा निशान है रानी ने जाकर देखा तो त्रिशूल का दाग है राजा से आकर कहा महाराज तीन निशान बराबरहैं पर ऐसा मालूम होता है मानो किसीने त्रिशूल मारा है यह बातसुन राजा बाहर आ कोतवालको बुलाकर कहा जाओ योगी को ले आओ कोतवाल आज्ञा पातेही योगी के लेने को गया और राजा अपने जीमें चिन्ताकर कहने लगा कि अहवाल घर का और दिलका इरादा और जो कुछ नुकसान हो सो किसी के आगे प्रगटकरना मुनासिबनहीं कि इतने में कोतवालने योगी को ला हाजिरकिया फिर योगी को राजाने किनारे लेजा पूछा गुसाईं जी धर्मशास्त्र में स्त्री के वास्ते क्या दंड लिखा है तब योगी बोला महाराज ब्राह्मण गौ स्त्री लड़का और जो कोई अपने आसरेमें होयदि उसमें जिस किसीसे कुछखोटा कामहोता उनके वास्ते यह दंडलिखा है कि देश निकाला दीजिये यह सुनके राजाने पद्मावतीको डोलीमें सवार करवा एकजंगल में छुड़वा दिया फिरअपने मुकामसे राजकुमार और दीवान का बेटा दोनों घोड़ोंपर सवारहो उसबनमें जा रानी पद्मावतीको साथले अपने शहरको चले थोड़े दिनोंके बादअपने बापकेपास जा पहुंचे सब छोटे बड़ों को बड़ी प्रसन्नता हुई और ये आपसमें आनन्द भोगने लगे इतनी बातकह बैताल ने राजा वीरविक्रमादित्यसे पूछा कि उनचारोंमें पाप किस को हुआ जो तुम इस बातका न्याव न करोगे तो नर्क में पड़ोगे राजा विक्रम बोला कि राजाको पापहुआ बैतालने कहा राजाको किसतरह पापहुआ विक्रमने यहउसे जवाब दिया कि दीवानके बेटेने तो अपने स्वामी का काम किया और कोतवाल ने राजा का हुक्म माना और राजकुमार ने

अपना मनोर्थ हासिल किया इससे यह पाप राजाको हुआ कि बिनाबिचारे उसे देश निकालादिया इतनीबात राजा के मुख से सुन बैताल उसी वृक्षपर जा लटका ॥ १ ॥

दूसरी कहानी ॥

राजाने जो देखाकि बैताल नहींहै तोफिर उलटा फिरा और उसजगह पहुंच वृक्षपरचढ़ उसमुरदेको बांध कंधेपर रखके ले चला तब बैताल बोला कि राजा दूसरी कथा यों है कि यमुनाके तीर धर्मस्थान नाम एक नगर है कि जहां का गुणाधिप नाम राजा और वहां केशवनाम ब्राह्मण था वह यमुनाके किनारे जपतप किया करताथा और उसकी बेटी का नाम मधुमालती था वह बड़ी सुन्दर थी जब ब्याह योग्य हुई तब उसके माता पिता भाई तीनों उसके ब्याह के विचार में थे संयोगवस एक दिन उसका बाप किसी एक यजमान के साथ ब्याह में कहीं गया था और भाई उसका एक दिन गांव में गुरू के यहां पढ़ने गया पीछे से उसके घर एक ब्राह्मण का लड़का आया उसकी माता ने उस लड़के का गुण रूप देख कर कहा मैं अपनी लड़की का ब्याह तुझ से करूंगी और उस ब्राह्मण ने एक ब्राह्मण के बेटेको बेटी देनी अंगीकार की और उस के बेटेने जहां पढ़ने गया था वहां एक ब्राह्मण से वचन हाराकि अपनी बहिन तुझे दूंगाकितने दिनोंके पीछे वेदोनों उनदोनों लड़कों को साथ ले आये और यहां तीसरा लड़का आगे से बैठा था एक का नाम त्रिविक्रम दूसरे का नाम बामन तीसरे का नाम मधुसूदन था तीनों रूप गुण विद्या वैस में बराबर थे उन को देख ब्राह्मण चिन्ता करने लगा कि एक कन्या तीन वर किसे दूं और हम तीनों ने तीनों से वचन हारे हैं अजब तरह की बात आनपड़ी क्या कीजिये इस सोच

में बैठा था कि इतने में उस लड़की को सांपने डसा वह
मरगई यह खबर सुनके उसका बाप भाई वो तीनों लड़के
पांचो मिल कर बड़ी दौड़ धूपकर गुणी गारुड़ जितने मंत्र
विषके झाड़ने वाले थे उन सब को लाये उन सबों ने उस
लड़कीको देखकरकहा यह जीनेकी नहीं यहसुनपहिला यों
बोलाकि पंचमी छठअष्टमी नवमीचौदश इनतिथोंमें सांपका
काटा आदमी जीता नहीं दूसरा बोला सनीचर मंगलवार
का डसाहुआ भी जीता नहीं तीसरा बोला रोहिणी मघा
श्लेषा विशाखा मूल कृत्तिका इन नक्षत्रोंका विष चढ़ाहुआ
उतरतानहीं चौथा बोला इन्द्री अधर कपोल गला कोख
नाभी इन अंगोंका काटा हुआ बचता नहीं पांचवां बोला
इसको ब्रह्माभी जिला नहीं सक्ता हमकिस गिन्तीमें हैं अब
आप इसकी गति कीजिये हम विदाहोते हैं यह कहकर
गुणीतो चलेगये और ब्राह्मण उसमुर्दे को लेजा मशान में
फूंक आपतो चलागया फिर उसके पीछे उनतीनों लड़कों
ने यह कियाकि एक तो उनमें से उसकी जलीहुई हड्डियों
को चुन बांधकर फ़कीरहो बन बनकी सैरको गया दूसरेने
उसकी राखकी गठरी बांध वहीं झोपड़ी बना रहने लगा
तीसरा योगीहो झोरी कंथा ले देश देश फिरने लगा एक
दिन किसी देशमें एक ब्राह्मण के घर भोजन के लिये गया
वहगृहस्थ ब्राह्मण उसे देखकर कहने लगा अच्छा आजयहां
भोजन कीजिये यह सुनके वहां बैठगया जिस समय रसोई
तैयार हुई वहब्राह्मण उसके हाथ पांव धुलाके चौकेमें बिठा
आपभी उसके पास बैठगया और उसकी ब्राह्मणी परोस ने
को गई कुछ परोसहुई कुछ परोसना बाकी था कि इतने में
उसके छोटे लड़के ने रोकर अपनी मा का आंचल पकड़ा
वह छुड़ातीथी और लड़का न छोड़ताथा और ज्यों ज्यों यह
भुलाती थी वह दूना दूना रोता और हठकरता था इसमें

उस ब्राह्मणीने अप्रसन्न हो लड़केको जलते चूल्हेमें उठाकर
फेंकदिया वहलड़का जलकर राखहोगया यह अहवाल जब
उस ब्राह्मणने देखातो बिनाखाये उठखड़ाहुआ तब वह घर
वाला बोलाकि तू किसवास्ते भोजन नहीं करता वह बोला
कि जिसके घर में ऐसा राक्षसी काम हो उसके घरमें किस
तरह से कोई भोजन करे यह सुन वह गृहस्थ उठकर एक
ओर अपने घर में गया और संजीवनी विद्या की पोथी ला
उसमें से एक मंत्र निकाल जप कर लड़के को जिला दिया
तब वह ब्राह्मण यह अद्भुत चरित्र देख अपने जी में चिन्ता
करने लगा जो यह पोथी मेरे हाथ लगे तो मैं भी अपनी
प्यारी को जिलाऊं यह अपने मन में ठान रसोई खा वहीं
रहा जब रात हुई तो कितनी एक देर के पीछे सब ने
ब्यालू की और अपनी अपनी जगह जा लेटे इधर उधर
की आपस में बातें करते थे यह ब्राह्मण भी एक तरफ़ जा-
कर पड़ रहा परन्तु पड़ा पड़ा जागता था जब उसने जाना
कि बड़ी रात गई और सब सो गये तब चुपका उठ धीरे२
उसके घर में पैठ वह पोथी ले चल दिया और कितने
दिनों में जिस मसान में कि उस ब्राह्मण की बेटी कोजलाया
था वहां आनपहुंचा और उन दोनों ब्राह्मणों को वहीं
पाया कि आपस में बैठे हुये बातें करते हैं उनदोनों ने भी
उसे पहिचान उसके पास आय मुलाक़ात की और पूछा
कि भाई तुम देश विदेश तो फिरे पर यह कहो कोई
विद्याभी सीखी वह बोला मैंने मृत्यु संजीवनी विद्या सीखीहै
यह सुन्तेही वे बोले जो सीखी हो तो हमारी प्यारी को
जिलाओ उसने कहा राख हाड़ का ढेर करो तो मैं जिला
दूं उन्होंने राख हड्डियां इकट्ठी करदीं तब उसने पोथी में
से एक मंत्र निकाल जपा वह कन्या जी उठी फिर तीनों
को काम देव ने ऐसा अंधा किया कि आपस में झगड़ने लगे

इतनी बात कह कर बैताल बोला ऐ राजा यह बता
वह स्त्री किसको ऊई राजा विक्रम बोला कि जो मढ़ी बां
कर रहा था वह स्त्री उसी की ऊई बैताल बोला जो वा
हाड़ न रखता तो वह किस तरह जीती और दूसरा वि
न सीख आता तो वह क्यों कर उसे जिलाता राजा
जवाब दिया कि जिसने उसकी हड्डियां रक्खी थीं वह ते
उसके बेटे की जगह ऊआ और जिसने जी दान दिया व
मानो उसका बाप ऊआ इससे वह जोरू उसी की ऊ
कि जो राख समेत झोपड़ी बांध वहां रहा यह जवाब सु
के बैताल फिर उसी वृक्ष में जा लटका राजा भी उसी
पीछे जापऊंचा और उसे बांध कांधे पर रख फिर ले चला॥ २

——oo——

तीसरी कहानी॥

बैताल बोला ऐ राजा वर्द्दमान नाम एक नगर है उसमें
रूपसेन नाम एक राजा था एक दिन का संयोग है कि वह
राजा अपनी ड्योढ़ी के निकट किसी मकान में बैठा था कि
दरवाजे के बाहर से कुछ ऊपरी लोगों की आवाज आने
लगी राजा बोला कि दरवाजे पर कौन है और क्या हो
रहा है इस में दरवान ने जवाब दिया महाराज आपने
यह भलीबात पूछी दौलतमन्द की ड्योढ़ीजान धन के लिये
बऊतेरे आदमी आनबैठते हैं और भांति २ की बातें करते
हैं उन्ही लोगों का यह शोर है यह सुन राजा चुप हो
रहा इतने में एक मुसाफिर दक्षिण दिशा से बीरबर नाम
राजपूत चाकरी करने की आश किये राजा की ड्योढ़ी
पर आया दरवान ने उसका वृत्तान्त मालूम करके राजा
से कहा महाराज एक मनुष्य हथियार बन्द चाकरी करने
के [illegible] पर आया है सो दरवाजे पर खड़ा है महाराज
की आज्ञा पाये तो वह सम्मुख आये यह सुन राजा ने

आज्ञा दी कि ले आ यह उसे जाकर ले आया तब राजाने
पूछा ऐ राजपूत तेरे तईं रोज खर्च को क्या कर दूं
यह सुनके बीरबर बोला हजार तोले सोना मुझे रोज दो
तो मेरी गुजर हो राजा ने पूछा तुम्हारे साथ लोग कितने
हैं उसने कहा एक स्त्री दूसरा बेटा तीसरी बेटी चौथा मैं
पांचवां हमारे साथ कोई नहीं उसकी यह बात सुन राजा
की सभा के लोग सब मुंहफेर फेर हंसने लगे पर राजा
अपने जी में सोच करने लगा कि बऊत धन इसने किसवास्ते
मांगा फिर आपही अपने मन में समझा कि बऊत धन दिया
ऊआ किसी दिन सुफल होगा यह विचार करके राजाने
भण्डारी को बुलाकर कहा हमारे खजाने से हजार तोले
सोना इस बीरबर के तईं रोज दिया करो यह परवानगी
सुन बीरबर ने हजार तोले सोना उस दिनका ले अपनी
जगह जा दो हिस्सा कर आधा तो ब्राह्मणों को बांटा और
आधे के फिर दो भाग कर एक भाग उसमें से अतिथि बै-
रागी बैष्णव संन्यासियों को बांट दिया और बाकी जो एक
हिस्सा रहा उसका खाना पकवा गरीबों को खिला दिया
बाकी जो कुछ रहा वह आप खाया इसी तरह से नित्य
स्त्री पुत्रों समेत अपनी गुजरान करता था परन्तु संध्या
के समय रोज ढाल तलवार ले राजा के पलंग की चौकी
में जा हाजिर रहता और राजा जब सोते से चौंक कर पु-
कारता कि कोई हाजिर है तो यही जवाब देता कि बी-
रबर हाजिर है जो ऊक्म इसी तरह राजा जब पुकारता
तो यही जवाब देता और जो आज्ञा राजा को होती
सो यही बजा लाता इसी तरह धन के लालच से रात भर
सचेत रहता बल्कि खाते पीते सोते जागते उठते बैठते
चलते फिरते आठ पहर अपने मालिक की याद में रहता
रीति यह है कि कोई किसी को बेचता है तो बिकता है

इतनी बात कह कर बैताल बोला ऐ राजा यह बता कि वह स्त्री किसको हुई राजा विक्रम बोला कि जो मढ़ी बांध कर रहा था वह स्त्री उसी की हुई बैताल बोला जो वह हाड़ न रखता तो वह किस तरह जीती और दूसरा विद्या न सीख आता तो वह क्यों कर उसे जिलाता राजा ने जवाब दिया कि जिसने उसकी हड्डियां रक्खी थीं वह तो उसके बेटे की जगह हुआ और जिसने जी दान दिया वह मानो उसका बाप हुआ इससे वह जोरू उसी की हुई कि जो राख समेत झोपड़ी बांध वहां रहा यह जवाब सुन के बैताल फिर उसी वृक्ष में जा लटका राजा भी उसी के पीछे जापहुंचा और उसे बांध कांधे पर रखफिर ले चला॥ २॥

तीसरी कहानी॥

बैताल बोला ऐ राजा वर्द्धमान नाम एक नगर है उसमें रूपसेन नाम एक राजा था एक दिन का संयोग है कि वह राजा अपनी ड्योढ़ी के निकट किसी मकान में बैठा था कि दरवाजे के बाहर से कुछ ऊपरी लोगों की आवाज आने लगी राजा बोला कि दरवाजे पर कौन है और क्या हो रहा है इस में दरवान ने जवाब दिया महाराज आपने यह भलीबात पूछी दौलतमन्द की ड्योढ़ीपर धन के लिये बहुतेरे आदमी आनबैठते हैं और भांति २ की बातें करते हैं उन्हीं लोगों का यह शोर है यह सुन राजा चुप हो-रहा इतने में एक मुसाफिर दक्षिण दिशा से बीरबर नाम राजपूत चाकरी करने की आश किये राजा की ड्योढ़ी पर आया दरवान ने उसका वृत्तान्त मालूम करके राजा से कहा महाराज एक मनुष्य हथियार बन्द चाकरी करने के आशै पर आया है सो दरवाजे पर खड़ा है महाराज की आज्ञा पाये तो वह सम्मुख आये यह सुन राजा ने

आज्ञा दी कि ले आ यह उसे जाकर ले आया तब राजाने पूछा ऐ राजपूत तेरे तईं रोज खर्च को क्या कर दूं यह सुनके बीरबर बोला हजार तोले सोना मुझे रोज दो तो मेरी गुजर हो राजा ने पूछा तुम्हारे साथ लोग कितने हैं उसने कहा एक स्त्री दूसरा बेटा तीसरी बेटी चौथा मैं पांचवां हमारे साथ कोई नहीं उसकी यह बात सुन राजा की सभा के लोग सब मुंहफेर फेर हंसने लगे पर राजा अपने जी में सोच करने लगा कि बहुत धन इसने किसवास्ते मांगा फिर आपही अपने मन में समझा कि बहुत धनदिया हुआ किसी दिन सुफल होगा यह विचार करके राजाने भण्डारी को बुलाकर कहा हमारे खजाने से हजार तोले सोना इस बीरबर के तईं रोज दिया करो यह परवानगी सुन बीरबर ने हजार तोले सोना उस दिनका ले अपनी जगह जा दोहिस्सा कर आधा तो ब्राह्मणों को बांटा और आधे के फिर दो भाग कर एक भाग उसमें से अतिथि बै-रागी बैष्णव संन्यासियों को बांट दिया और बाकी जोएक हिस्सा रहा उसका खाना पकवा गरीबों को खिला दिया बाकी जो कुछ रहा वह आप खाया इसी तरह से नित्य स्त्री पुत्रों समेत अपनी गुजरान करता था परन्तु संध्या के समय रोज ढाल तलवार ले राजा के पलंग की चौकी में जा हाजिर रहता और राजा जब सोते से चौंक कर पु-कारता कि कोई हाजिर है तो यही जवाब देता कि बी-रबर हाजिर है जो हुक्म इसी तरह राजा जब पुकारता तो यही जवाब देता और जो आज्ञा राजा की होती सो यही बजा लाता इसी तरह धन के लालच से रात भर सचेत रहता बल्कि खाते पीते सोते जागते उठते बैठते चलते फिरते आठ पहर अपने मालिक की याद में रहता रीति यह है कि कोई किसी को बेचता है तो बिकता है

पर चकरिया चाकरी करके अपने तईं आप बेचता है और जब बिका तौ ताबेदार हुआ जो परबश हुआ तो उसे सुख कहां मशहूर है कि कैसाही चतुर बुद्धिमान पण्डित हो परन्तु जिस समय अपने मालिक के सामने होता है तो डर के मारे गूंगे के बराबर चुपही रहता है जब तक स्वतंत्र है चैन में है इसी वास्ते पण्डित लोग कहते हैं कि सेवा धर्म करना योग धर्म से भी कठिन है एकदिन का वृत्तान्त है कि संयोग बस रात के समय मर घट से स्त्री के रोने का शब्द आया राजा सुन के पुकारा कोई हाजिर है बीरबर सुनतेही बोला हाजिर जो आज्ञा फिर राजा ने यों हुक्म किया जहां से स्त्री के रोने की आवाज आती है वहां जाओ और उससे रोने का कारण पूछ कर जल्द आओ राजा यह उसे आज्ञा दे मन में कहने लगा कि जिस किसी को चाकर अपना आज्ञमाना हो तो बे वक्त उसे काम को कहे यदि वह हुक्म उसका बजा लावै तो जानिये काम का है और जो तकरार करै तौ जानिये नकारा है और इसी तरहसे भाइयों को मित्रोंको बुरे समयमें परखिये और स्त्री को निर्धनता में जांचिये निदान बीरबर यह हुक्म पाकर उसके रोनेकी आवाज की धुनि पर चला और राजा भी उसका साहस देखने के लिये काले कपड़े पहन कर पीछे पीछे छिपा हुवा चला इतनेमें बीरबर जा पहुंचा उस मर घट में जहां स्त्री रोती थी तो देखता क्या है कि एक स्त्री अति सुन्दर शिर से पांव तक गहने से लदी हुईढाढ़ मार मार रो रहीहै कभी नाचतीहै कभी कूदती कभी दौड़ती है आंखों में आंसू एक नहीं परन्तु शिर पीट पीट हाय हाय कर पृथ्वी पर पटकनियां खाती है उसका यह अहवाल देख बीरबर ने पूछा तू क्यों इतना रोती पीटती है तू कौन है और तुझ पर क्या दुखहै। तब वह बोली

कि मैं राजलक्ष्मीहूं बीरबर ने कहा तू किसकारण रोती है फिर उसने अपनी व्यवस्थाबीरबरसे कहनी प्रारम्भकी कि राजाके घरमें शूद्र कर्म होताहै तिस्से उसके घरमें अलक्ष्मी आवैगी और मैं उसके घरसे जाऊंगी एक महीने के पीछे राजानिपट दुःख पाके मर जावैगा इस दुःखसेरोतीहूं और मैंने उसकेघरमेंबहुत सुखकियाहैइसवास्ते पछतातीहूंऔर यहबात किसी तरहसे न झूठ होवेगी फिर बीरबरने पूछा उसका कुछ ऐसा भी उपाय है कि जिस्से राजा बचे और सौ वर्षजीवे वह बोलीयहांसेपूर्वओर एकयोजनपर देवीका मन्दिरहै जो तू उसदेवीको अपने बेटेकाशिर अपने हाथसे काटकर दे तो राजा सौ वर्ष इसी तरहसे राज करे और किसी तरहका दुःख राजा को न होय यह बात सुनतेही बीरबर अपने घरकोचला और राजाभी उसकेपीछे होलिया जब वह घरमें आया तो अपनी स्त्रीको जगाकरसब वृत्तान्त कहा उसने यह अहवाल सुन जगायातो बेटे को पर बेटी भी जागी तब उस स्त्री ने लड़के से कहा कि बेटा तुम्हारे शिरदेनेसे राजाका जी बचता है और राजभी स्थिर रहता है यहसुन वह बालक बोला माता एक तो आपकी आज्ञा दूसरे स्वामीका काज तीसरे यह देह देवताके कामआवे तो इस्से अच्छी कोई बात दुनियांमें नहींहै मेरे निकट अब इस काम में देर करनी उचित नहीं मसल है कि पुत्र होवे तो अपने बश का और काया नीरोग विद्या से लाभ मित्र चतुर नारी आज्ञाकारी जो ये पांच बातें आदमी को सुवस्र हों तो सुख की देने वाली और दुःख की दूर करने वालीहैं यदिचाकर बेमनका और राजा कृपण मित्रकपटी और स्त्रीजो आज्ञा न मानतीहो तो ये चारबातें आराम की दूरकरनेवाली और दुःखकीदेने वालीहैं फिर बीरबर अपनी स्त्री से कहने लगा जो तू प्रसन्नता से अपने लड़के को दे तो

मैं लेजाऊं राजा के लिये देवी के आगे बलिदूं वह बोली कि मुझे बेटा बेटी भाई बन्द मा बाप किसी से कुछ काम नहीं मेरीगति तुम्हीसेहै और धर्म शास्त्रमें भी यही लिखा है कि स्त्री न दान न ब्रतसे शुद्ध होतीहै लंगड़ा लूला गूंगा बहिराअन्धा काना कोढ़ी कुबड़ा कैसा ही उसका स्वामी हो उसको उसीकी सेवा करने से धर्महै यदि किसी तरह का दुनियां में धर्म कर्म करे और पति की आज्ञा न माने तो नर्कमें पड़े फिर उसका बेटा बोला पिता जिस आदमीसे स्वामी का काम होवे जग में उसीका जीना सुफल है और इससेंदोनों जहानमेंभलाहै फिरउसकी बेटीबोलीजो माता देवे विष लड़की को, बाप बेचे पूत को और राजाले सर्बस्व छिनाय तो पनाह किसकीले वे निदान चारों आपसमें बि-चार करके देवीके मन्दिर को गये राजाभी छिपकर उनके पीछेचला जब बीरवर वहांपहुंचा तो मन्दिरमें जादेवीकी पूजा कर हाथ जोड़ कहने लगा हे देवी मेरे पुत्र के बलि देने से राजाकी सौ वर्ष की उमर होवे इतना कह खांड़ा ऐसा मारा कि लड़के का शिर पृथ्वी पर गिर पड़ा भाई का मरना देख उस लड़की ने अपने गलेमें एक खड्ग मारा तो रुंड मुंड जुदे होकर गिर पड़े बेटा बेटीको मुआ देख बी-रवर की स्त्री ने तलवार अपनी गर्दन पर मारी कि धड़ से शिर जुदा होगया फिर उन तीनों का मरना देख बीरबर अपने मनमें चिन्ताकर कहने लगा कि जब लड़के ही मर गये तो नौकरी किसके वास्ते करूंगा और सोना राजा से ले किसे दूंगा यह शोचकर एक खड्ग ऐसा अपनी गर्दनपर मारा कि तनसे शिर जुदा होगया फिर उन चारों का म-रना देख राजाने अपने मनमें कहा कि मेरे वास्ते इसके कुटुम्ब की जान गई अब ऐसा राज करने को धिक्कार है कि जिस राजके लिये एकका सर्व नाशहोवे और एक राजकरे

ऐसा करना धर्म नहीं है यह बिचार कर राजा ने चाहा कि खांड़ा मारमरूं इतनेमें देवो ने आनकेहाथ पकड़ा और कहा कि पुत्र मैं तेरे साहस पर प्रसन्न हुई जो तू मुझ से बर मांगे सो मैं दूं राजा ने कहा माता जो तू प्रसन्न हुई है तो इन चारों को जिला दे देवी ने कहा यही होवेगा और यह कहतेही भवानी ने पाताल से अम्रत ला चारों को जिला दिया उसके पीछे राजाने आधाराज अपना बीरवर को बांट दिया इतनी बात कह बैताल बोलाधन्य है उससेवकको कि जिसने स्वामीके लिये अपनेजीव और कुटुम्ब का मोह न किया और धन्य है उस राजा को कि जिसने राज और अपने जीवका कुछ लालच न किया ऐ राजा मैं तुझसेयह पूछता हूं उन चारों में किसका सत सरस हुआ तब राजा बिक्रमा दित्यबोलाकि राजाकासतअधिक हुआ बैतालबोला किसकारण तबराजाने जवाबदिया कि स्वामी के वास्ते चाकरको जी देना उचितहै क्योंकि उसका यही धर्म है लेकिन राजा ने जो चाकर के लिये राज पाट छोड़ जानको तिनके बराबर जाना इस कारण से राजा का सत सिवाय हुआ इतनी बात सुन बैताल फिर उसी स्मशान के वृक्षमें जा लटका ॥ ३ ॥

———oo———

चौथी कहानी ॥

राजा वहां जा फिर बैताल को बांध कर ले चला तब बैताल बोला कि ऐ राजा भोगवती नाम एक नगरी है वहांका राजा रूपसेन और चूड़ामणि नाम एक तोता उसके पास है एक दिन उस तोतेसे राजाने पूछा तू क्या क्या जान्ता है तब सुवा बोला कि महाराज मैं सब कुछ जान्ता हूं राजाने कहा जो तू जान्ताहै तो बतलाकि मेरे समान नायका कहां है तब उस तोते ने कहा महाराज मगध

देश में मगधेश्वर नाम राजाहै और उसकी बेटी का नाम चन्द्रावती है तुम्हारा ब्याह उसके साथ होवेगा वह अति सुन्दरीहै और बड़ी पण्डिताहै राजाने उस तोते से यह बात सुनकर एक चन्द्रकान्ति नाम ज्योतिषीको बुलाकर पूछा कि हमारा ब्याह किसकन्या से होवेगा उसने भी अपने ज्योतिषकी विद्यासे मालूमकरके कहा चन्द्रावतीनाम एक कन्याहै उसकेसाथ तुम्हारा ब्याह होवेगा यह बात राजाने सुन एक ब्राह्मणको बुलवा सब कुछ समझा राजा मगधेश्वर के पास भेजनेको कहा और यहकहा यदिहमारे ब्याहकी बात पक्कीकर आओगे तो हम तुम्हें प्रसन्न करैंगे यहबात सुन ब्राह्मण बिदा हो चला और वहां मगधेश्वर राजाकी बेटी के पास एक मैंना थी उसका नाम मदनमंजरी था इसीतरह से उस राज कन्याने भी एकदिन मदनमंजरी से पूछाकि मेरे समान पति कहांहै तब सारिका बोली भोग-वती नगरीका राजा रूपसेनहै सो तेरा पति होगा निदान अनदेखे एकपर एक मोहित हुआथा थोड़े दिनों पीछे वह ब्राह्मण भी वहां जा पहुंचा और उस राजा से अपने राजा का संदेशा कहा उसनेभी उसकी बात मानी और अपना एक ब्राह्मण बुलवा उसे टीका और रस्म की चीजें सौंप उसी ब्राह्मण के साथ भेजा और यह कहदिया कि तुम हमारी ओर से जाकर बिनती कर राजा को तिलक देके जल्दी चले आओ जब तुम आओगे तब हम ब्याह की तैयारी करेंगे निदान येदोनों ब्राह्मण वहां से चले कितने एक दिनों में राजा रूप सेन के पास आन पहुंचे और सब वृत्तान्त वहांका कहा यह सुन राजा प्रसन्न हो सब तैयारीकर ब्याह करनेको चला थोड़े दिनों के पीछे उसदेश में पहुंच ब्याहकर दान दहेज ले राजा से बिदा हो अपने देशको चला राजकन्याने भी चलते समय मदनमंजरी का

पिंजरा साथ लेलिया कितनेएक दिनोंके पीछे अपने देशमें आनपहुंचे और सुखसे अपने मन्दिर में रहनेलगे एकदिन की बातहै कि दोनों पिंजरे तोते मैंनाके गद्दी के पासधरे हुयेथे तो राजारानी आपसमें कहने लगे कि अकेले रहने से किसीका दिन नहीं कटता इससे उचितहै कि तोते मैंना का आपसमें ब्याहकर दोनोंको एक पिंजरेमें रखिये तौ ये भी सुखसे रहैं आपसमें इस तौरकी बातें कर एक बड़ासा पिंजरा मंगवा दोनोंको उसमें रक्खा थोड़ेदिनोंके बाद राजा रानी आपस में बैठ कुछ बातें करते थें कि तोता मैंना से कहने लगा कि दुनियां में भोग करना मुख्य है और जिसने जगतमें पैदाहोके भोग नहीं किया उसका जन्म वृथा गया इससे तू मुझे भोग करनेदे यह सुनके सारिका बोली मुझे पुरुषकी इच्छा नहीं तब उसने पूछा किसलिये मैंना बोली पुरुष पापी अधर्मी दग़ाबाज स्त्रीहत्या करने वाले होते हैं यह सुनके तोतेने कहा कि नारी भी दग़ाबाज झूठी मूर्ख लालची हत्यारी होती हैं जब इसतरह से दोनों झगड़ने लगे तो राजाने पूछा तुम किस वास्ते आपस में झगड़ते हो मैंना बोली महाराज पुरुष पापी स्त्री घातक होते हैं इस वास्ते मुझे पुरुष की चाह नहीं महाराज मैं एकबात कहतीहूं आप सुनिये कि मर्द ऐसे होतेहैं इलापुर नाम एक नगरथा वहां महाधन नाम एक सेठ रहताथा उसके सन्तान न होतीथी वह इस वास्ते हमेश: तीर्थव्रत करता और नित्य पुराण सुनता ब्राह्मणों को बहुत सा दानदिया करता था कितनेएक दिनोंमें भगवान की इच्छा से उस शाहके एक लड़का पैदा हुआ उसने बड़ी धूमसे उसका ब्याह किया और ब्राह्मणों और भाटों को बहुतसा दानदिया और भूखे प्यासे कंगालोंको भी बहुत कुछदिया जब वह बालकपांच वर्ष का हुआ तो उसे पढ़ने को बिठाया वह यहांसे तो पढ़ने को

देश में मगधेश्वर नाम राजा है और उसकी बेटी का नाम चन्द्रावती है तुम्हारा ब्याह उसके साथ होवेगा वह अति सुन्दरी है और बड़ी पण्डिता है राजाने उस तोते से यह बात सुनकर एक चन्द्रकान्ति नाम ज्योतिषीको बुलाकर पूछा कि हमारा ब्याह किसकन्या से होवेगा उसने भी अपने ज्योतिषकी विद्यासे मालूमकरके कहा चन्द्रावतीनाम एक कन्या है उसकेसाथ तुम्हारा ब्याह होवेगा यह बात राजाने सुन एक ब्राह्मणको बुलवा सब कुछ समझा राजा मगधेश्वर के पास भेजनेको कहा और यहकहा यदिहमारे ब्याहकी बात पक्कीकर आओगे तो हम तुम्हें प्रसन्न करेंगे यहबात सुन ब्राह्मण विदा हो चला और वहां मगधेश्वर राजाकी बेटी के पास एक मैना थी उसका नाम मदनमंजरी था इसीतरह से उस राज कन्याने भी एकदिन मदनमंजरी से पूछाकि मेरे समान पति कहांहै तब सारिका बोली भोग-वती नगरीका राजा रूपसेनहै सो तेरा पति होगा निदान अनदेखे एक पर एक मोहित हुआथा थोड़े दिनों पीछे वह ब्राह्मण भी वहां जा पहुंचा और उस राजा से अपने राजा का संदेशा कहा उसनेभी उसकी बात मानी और अपना एक ब्राह्मण बुलवा उसे टीका और रस्म की चीजें सौंप उसी ब्राह्मण के साथ भेजा और यह कहदिया कि तुम हमारी ओर से जाकर बिनती कर राजा को तिलक देके जल्दी चले आओ जब तुम आओगे तब हम ब्याह की तैयारी करेंगे निदान येदोनों ब्राह्मण वहां से चले कितने एक दिनों में राजा रूप सेन के पास आन पहुंचे और सब वृत्तान्त वहांका कहा वह सुन राजा प्रसन्न हो सब तैयारीकर ब्याह करनेको चला थोड़े दिनों के पीछे उसदेश में पहुंच ब्याहकर दान दहेज ले राजा से बिदा हो अपने देशको चला राजकन्याने भी चलते समय मदनमंजरी का

पिंजरा साथ लेलिया कितनेएक दिनोंके पीछे अपने देशमें आनपहुंचे और सुखसे अपने मन्दिर में रहनेलगे एकदिन की बातहै कि दोनों पिंजरे तोते मैनाके गद्दी के पासधरे हुयेथे तो राजारानी आपसमें कहने लगे कि अकेले रहने से किसीका दिन नहीं कटता इससे उचितहै कि तोते मैना का आपसमें ब्याहकर दोनोंको एक पिंजरेमें रखिये तौ ये भी सुखसे रहैं आपसमें इस तौरकी बातैं कर एक बड़ासा पिंजरा मंगवा दोनोंको उसमें रक्खा थोड़ेदिनोंके बाद राजा रानी आपस में बैठ कुछ बातें करते थे कि तोता मैना से कहने लगा कि दुनियां में भोग करना मुख्य है और जिसने जगतमें पैदा होके भोग नहीं किया उसका जन्म वृथा गया इससे तू मुझे भोग करनेदे यह सुनके सारिका बोली मुझे पुरुषकी इच्छा नहीं तब उसने पूछा किसलिये मैना बोली पुरुष पापी अधर्मी दग़ाबाज स्त्रीहत्या करने वाले होते हैं यह सुनके तोतेने कहा कि नारी भी दग़ाबाज झूठी मूर्ख लालची हत्यारी होती हैं जब इसतरह से दोनों झगड़ने लगे तो राजाने पूछा तुम किस वास्ते आपस में झगड़ते हो मैना बोली महाराज पुरुष पापी स्त्री घातक होते हैं इस वास्ते मुझे पुरुष की चाह नहीं महाराज मैं एकबात कहतीहूं आप सुनिये कि मर्द ऐसे होतेहैं इलापुर नाम एक नगरथा वहां महाधन नाम एक सेठ रहताथा उसके सन्तान न होतीथी वह इस वास्ते हमेशः तीर्थव्रत करता और नित्य पुराण सुनता ब्राह्मणों को बहुत सा दानदिया करता था कितनेएक दिनोंमें भगवान की इच्छा से उस शाहके एक लड़का पैदा हुआ उसने बड़ी धूमसे उसका ब्याह किया और ब्राह्मणों और भाटों को बहुतसा दानदिया और भूखे प्यासे कंगालोंको भी बहुत कुछदिया जब वह बालकपांच वर्ष का हुआ तो उसे पढ़ने को बिठाया वह वहांसे तो पढ़ने को

जाता और वहां जाकर लड़कों में जुआ खेला करता
थोड़ेदिनों के बाद वहशाह मरगया और यह स्वतंत्र हो
दिनको तो जुआखेला करता और रातको वेश्यागमनइसी
तरहसे कईबरस में अपना सारा धनखो लाचारहो देशसे
निकल खराबहोता हुआ चन्द्रपुर नगर में जा पहुंचा वहां
हेमगुप्त नाम साहूकार था उसके बहुत दौलत थी यह
उसके पास गया और अपने बाप का नाम निशान बताया
वह सुनतेही प्रसन्न हुआ उस्से उठकर मिला और पूछा
तुम्हारा आना क्योंकर हुआ तबयह बोलाकि मैं जहाज ले
एकद्वीपमें सौदागरीको गयाथा और वहांजा उसमालको
बेच और मालकी भरतीकर जहाजले अपने देशको चला
अचानक एकऐसा तूफानआया किजहाज तबाह होगया
और मैं एकतखतेपर बैठा रहगया सो बहता२ यहांतक
आन पहुंचा हूं परंतु लज्जाआती है कि माल द्रव्य तो सब
जातारहा अब मैं इसदशा से अपने शहरके लोगों को क्या
मुंहजाकर दिखाऊं निदानजब इसी तरह की बातें इसने
उसकेआगे कीं तबवहभी मनमें विचारनेलगा कि मेराफिक्र
भगवानने घरबैठेही मिटादिया और ऐसा संयोग भगवान-
हीकी कृपा से बनपड़ता है अब देर करनी मुनासिब नहीं
सबसे उचित यहहै कि कन्याके हाथपीले कर दीजिये जो
कुछइस समय होसो उत्तम है और कल्हकी किसेखबर है
ऐसा कुछअपने जीमें मनसूबा बांधसिठानीकेपास आकहने
लगा किएक सेठका लड़काआया है जोतुम कहोतो रत्ना-
वती का ब्याह उस्से करदें वहभी सुन प्रसन्नहो बोली कि
शाहजी ऐसा संयोग जब भगवान बनाता है तब बनता है
क्योंकि घरबैठे मनकी कामना पूरीहुई इससे उचित यह
है कि देर मतकरो और जल्द पुरोहितको बुलवा लग्न सुध-
वाय ब्याह करदो तबउस सेठने ब्राह्मण को बुलवा शुभलग्न

मुहूर्त्त ठहराय कन्यादान कर बहुतसा दहेजदिया जबब्याह
होचुका तो वहांआनन्दसे रहनेलगे फिर कितनेएक दिनों
के पीछे शाहकी बेटीसे उसनेकहा हमें तुम्हारेदेशमें आये
हुये बहुतदिन हुये और अपने घर बार की कुछखबर नहीं
इस्से चित्तहमारा बहुतउदास रहताहै हमने सब वृत्तान्त
अपना तुमसेकहा अबतुम्हें यहचाहिये किअपनी मासे इस
तरह समझाकर कहो किवेराजीहो हमें बिदा करैंतोहम
अपने शहरको जावैं तुम्हारी इच्छाहो तुमभी चलो तबउसने
अपनीमासे कहाकि बालम अपनेदेशको बिदाहुआ चाह-
तेहैं अबतुमभी वहकरो किजिसमें उनकेजीको दुःखनहोवे
सिठानीने अपनेस्वामी के पासजाकर कहा तुम्हारा दामाद
अपने घर जानेकी बिदामांगता है यह सुनकर शाह बोला
अच्छा बिदाकर देंगे क्योंकि बिराने पूतपर कुछअपना बश
नहीं चलता जिसमें उसकी प्रसन्नता होगी वहीहमकरेंगे
यहकह अपनी बेटी को बुलाकर पूछा तुमअपनी बातकहो
सुसराल जाओगी या नैहरमेंरहोगी इसमें लड़कीनेलज्जाका-
रके जवाब नदिया उलटी फिरआई और अपने पतिसे आनके
कहा हमारेमाता पिता कहचुके हैं किजिसमें उनकी प्र-
सन्नताहोगी वहहमकरेंगे तुमहमें मतछोड़ जाइयो निदान
उस सेठने अपने दामाद को बुला कर बहुसी दौलत देकर
बिदाकिया और लड़कीका भी डोलाएक दासीसमेत साथ
करदियातब यहवहांसेचला जबएकजंगलमें पहुंचातोउसने
शाहकी बेटीसे कहायहां बहुत डर है जो तुम अपना सब
गहना उतार दो तोहम अपनी कमर में बांधलें फिर जब
आगे शहर आवेगातो तुम पहिनलेना उसने सुनतेही सब
जेवर उतारदिया और उसने जेवरले कहारोंको बिदाकर
दासीको मारकुयेंमें डालदिया और उसकोभी कुयेंमें ढकेल
सब गहना ले अपने देशको चला गया इतने में एक मुसा-

फिर उसराहमें आया और रोनेकी आवाज सुनकर खड़ाहो
अपनेजीमेंकहनेलगा किइस जंगलमेंआदमीकेरोनेकीआवाज
कहांसेआईयहबिचारउसरोनेकीतरफकोचलाकिएककुआ
दृष्टिपड़ा उसमें झांकातो देखता क्याहै किस्त्री रोतीहै तब
उसकोनिकाल वृत्तान्त पूछनेलगा कितू कौन है और किस
तरहसेइसमेंगिरी यहसुनके उसनेकहामैंहेमगुप्तसेठकीबेटी
हूं और अपने पति के साथ उसके देशको जाती थी इतने
मेंचोरोंने आघेरा और मेरीदासीको मारमुझे कुएंमें डाल
दिया और गहना समेत मेरे पति को बांधकर लेगये न
उनकी मुझेखबरहै नमेरीउन्हें यहसुन वहबटोही उसेसाथ
लेआया और उससेठके द्वारेपर पहुंचा गया यह अपनेमा
बापके पासगई वेउसेदेखकर पूछनेलगे कितेरी क्यागतिहुई
उसनेकहा हमेंराहमें आनके चोरोंने लूटा और दासी को
मारकुएमेंडालमुझेएकअंधेकुएंमेंढकेलदियाऔरमेरेपतिको
गहने समेतबांधके लेचले जब और धनमांगनेलगे तबउसने
कहा जो कुछथा सोतुमनेलिया अबमेरे पासक्याहै आगे यह
मुझेखबर नहीं उसेमारा या छोड़ा तब उसका बापबोला
तूफिक्र मतकर तेरास्वामी जीताहै भगवानचाहै तो थोड़े
दिनोंमेंआनमिलेक्योंकिचोरधनकेगाहकहोतेहैंजीवकेगाहक
कानहीं निदानउसग्राहकनेजोजोगहनाउसका गयाथा उसके
बदले और आभूषणदेकर बहुतसा दिलासादिया औरवह
ग्राहका लड़काभी अपने घरपहुंच सबजेवरको बेचदिनरात
वेश्यारमण करनेलगा और जुआ खेलनेलगा यहांतक कि
सबरुपये तमामहुये तबरोटीको मुहताजहुआ अन्तको जब
बहुत दुख पाने लगा तो अपने दिलमें एक दिनबिचारा कि
ससुरालजा के यह बहानाकीजिये कि तुम्हारे नवासापैदा
हुआहै उसकी बधाईदेनेको मैंआयाहूं यहबात जीमें ठान
करचला कईदिनमें वहां जापहुंचाजबउसनेचाहा किघरमें

पैठूं सामने से उसकी स्त्रीने देखा कि मेरा पति आता है
ऐसा न होकि अपनेजीमें डरकर फिरजावे इससे उन्हेंनिकट
आकर कहा स्वामी तुम अपने जीमें किसी बातकी परवाह
मत करो मैंने अपने बाप से कहा है कि चोरों ने आनके
दासी को मारा और मेरा जेवर उतरवा मुझे कुएमें डाल
मेरे पति को बांध ले गये यही बात तुम भी कहियो कुछ
चिन्ता मत करो घर तुम्हारा है और मैं दासी हूं यह कह
कर वह घर में चली गई यह उस सेठ के पास गया उसने
उठकर गलेलगा सब अहवाल पूछा जिस तरह उसकी स्त्री
समझा गईथी इसने उसी तरहसे कहा सारे घरमें प्रसन्नता
हुई फिर सेठ ने उसे स्नान करवा रसोई जिवां बहुत सा
निहोरा कर कहा कि यह घर तुम्हारा है आनन्द से रहो
यह वहां रहने लगा निदान कितने एक दिनों के बाद रात
के समय ग्राह की बेटी गहना पहने हुये उसके पास सोने
को आई और सोगई जब दो पहर रात गई उसने देखा कि
यह गाफिल सोगईहै तब एक छुरी ऐसी उसके गले में
मारी कि वह मरगई और सारा गहना उसका उतार
अपने देशकी राहली इतनी बात कह मैना बोली महाराज
यह मैंने अपनी आँखों से देखा इस वास्ते मुझे पुरुष से कुछ
काम नहीं महाराज देखो तो पुरुष की जात ऐसी बटपार
होती है कौन ऐसे से मित्रता कर अपनेघरमें सांप पाले महा-
राज आप इसे बिचारैं कि उस स्त्री ने क्या अपराध किया था
यह सुनकर राजाने कहा ऐ तोते स्त्री में ऐब क्याहै तू मुझसे
कह तब वह कीर बोला महाराज सुनिये कंचन पुर एक
नगरहै वहांका सागरदत्त नाम एक सेठ था उसके बेटेका
नाम श्रीदत्त था और एकनगर का नाम श्री विजयपुर वहां
का सोमदत्त नाम एकसेठथा और उसकी बेटीका नाम जय-
श्री था वह उससेठके बेटेको ब्याहीथी वह लड़का किसीमुल्क

में सौदागरी के वास्ते गयाथा वह अपने माता पिताके यहां
रहती थी जबउसे सौदागरीमें बारहवर्षव्यतीत होगये औ
वह यहां युवाहुई तो एकदिन सखीसे कहनेलगी ऐ बहि
मेरा योवन योंहीं जाता है संसार का सुख मैंने अब तल
कुछ नहीं देखा यह बात सुनके सखी ने उस्से कहा तू अप
जीमें धीरज धर भगवान चाहै तो तेरा भर्तार जल्द आ
मिलता है इस बात को सुनकर जयश्री अटारी पर चढ़
झरोखे से झांकी तो देखती क्या है कि एक जवान चला
आता है जब निकट आया तो इसकी ओर उसकी एक
एक चार नजरें हुईं दोनों का दिल मिल गया तब उसने
अपनी सखी से कहा कि उस पुरुष को मेरे पास ले आ
यह सुन सखीने उस्से जाकर कहा कि सोमदत्त की कन्या
ने तुझे एकान्त में बुलाया है पर तुम मेरे घर आइयो फि
अपने घरका पता उसे बता दिया उसने कहा कि रातके
मैं आऊंगा सखी ने यह सेठ की लड़की से आकर कहा
कि उसने रातके समय आने को कहा है यह सुनके जयश्री
ने सखी से कहा कि तू अपने घर में जा जब वह आवे
मुझे खबर करना तो मैं भी घरसे सुचित्त हो चलूंगी सखी
उसकी बात सुनके अपने घर गई द्वारे पर बैठ के उसकी राह
ताकने लगी इतने में वह आया इसने उसे अपने घरमें
बिठाकर कहा तुम यहां बैठो मैं जाकर तुम्हारी खबर करती
हूं और आकर जयश्री से कहा तुम्हारा प्रीतम आन पहुंचा
है यह सुनके उसने कहा किंचित् ठहरना घरकेलोग सोजावें
तो मैं चलूं फिर कितनी एक देर के बाद जब आधीरात का
अमल हुआ और सब सोगये तब यह चुपके से उठकर उस
के साथ चली और एक क्षणमें वहां आन पहुंची और दोनों
ने उसके घरमें प्रसन्नता पूर्वक मुलाकात की जबचार घड़ी
रात बाक़ी रही यह उठकर अपने घरमें आनकर चुपचाप

सो रही और वह भी सबेरे अपने घर को गया इसी तरह
से कितने एक दिन बीतगये निदान उसका पति भी विदेश
से अपनी सुसरालमें आया जब इसने अपने पति को देखजी
में चिन्ता करके सखीसे कहा इसशोच में मेरा जी है क्या
करूं किधर जाऊं मेरे नींद भूख प्यास सब बिसर गई न ठंडे
से रुचि है न गर्म से और जो कुछ अहवाल अपनेचित्तका
था सो सब कहा निदान ज्यों त्यों करके दिन तो कटा पर
संध्या के समय जब उसका पति ब्यालूकर चुका तब उसकी
सासने एक जुदे चौबारे में सेज बिछवा कर कहला भेजा
कि तुम वहां जाकर आरामकरो और अपनी बेटी से कहा
कि तू जाकर अपने पति की सेवा कर वह इस बात को
सुन नाक भौं चढ़ा चुपकी हो रही फिर उसकी माने डाट
के उसके पास भेजा तो बेबश होके वहांगई और मुंह फेर
पलंगपर लेटरही वह ज्यों २ उस्से नेह की बातें करता था
त्यों २ उसे अधिक दुख होता था फिर तरह तरह के बस्त्र
आभूषण जो२ हरएक मुकाम से उसके वास्ते वह लाया था
सो दिये और कहा कि इसे पहन तबतो उसने और खफा
हो भवें तान मुंहफेरलिया और यह भी लाचार हो सोरहा
क्योंकि हारा मांदा राहका था पर उसस्त्रीको अपने यारकी
याद में नींद न आई जब वह समझी कि यह नींद से अचेत
हुआ तब वह हौले २ उठ उसे सोता छोड़ अन्धेरी रात में
निडर अपने दोस्त के मकान को चली राह में एक चोर ने
उसको देखकर अपने मन में चिन्ता की कि यह स्त्री
गहना पहिने हुये आधीरात के समय अकेली कहां जाती
यहै ह बात अपने जीमें कह उसके पीछे होलिया निदान
ज्यों त्यों यह अपने यार के मकान में पहुंची और उसे वहां
सांप काट गया था वह मरा पड़ा था इसने जाना कि सोता
है उसके बिरह की आग की जली हुई जो थी उस्से लपट

कर प्यार करने लगी और चोर दूरसे तमाशा देखने लगा
वहां एक पीपल के वृक्ष पर एक पिशाच भी बैठा हुआ यह
तमाशा देखता था अचानक उसके मनमें आया कि इसके
बदन में पैठ इससे भोग कीजिये यह बिचार उसके बदन में
आ भोगकिया अन्तको दांतोंसे उसस्त्रीकी नाक काट उसी
वृक्ष पर जा बैठा चोरने यह सब अहवाल देखा और वह
वे वषड़ो उसीभांति लहू से चुचहाती हुई अपनी सखी के
पास गई और सब माजरा कहा तब सखी बोली कि तू अपने
पतिके पास जल्द जा कि जिसमें सूर्य उदय होने न पावे
और वहां जाकर ढाढ़ मारके रोइयो जो कोई तुझसे पूछे
तो कहना कि इन्ने मेरी नाक काट ली है यह सखी की
बात सुनतेही वह तुरन्त जा ढाढ़ें मार २ रोने लगी इसके
रोने की आवाज सुन सारे कुटुम्ब के लोग आये देखते क्या
हैं कि उसकी नाक नहीं नकटी बैठी है तब वे बोले
निलज्ज पापी निर्दई क्रूरमति बिना अपराध किये इस की
नाक क्यों काटी वह भी यह स्वांग देख चिन्ता कर अपने
जीमें कहने लगा कि चंचल का, काले सांप का, शस्त्र
धारीका, दुश्मन का, विश्वास न कीजिये और त्रियाचरित्र
से डरिये कवीश्वर क्या वर्णन नहीं कर सका और योगी
क्या कुछ नहीं जानता मतवाला क्या कुछ नहीं बका स्त्री क्या
नहीं कर सक्ती सच है घोड़े का ऐब बादलका गरजना त्रिय
का चरित्र पुरुष की भाग्य देवता भी नहीं जानते आदमी
का तो क्या मक़दूर है इतने में उसके बाप ने कोतवाल को
यह खबर दी वहां से प्यादे चबूतरे के आये और इसे बांध
कोतवाल के पास लाये कोतवाल ने राजा को खबरकी राजा
ने उस्से यह अहवाल बुलवा के पूछा तो उसने कहा मैं कुछ
नहीं जानता और सेठ की लड़की से बुलाकर पूछा तो उसने
कहा महाराज प्रत्यक्ष देख के मुझ से पूछते क्या हो फिर

राजाने उस्से कहा तुझे क्या दण्ड दें यहसुनके वहबोला आप
के न्याय में जो ठहरे सो कीजिये राजा ने कहा इसे ले जाके
सूली दो बधिक राजा की आज्ञापाके उसे सूली देने ले चले
यह संयोग देख वह चोर भी वहां खड़ा तमाशा देखता था
जब उसे विश्वास हुआ कि यह नाहक मारा जाता है तो
उसने दुहाई दी तब राजाने उसे बुलाकर पूछा कि तू कौन
है उसने कहा महाराज मैं चोर हूं और यह बे गुनाह है
नाहक इसका खून होता है आपने कुछ न्याय न किया तब
राजा ने उसे भी बुलाया और चोर से पूछा तू अपने धर्म
से सच कह कि यह मुक़द्दमा किस तरह से है तब चोरने
ब्योरेवार अहवाल कहा और राजा अच्छी तरह से समझा
निदान हरकारे भेज उस स्त्री का यार जो मरा हुआ पड़ा
था उसके मुंह में से नाक मंगवा के देखी तब जाना कि यह
बेतकसीर है और चोर सच्चा है फिर चोर बोला कि महा-
राज नेकों को पालना और दुष्टों को दण्ड देना राजों का
सनातन धर्म चला आता है इतनी बात कह कर चूड़ामणि
तोता बोला महाराज ऐसे गुणों की पूरी स्त्रियां होती हैं
राजा ने उसस्त्रीका मुंहकाला करवा शिर मुड़वा गधे पर
चढ़वा नगरीकी फेरी दिलवा छुड़वादिया और उस चोर
को और साहूकार बच्चे को बीड़े दे बिदा किया इतनी कथा
कह बैताल बोला ऐ राजा इन दोनों में किसे ज़ियादा
पाप हुआ तब राजा बीर बिक्रमादित्य बोला कि स्त्री को
फिर बैताल बोला कि किस तरहसे यह सुनके राजाने कहा
मर्द कैसाही दुष्ट हो पर उसे धर्म अधर्म का बिचार रहता
है और स्त्री को कुछ धर्म अधर्म का ज्ञान नहीं रहता इस्से
स्त्री को बहुत पाप हुआ यह बात सुनके बैताल फिर चला
गया और उसी वृक्ष पर जा लटका फिर राजा जा उसको
पेड़ से उतार गठरी बांध कांधे पर रख लेचला ॥ ४ ॥

पांचवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा उज्जैन नाम एक नगरी है और वहां का राजा महाबलथा और उसका हरिदास नाम एक दूत था उस दूत की बेटी का नाम महादेवी था वह अति सुन्दरी थी जब वह बर योग्य हुई तो उसके पिता को चिंता हुई कि इसका वर ढूंढ़ विवाह कर दिया चाहिये निदान एकदिन उस लड़की ने अपने बाप से कहा कि पिता जो सबगुण जानता हो मुझे उसे दी जो तब उसने कहा कि जो सब विद्या जानता होगा तेरा ब्याह मैं उसके साथ करूंगा फिर एक दिन उस राजा ने हरिदास को बुला कर कहा कि दक्षिण दिशामें हरिचन्द्र नाम राजा है उसके पास तुम जाकर मेरी तरफ से क्षेम कुशल पूछो और उनकी क्षेम कुशलके समाचार लाओ यह राजा की आज्ञा पा हरिदास बिदाहो उस राजाके पासकितने एकदिनोंमें जापहुंचा और उसे अपने राजा का सब संदेशा कहा और हमेशः उस राजा के निकट रहने लगा एक दिन की बात है कि उस राजा ने इससे पूछा ऐ हरिदास अभी कलियुग का आरम्भ हुआ कि नहीं तब उन्ने हाथ जोड़ कर कहा महाराजा कलिकाल बर्तमान है क्योंकि संसार में झूठ बड़ा है और सत घट गया लोग मुंह पर बात मीठी करते हैं और पेटमें कपट रखतेहैं धर्म जातारहा पाप बढ़ा पृथ्वी फल कम देने लगी राजा डांड़ लेनेलगे ब्राह्मण लालची हुये स्त्रियों ने लाज छोड़ दी बेटा बाप की आज्ञा नहीं करता भाई भाई का विश्वास नहीं करता मित्रों से मित्रताई जाती रही पतिसे स्नेह घट गया सेवकों ने सेवा छोड़ दी और जितनी खराब बातें थींवे सबदृष्टि आतीहैं जब राजासे यह सब कहचुका तब राजा उठकर महल में गया और यह अपने स्थानपर आन बैठा इतने में एक ब्राह्मण उसके पास आ कहनेलगा

कि मैं तुझसे कुछ मांगने आया हूं यह सुनके उसनेकहा मांग तब उसने कहा अपनी बेटी मुझको दे हरिदास बोला कि जिसमें सबगुणहोंगे मैं उसको दूंगा यहसुनकेवहबोला कि मैं सब बिद्या जानताहूं उसने कहा कुछ अपनी बिद्या मुझे दिखला तो मैं जानूं कि तुझे बिद्या आती है तब उस ब्राह्मणने कहा मैंने एक रथ बनवाया है उसमें यह सामर्थ्य है किजहां जानेकी इच्छाकरो वहांवह एकक्षणमें ले पहुं-चावे तब हरिदास ने कहा उस रथ को प्रभात समय मेरे पासले आइयो वह भोर को रथले हरिदासके पास आया फिर ये दोनों रथ पर सवार हो उज्जैन नगरी में आन पहुंचे पर यहां उसके आने के पहिले किसी और ब्राह्मण के लड़के ने उसके बड़े बेटे से आकर कहा था कि तू अपनी बहिन मुझे दे और उसने भी यही कहा था कि जो सब बिद्या जानता होगा उसको दूंगा और उस ब्राह्मण के पुत्र ने भी कहा था कि मैं सब ज्ञान बिद्या जानताहूं यह सुनके उसने कहाथा कि तुझेही देंगे और एक औरब्राह्मणके पुत्रने उस लड़की की मासे कहा था कि तू अपनी बेटी हमेंदे उसने भी उसे यही जवाब दिया था कि जो सब बिद्या जानता होगा उसीको अपनी लड़की दूंगी उस ब्राह्मण के लड़के ने भी कहा था कि मैं संपूर्ण शास्त्र विद्या जानताहूं और शब्दबेधी तीर मारता हूं यह सुनके उसने भी कहाथा कि मैंने अंगीकार किया तुझेही दूंगी निदान इसी तरह से तीनो बर आनके इकट्ठे हुये हरिदास आकरअपने मनमें चिंता करने लगा कि एककन्या और तीनबर किसेदूं किसे न दूं इसी शोचमें था कि रातको एक राक्षस आनके उस कन्या को उठाय बिंध्याचल पर्वत के ऊपर ले गया कहा है कि बहुतायत किसी बस्तु की अच्छी नहीं अति रूपवती सीता थी रावण ने हरी, राजा बलिने अति दान किया सो

दरिद्री हुआ, रावणने अति गर्व करके अपने कुलकी क्षयकी निदान जब भोर हुआ और सब घरके लोगों ने कन्या को न देखा तब अनेक प्रकार की चिन्ता करने लगे और यह बात वे तीनों वर भी सुनके वहां आये उनमें एक ज्ञानी था उससे हरिदास ने पूछा ऐ ज्ञानी तू बता कि वह कन्या कहां गई उसने घड़ी एक में विचार करके कहा तुम्हारी लड़की को राक्षस ने पर्वत में ले जाके रक्खा है इसमें दूसरा बोला कि राक्षस को मारकर मैं अभी ले आऊंगा फिर तीसरा बोला हमारे रथ पर सवार हो जाओ और उसे ले आओ यह सुनतेही वह झट से उसके रथपर सवार हो वहां पहुंचा और उस दैवको मार तुरन्तउसे लेआया और तीनों आपस में झगड़ने लगे तब उसके बापने मनमें चिन्ता करके कहा कि सबोंने यह साहस किया है किसे दूं इतनी कथा कह बैताल बोला ऐ राजा बिक्रम उन तीनों में से वह कन्या किसकी स्त्री हुई राजा बोला कि वह स्त्री उसकी हुई जो राक्षस को मार कर लाया बैताल ने कहा सबका गुण बराबर है किस तरह से वह स्त्री उसकी हुई राजा ने कहा उन दोनों ने इहसान किया इससे उनको सवाब हुआ और वह लड़कर उसे मारकर लाया है इस वास्ते वह उसकी स्त्री हुई यह बात सुन बैताल फिर उसी वृक्षमें जा लटका और राजा भी वहीं जा बैताल को बांध कांधे पर रख ले चला ॥ ५ ॥

———oo———

छठी कहानी ॥

फिर बैताल बोला ऐ राजा धर्मपुर नाम एक नगर है वहांका राजा धर्मशीलथा और उसके मंत्रीकानाम अन्धक था उसने एकदिन राजासे कहामहाराज एकमंदिर बनवा उसमें देवी को बिठा नित पूजा कीजिये कि इसका शास्त्रमें

बड़ापुण्य मिलताहै तबराजा एकमन्दिर बनवा देवी पधरा शास्त्र की विधि से पूजा करने लगा और बिना पूजा किये जलभी न पीता था इस तरहसे जब कितनी एक मुहूर्तबीती तो एक दिन दीवान ने कहा महाराज दृष्टान्त प्रसिद्ध है कि निपूते का घर सूना मूर्ख का हृदय सूना और दरिद्री का सब कुछ सूना है यह बात सुन राजा देवी के मन्दिरमें जा हाथ जोड़ स्तुति करने लगा कि हे देवी तुझे ब्रह्मा विष्णु रुद्र इन्द्र आठ पहर सेवते हैं और तू ने महिषासुर चण्डमुण्ड रक्तबीजआदिदैत्योंको मारपृथ्वीकाभार उतारा और जहां २ तेरे भक्तको बिपत्तिपड़ी तहां २जा तू सहाय हुई और यही आश तक मैं तेरे द्वारपर आया हूं अबमेरे भी मनकी इच्छा पूरीकर इतनी स्तुति जबराजा कर चुका तब देवी के मन्दिर से आवाज आई कि राजा मैं तुझसे प्रसन्न हुई बर मांग जो तेरे मनमें है राजा बोला हे माता जो तू मुझसे प्रसन्न हुई तो मुझको पुत्र दे देवी ने कहा राजा तेरे महाबली और बड़ा प्रतापी पुत्र होगा तब तो राजा ने चन्दन अक्षत फूल धूप दीप नैवेद्य देकर पूजा की और इसी तरहसे नित्यपूजा करताथा निदान कितने दिनों के पीछे राजाके एकलड़का पैदा हुआ राजाने बाजे गाजेसे कुटुम्बसमेत जाकर देवीकी पूजाकी इस अरसे में संयोगबस एक दिन किसी नगर से एक धोबी अपने मित्र को साथ लिये इस शहर की तरफ आता था कि देवी का मन्दिर उसे दृष्टि आया उसने दण्डवत् करने का इरादा किया इसमें एकधोबी की लड़की अति सुन्दरी आतीहुई सामने इसनेदेखी उसेदेख मोहितहुआ और देवीके दर्शन कोगया दण्डवतकर हाथजोड़ उसने अपने मनमें कहादेवी जी इस सुन्दरीसे मेराविवाह तेरीकृपासे होतो मैं अपना शिर तुझे चढ़ाऊं यह मान्तामान दण्डवत कर मित्रको साथले अपने

नगरको गया जब वहां पहुंचा तो उसके विरहने ऐसा स-
ताया कि नींद भूख प्यास सब बिसर गई आठपहर उसीके
ध्यानमें रहनेलगा यहबुरी हालत उसके मित्रने देख उसके
बापसे सब ब्यौरेवार कहा उसका पिता भी यह सुनकर
भौचक होरहा और अपने जीमें चिन्ताकरनेलगा कि इस-
कोदशा देख ऐसा मालूम होताहै जो उसकन्या से इसकी
सगाई न होगी तो यह अपना प्राण त्याग करेगा इसे
उचित यहहै कि उस लड़की से इसका ब्याहकर दीजिये
कि जिसे यहबचे इतना विचारकर पुत्रके मित्रको साथले
उसगांवमें पहुंच उस लड़की के पितासे जाकर कहा मैंतेरे
पास कुछ यांचने आयाहूं जोतू देवेतो मैं कहूं उसने कहा
मेरेपास वह पदार्थहोगा तो मैं दूंगा तुमकहो इस तरहसे
बचन बन्दकर कहा तू अपनी लड़की मेरेपुत्रको दे यह सुनके
उसनेभी उसकी बात मानकर ब्राह्मणको बुलवा दिनलग्न
मुहूर्त ठहराकर कहा तुम लड़केको ले आओ मैंभी अपनी
लड़कीके हाथ पीलेकर दूंगा यहसुन वह वहांसे उठ अपने
घरआ सब सामान ब्याह का तैयार कर ब्याहने को गया
और वहांजा विवाहकर बेटेबहू कोले फिरअपने घरआया
और दुलहा दुलहिन आपस में आनन्द से रहने लगे फिर
कितने दिनोंके बाद उसलड़की के पिता के यहां कुछ शुभ
कर्मथा वहांसे न्योता इनको आया ये स्त्री पुरुष तैयार हो
अपने मित्रको साथ ले उस नगरको चले जब नगरके निकट
पहुंचे तो देवी का मन्दिर नजर आया तो उसे यह बात
याद आई तब उसने अपने जी में विचार कर कहा कि मैं
बड़ा असत्यवादी अधर्मीहूं कि देवीसे मिथ्या बोला इतनी
बात अपने मनमें कह उस मित्र से कहा तुम यहां खड़े
हो मैं देवी का दर्शन कर आऊं और स्त्री को भी कहा तू
यहांठहर यहकह मंदिरके पासपहुंच कुण्डमें स्नानकरदेवी

के सन्मुख जा हाथजोड़ नमस्कार कर खड्ग उठा गर्दन पर
मारा कि शिरतनसे जुदाहो भुंइ में गिरा निदान कितनी
देरपीछे उसके मित्रने विचारा कि इसेगये बड़ीदेर हुई है
अबतक फिरा नहीं चलकर देखाचाहिये और उसकी स्त्री
को कहा तू यहांखड़ी रह मैं उसे शीघ्रही ढूंढ़ले आता हूं
यहकहकर देवीके मंदिरमें गयातो देखताक्याहै कि धड़से
उसका शिर जुदा पड़ा है यहहालत वहां की देख अपने
मनमें कहने लगा कि संसार बहुत कठिन जगह है कोईयह
न समझेगा कि इसने अपनेहाथसे शीस देवीको चढ़ायाहै
बल्कि यह कहेंगे कि इसकी स्त्री जो अति सुन्दरी थी उसके
लेनेको लिये मारकर यहमकर करता है इससे यहां मरना
उचित है पर संसारमें बदनामी लेनी अच्छा नहीं यहकह
तालाबमें नहाके साम्हने आ हाथजोड़ प्रणामकर खांड़ाउठा
गलेमें मारा कि रुण्ड से मुण्ड जुदा होगया यह स्त्री यहां
अकेली खड़ी २ उकताकर राह देख २ निराश हो ढूंढ़ती
हुई देवीके मंदिरमें गई वहां जा देखती क्या है कि दोनों
मरे पड़े हैं फिर इन दोनों को मुआ देख उसने अपने जीमें
विचारा लोग तो यह न जानेंगे कि आपसे देवी को ये बल
चढ़े हैं सब कहेंगे कि रांड व्यभिचारणीथी बदकारी करने
के लियेदोनों को मारआईहै इस बदनामीसे मरना उचित
है यह सोच कर सरोवर में गोता मार देवीके सन्मुख आ
शिर नवा दण्डवत्कर तलवार उठा चाहतीथी कि गर्दनमें
मारे कि देवी ने सिंहासन से उतर उसका हाथ आन के
पकड़ लिया और कहा पुत्री बर मांग मैं तुझसे प्रसन्न हुई
तब उसने कहा माता जो तू मुझसे प्रसन्न हुई है तो इन
दोनों को जी दानदे देवी ने कहा इनके धड़ोंसे शिर लगा
दे इसने मारे हर्षके घबरा धड़से शिर बदल के लगा दिया
और देवी ने अमृत ला छिड़का दिया ये दोनों जीकर उठ

खड़े हुये और आपसमें झगड़ने लगे यह कहै स्त्री मेरी और वह कहै स्त्री मेरी इतनी कथाकह बैतालबोला कि ऐराजा वीर विक्रमादित्य इन दोनों में वह स्त्री किसकी हुई राजा ने कहा सुन शास्त्र में इसका प्रमाण लिखाहै कि नदियोंमें गंगा उत्तमहैं और पर्वतोंमें सुमेरु पर्वत श्रेष्ठहै और वृक्षोंमें कल्प वृक्ष अंगोंमें मस्तक उत्तम है इस न्याय से जिसका उत्तम अंगहै उसीकी स्त्री हुई इतनी बात सुन बैताल फिर उसी वृक्षमें जालटका और राजा भी जा उसे बांध कंधे पर रख ले चला ॥ ६ ॥

———oo———

सातवीं कहानी ॥

फिर बैताल बोला कि ऐ राजा चंपापुर नाम एक नगर है वहां का राजा चंपकेश्वर और रानीका नाम सुलोचना और बेटीका नाम त्रिभुवन सुन्दरीहै सो अति सुन्दरीहै जिसका मुख चन्द्रमा सी बाल घटा से आंखें मृगकी सी भवें धनुष सी नाककीर कीसी गला कपोत कासा दांत अनार केसे दाने होठोंकी लाली कुंदरू कीसी कमर चीते कीसी हाथ पांव कोमल कमल से रंग चंपे कासा निदान उसके जोबन की ज्योति दिन प्रति दिन बढ़ती थी जब वह युवा हुई तो राजा रानी अपने चित्त में चिन्ता करने लगे और देश २ के राजोंको खबरगई कि राजा चंपकेश्वरके घरमें ऐसी कन्या पैदा हुई है जिसके रूप को देखते ही सुर नर मुनि मोहित हो रहतेहैं फिर मुल्क मुल्कके राजोंने अपनी अपनी सूरतें लिखवा लिखवा ब्राह्मणों के हाथ राजा चंपकेश्वर के यहां भेजदीं राजाने अपनी बेटीको सब राजों की तसबीरें दिखलाईं पर उसके मनमें कोई न समाई तब तो राजा ने कहा तू स्वयम्बरकर वह बातभी उसने न मानी और अपने बापसे कहा कि रूप बल ज्ञान जिसमें ये तीनों गुण हों

पिता उसे मुझे देना निदान जब कितने एक दिन बीते तो चारों दिशा से चार वर आये फिर उनसे राजा ने कहा अपना अपना गुण विद्या मेरे आगे प्रकट कर कहो उनमें से एक बोला मुझमें यह विद्या है कि एक कपड़ा मैं बना कर पांच लाल को बेचता हूं जब उसका मोल मेरे हाथ आताहै तब उसमें से एक लाल ब्राह्मणको देता हूं दूसरा देवता को चढ़ाता हूं तीसरा अपने अंग लगाता हूं चौथा स्त्री के वास्ते रखता हूं पांचवें को बेच कर रुपये ले नित्य भोजन करता हूं यह विद्या दूसरा कोई नहीं जानता और मेरा जो रूप है सो प्रकटहै दूसरा बोला मैं जल थलके पच्ची की भाषा जानता हूं मेरे बलका दूसरा नहीं और सुन्दरताई मेरी आपके आगे है तीसरे ने कहा मैं ऐसा शास्त्र समझताहूं कि मेरे समान दूसरानहीं और सुन्दरता मेरी तुम्हारे रूबरू है चौथे ने कहा मैं शस्त्र विद्या में एकही हूं दूसरा मुझसा नहीं शब्द बेधीतीर मारताहूं और मेरा रूप जगतमें प्रकटहै आपभी देखतेहीहैं यह चारोंकी बातसुन-राजा अपने जीमें चिन्ता करने लगा कि चारों गुणमें बराबर हैं किसे कन्या दूं यह शोचकर उसने बेटी के पास जा चारोंका गुणबर्णन किया और कहा मैं तुझे किसे दूं यह सुन वह लाजकी मारी नीची गर्द्दनकर चुपहो रही और कुछ जवाब न दियाइतनी बात कह बैताल बोला ऐ राजा बिक्रम वह स्त्री किस के योग्य है राजाने कहा जो कपड़ा बनाकर बेचता हैसोजातका शूद्रहै और जोभाषा जानता है वह जातका वैश्य है जोशास्त्रपढ़ा है सो ब्राह्मण है और शब्दबेधी उसका सजातीहै यहस्त्री उसके लायकहै इतनी बात सुनबैताल फिर उसी पेड़में जालटका और राजा भी वहां जा उसेबांध कंधेपर रखकर लेचला ॥ ७ ॥

———oo———

आठवीं कहानी ॥

तब बैतालने कहा ऐ राजा मिथिलावती नाम एक नग-
री है वहां का राजा गुणाधिप है उसकी सेवा करनेको दू-
र देशसे एक चिरमदेव नाम राजपुत्र आया नित्य उस राजा
के दर्शन को जाया करता परंतु मुलाकात न होती थी
और जितनाधन वह लायाथा सो वर्षरोज के अरसेमें सब
बैठकर वहां खाया और वहां घर उसका तबाह होगया
एकदिनकी बातहै कि राजा शिकारको सवार हुआ और
चिरमदेव भी उसकी सवारी के साथ होलिया संयोग वश
राजाएक वनमें आकर फौजसे जुदा होगया और लोग स-
वारीके एक ओर जङ्गलमें भटकगये लेकिन एकचिरमदेव
ही राजाके पीछेथा निदान उसनेही पुकार कर कहा म-
हाराज लोगसवारीके पीछे रहगये हैं और मैं आपकेघोड़े
के साथ घोड़ा मारे चलाआता हूं राजाने यह सुनके घोड़ा
रोका इतनेमें वह बराबर आया राजाने उसे देखके पूछा
तू किस वास्ते इतना दुर्बलहोरहा है तब वह बोला जिस
स्वामी के पास रहिये और वह ऐसाहो कि हजारोंको
पालताहो और अपनी खबर नले तो इसमें उसका कुछदोष
नहीं परंतु अपने कर्मका दोष है जैसे दिन को सारा जहान
देखता है परंतु उल्लू को नजर नहीं आता इसमें सूर्य का
क्या गुनाह है मुझको पश्चात्ताप है कि जिसने माके पेटमें
रोजी पहुंचाई थी और जब हम पैदा हुये और दुनियांकी
वस्तुओंका सुख करनेकेलायक हुये अब वहखबर नहींलेता
नहीं मालूम कि सोता है या मरगया और अपने नजदीक
माल और दौलत बड़े आदमीसे चाहनी यदिदेते वक्त वह
मुह बनावै और नाक भौं चढ़ावे तो इससे जहर हलाहल
खाकर मरजाना बिहतर है और ये छः बातें आदमी को
हलका करती हैं एक तो खोटे नरकी प्रतीति दूसरे बिना

कारण की हंसी तीसरे स्त्री से विवाद करना चौथे असज्जन स्वामी की सेवा पांचवें गधे की सवारी छठे बिना-संस्कृत की भाषा और ये पांच चीजें बिधाता मनुष्य के कर्म में पैदा होतेही लिख देताहै एक तो आयुर्बल दूसरे कर्म तीसरे धन चौथे विद्या पांचवें यश ऐ महाराज जबतक आदमी का पुण्य उदय होता है सब उसके दास बनेरहते और जब पुण्य घटजाता है तो बंधु बैरी होजाते हैं पर एक बात मुक़र्रर है स्वामी की सेवा करने से कभी न कभी फल मिल रहता है निष्फल नहीं रहता यहसुनराजा ने उन सब बातों को सोच कर उस समय कुछ उत्तर न दिया पर उससे यह कहा कि मुझे भूखलगी है कहीं से कुछ खाने को ला चिरमदेव ने कहा यहां अन्न भोजन नमिलेगा यह कह जंगल में जा एक हिरन मार खीसे से चकमक निकाल आग सुलगा मांस के तिक्के भून राजाको खूबसा खिला आप भी खाये जब राजा का पेटभर चुका तब उसने कहा ऐ राजपुत्र अब हमें नगर को लेचलो कि राह मुझे मालूम नहीं उसने राजा को नगरमें ला उसके मन्दिर में पहुंचा दिया तब राजाने उसकी चाकरी नियत करदी और बहुत से उसे वस्त्र आभूषण दिये फिर वह राजा की सेवा में हाजिर रहने लगा एक दिन राजा ने किसी काम के लिये समुद्र किनारे उस राजपुत्र को भेजा वह जब किनारे पहुंचा तो उसने एक देवी का मन्दिर देखा उसमें जा देवी की पूजा की लेकिन जब यहवहांसे बाहर निकला तो वहीं उसके पीछेसे एक सुन्दरी नायका आ उससे पूछने लगी ऐ पुरुष तू किस लिये यहां आया है वह बोला ऐशके लिये आयाहूं और तेरे रूपको देख मैं मोहित हुआहूं उसने कहा जो मुझसे कुछ इरादा रखता है तो पहिले तू इस कुण्ड में जाकर स्नान कर फिर

उसके पीछे जो तू मुझसे कहेगा सो मैं सुनूंगी यह सुनते
ही वह कपड़े उतार कर तालाब में पैठ गोता मार निकल
कर देखै तो अपने नगर में खड़ा है इस अचंभे को देख अच-
म्भित हो अपने घर जा और कपड़े पहन राजा के पास आ सब
वृत्तान्त कहा राजा ने सुनतेही कहा मुझे भी यह अचंभा
दिखा वह कहतेही सवारी मंगा दोनों सवार होकर चले
कितनेदिनोंके अरसेमें सागरके किनारे आये और उसी देवी
के मंदिर में जाकर पूजा की फिर राजा जब बाहर निकला
तो वही नायका एक सखी साथ लिये राजाके पास आन
खड़ी हुई और राजाका रूप देखमोहित हो बोली ऐराजा
जो मुझे आज्ञा दे सो करूं राजाने उसे उत्तर दिया जा तू
मेरा कहना करे तो मेरे सेवककी स्त्री हो वह बोली मैं तेरे
रूपके आधीन हुईहूं इसकी जोरू किसतरहसे होऊं राजा
ने कहा अभी तो तू ने मुझसे कहा जो तू हुक्म करेगा सो
करूंगी और सज्जन जिस बातको कहते हैं उसका निर्वाह
करतेहैं अपने वचनको पाल मेरेसेवककी जोरूहो यहसुनके
वह बोली जो आपने कहा सोमुझे अंगीकार है तब राजा
सेवकका गांधर्व विवाह कर दोनों को साथले अपने राज
धाममें आया इतनीबात कह बैताल बोला राजा बतलाओ
स्वामी और सेवकमें किसका सत अधिकहुआ राजाबोला
सेवकका फिर बैतालबोला कि जिस राजाने ऐसी सुन्दरस्त्री
पा सेवकको दी तिस राजाका सत अधिक न हुआ तबराजा
वीर विक्रमादित्य ने कहा जिनको धर्म उपकार करना है
तिनको उपकार करने में अधिक क्या है और जो आप
सेवक हो परकाज करै सोई अधिक है इस कारण सेवक
का सत अधिक हुआ यह बात सुन बैताल उसी वृक्ष पर
जालटका और राजा फिर उसे वहां से उतार कांधे पर
रखलेचला ॥ ८ ॥

नवीं कहानी ॥

बैतालबोला ऐराजा मदनपुरनाम एकनगर है वहां बीर
वर नाम राजाथा और उसी देश में हिरण्यदत्त नाम एक
बनियाथा उसकी बेटी का नाम मदनसेना था वह एक दिन
वसन्तऋतुमें सखियोंको साथ लिये अपने बागमें सैर और
तमाशेके वास्ते गई संयोगबस उसके आने के पहले ही धर्म
दत्तसेठका बेटा सोमदत्तनाम अपने मित्रकोलिये बनबिहार
को आयाथा वहांसे फिरता हुआ उसबाड़ीमें आन पहुंचा
और इसेदेखमोहित होगया और अपने मित्रसे कहने लगा
भाई यह मुझसे मिलेतो मेरा जीवन सुफल हो और जो न
मिलेतो इसदुनियां में जीनाव्यर्थ है यह अपने मित्रसे बातें
कर बिरहमें व्याकुलहो बेबस उसकेपास जा उसका हाथ
पकड़के कहने लगा जोतू मुझसेप्रीति न करेगीतो मैंतेरेऊपर
अपनाप्राण दूंगा वहबोली ऐसामत कीजो इसमें पापहोगा
तब उसनेकहा तेरी प्रीति ने मेरे दिलको बीधाहै और तेरे
बिरहकी आगने मेरे शरीरको जला दिया इस पीरसे मेरी
सुधिबुधि सबजाती रहीहै और मुझे इस समयप्रीतिके ग-
लबे से धर्म अधर्म का लिहाज नहीं है परजो तूमुझे वचन
देतौ मेरेजीमेंजी आवै वह बोली आजके पांचवें दिन मेरा
ब्याह होगा तो पहिले मैं तुझसे मिल जाऊंगी पीछे
अपने पतिके यहां रहूंगी यहवचन दे सौगन्धखा वह
अपने घरको गई और यह अपने घर आया निदान पांचवें
दिन उसका ब्याहहुवा उसका पति ब्याहकर उसे अपने घर
ले आया कितने एक दिनों के पीछे रात के समय उसकी
दिवरानी जिठानी ने जबरदस्ती उसे उसके पतिकेपास भेजा
वह रंगमहल में जा चुपचाप एक कोने में बैठरही इस अ-
रसे में उसके पतिने जो देखा तो उसका हाथ पकड़ सेज
पर बिठा लिया और जब चाहा की गलेलगाऊं तो उसने

हाथसे झिटक दिया और जो२उस साहूकारबच्चे से कौल
करार हुवा था सो सब बयानकिया यह सुनके उसकेपति ने
कहा जोतूसच उसके पास जायाचाहती है तो जा वह अपने
स्वामी की आज्ञा पा उस सेठके स्थान को चली राह में चोर
ने उसे देख प्रसन्न हो इसके पास आकर कहा कि तू दो
पहर रातके समय इस अंधेरे में ऐसे वस्त्र आभूषण पहनके
अकेली कहां जाती है वह बोली जिस जगह मेरा प्रीतम
प्यारा बसता है यह सुन चोरने कहा यहां तेरा सहायक
कौन है वह कहनेलगी धनुषबाण लिये मदनमेरी सहायता
करनेवाला साथ है यह कह फिर चोर के आगे आद्यो पांत
अपनी कथा वर्णन करके कहा कि मेरा शृंगार भंग मत
कर मैं तुझे वचन दियेजाती हूं वहां से जब फिरूंगी तब
गहना तेरे हवाले करूंगी यह सुनके चोरने अपने दिल में
कहा गहना देने का तो मुझे वचन दियेजाती है फिरक्यों
इसका सिंगार भंगकरूं यह समझकर उसै छोड़दिया और
आपवहां बैठारहा और यह वहां गई जहां सोमदत्त पड़ा
सोता था जातेही जो इसने उसे अचानक जागया तो वह
घबराकर उठा और कहनेलगा तू देवकन्या है कि ऋषि
कन्या नाग कन्या है सच कह तू कौन है और मेरे पास
कहां से आई है वह बोली कि मैं नरकन्या हूं और हिर-
ण्यदत्त सेठ की बेटी हूं मदनसेना मेरा नाम है और तुझे
स्मरण नहीं जो उस उपवन में तू जबर दस्ती मेरा हाथ
पकड़के भोग करने पर उद्यत हुआ था और मैंने तेरे कहने
के अनुसार यह सौगन्ध कीथी कि बिवाहित पुरुषको त्याग
करके तेरेपास आऊंगी सोमैं आईहूं जोतेरीइच्छा में आवे
सो कर फिर उन्ने कहा यह तूने वृत्तांत अपने पतिके आगे
कहा या नहीं इसने उत्तर दिया कि मैंने सम्पूर्ण अहवाल
कहा और उसने सब दरियाफ्त करके मुझे तेरेपास बिदा

किया सोमदत्त बोला यह बात ऐसे है जैसे बिना वस्त्र का
गहना या बिन घीके भोजन या बिना सुरके गान यह सब
एकसे हैं इसीतरह मैले बसन तेजको हरैं कुभोजन बलको
कुभार्या प्राणको कुपुत्र कुलको हरैं और राक्षस खफाहोता
है तो प्राणको लेता है पर स्त्री हित और अनहित दोनों में
दुखदेने वाली है स्त्री जो न करे सो थोड़ा क्योंकि जो बात
इसके मनमें रहती है सो जबान पर नहीं लाती और जो
जबान में है उसे प्रकट नहीं करती और जो करती है तो
कहती नहीं स्त्री को संसार में भगवान ने अजब कोई पैदा
किया है इतनी बातैं कह उस सेठके बेटेने इसे जवाबदिया
कि मैं पराई स्त्री सेवास्तानहीं रखता यहसुनवहफिर उलटी
अपने घरको चली राहमें उस चोर से भेंट हुई उसके आगे
सब वृत्तांत कहा चोरने सुनके श्याबाशी दे छोड़दिया यह
अपने पतिके निकट आई और उसे सबवृत्तान्त वर्णनकिया
पर उसके पतिने उसै प्यार न किया और कहा कोयल का
सुरहीरूप है और नारी का रूप पतिब्रत है और कुरूप
मनुष्य का रूप विद्या तपस्वी का रूपक्षमाहै इतनी कथा कह
बैताल बोला हे राजा इनतीनों मेंसे किसका सत अधिकहै
राजा बिक्रमादित्यने कहा चोर का सत अधिक है बैताल
ने कहा किस तरह राजाने कहा और पुरुष पर उसकी
इच्छा देख स्वामीने छोड़ा राजा का डरमान सोमदत्त ने
छोड़ा और चोरके छोड़ने का कुछकारण नथा इसी चोरही
प्रधान है यहसुन बैताल फिर वृक्षमें जा लटका और राजा
भी वहीं जा उसे वृक्ष से उतार बांध कांधेपर रख फिर ले
चला ॥ ९ ॥

———oo———

दशवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा गौड़ देश में बरदवान नाम एक

नगर है और शुभशेखर नाम वहां का राजा था उसका
मंत्री एक सरावगी अभयचन्द नाम था उसी के समझाने
से राजा भी सरावग धर्म में आया शिवकी पूजा बिष्णु
की पूजा और गौदान भूमिदान पिण्डदान जुआ और
मदिरा इन सबको मना किया नगर में कोई करने न पावे
और हाड़ कोई गंगामें न ले जाने पावे और इन बातों की
दीवान ने भी राजा से आज्ञा ले डौंड़ी नगर में फिरवा दी
कि जो कोई ये कर्म करेगा उसका सर्वस्व राजा छीनकर
दण्ड दे शहर से निकाल देगा फिर एक दिन दीवान राजा
से कहने लगा कि महाराज धर्म का बिचार सुनिये जो
कोई किसी का जी लेता है वह और जन्म में उसका भी
जी लेता है इसी पाप से संसार में अनेक मनुष्यों का जीवन
मरण नहीं छूटता फिर २ जन्म लेता है और मरता है इस
से जगत में जन्म पाके धर्म बटोरना मनुष्य को उचित है
देखिये काम क्रोध लोभ मोह वश हो ब्रह्मा बिष्णु महादेव
किसी न किसीतौरसे संसारमें अवतार लेलेआते हैं बल्कि
उनसेगाय अच्छीहैं जो राग द्वेष मदलोभमोहसे रहित हैं
और प्रजाकी रक्षाकरतीहैं और उनकेजो पुत्र होतेहैं वेभी
जगतके जीवोंको बहुत तरहसे सुखदे पालतेहैं इस्से देवता
और मुनि सबगौको मानतेहैं इसलियेदेवताओंको मानना
अच्छा नहीं इस जगमें गायको मानिये और हाथी से लगा
चिउंटी औरपशु पक्षी नरतक हरएक जीवकी रक्षा करना
धर्महै जहानमें इसके समान कोई धर्म नहीं जो नरबिराने
मांसको खा अपना मांस बढ़ाते हैं सो अन्तकाल में नर्क
भोग करते हैं इस्से मनुष्य को उचित यह है कि जीव की
रक्षा करे जो लोग कि बिराना दुःख नहीं समझते और
औरोंके जीव मार मार खाते हैं उनकी इस पृथ्वीमें उमर
कम होती है और लूले लंगड़े काने अंधे बौने कुबड़े ऐसे

अंग हीन हो २ जन्म लेतेहैं जैसे पशु और पक्षीके अंग खाते
हैं वैसेही अन्त अपने अंग गवाते हैं औरमदपान करनेसे
महापाप होताहै इस्से मदमांसका खानाउचित नहीं इस
तरहसे दीवान राजा को अपने मत का ज्ञान समझा ऐसा
जैन धर्ममें लाया कि जो यह कहताथा वही राजा करता
था और ब्राह्मण योगी जंगम सेवड़ा संन्यासी फक़ीर किसी
को न मानताथा और इसी धर्मसे राज करताथा एक दिन
कालके वश हो मरगया फिर उसकाबेटा धर्मध्वजनाम गद्दी
पर बैठा और राज करने लगा एक दिन उसने अभयचंद
दीवानको पकड़वा शिरपर सात चोटियां रखवामुंह काला
करवा गधेपर चढ़ा डौंडी बजवा नगरके फेरे दिलवा देश
निकाला दिया और अपना राज निःकंटक किया एकदिन
वह राजा बसंत ऋतुमें रानियों को साथ ले एक बाग की
सैर को गया उस बाग में एक बड़ातालाब था और उसमें
कमल फूल रहेथे राजा उस सरोवर की शोभा देख कपड़े
उतार स्नान करने को उतरा और एक फूल तोड़ तीर पर
आ रानी के हाथ में देने लगा कि फूल हाथ से छूट कर
रानीके पांव पर गिरा और उसकी चोट से रानी का पांव
टूट गया तब राजा घबरा कर एक बारगी बाहर निकल
उसकी औषधि करनेलगा कि इसमें रातहुई और चन्द्रमा
ने प्रकाश किया चांद की ज्योतिके पड़तेही दूसरी रानीके
शरीरमें फफोले पड़गये फिर अचानक दूर से किसी गृहस्थ
के घरसे मूसल की आवाजआई वोंहीं तीसरी रानीके शिर
में ऐसा दर्दहुआ कि मूर्च्छा आगई इतनी बातकह बैताल
बोला ऐ राजा इनतीनों में अति सुकुमार कौन है राजाने
कहाजिसके मूड़में पीर हो मूर्छाआई सोईबहुत सुकुमारहै
यह बात सुन बैताल फिर उसीवृक्षमें जालटका और राजा
वहां जाउसे उतारगठरी बांधकांधे पररख लेचला ॥ १० ॥

ग्यारहवीं कहानी ॥

बैताल बोला कि ऐ राजा पुण्यपुर नाम एक नगर है वहां का वल्लभ नाम राजा था और उसके मंत्री का नाम सत्य प्रकाशथा उसमंत्रीकी स्त्रीका नामलक्ष्मी था उसराजा ने एकदिन अपनेदीवानसे कहाजो राजा होके सुन्दर स्त्रीसे भोगविलास न करेतो राजकरना उसका निष्फल है यह बात कह दीवानको राज काजका भार देआप सुखसे ऐश करने लगा राज की चिन्ता सब छोड़ दी और दिन रात आनन्दमें रहने लगा संयोग बस एक दिन वह मंत्री अपने घरमें उदास बैठाथा कि इसमें उसकी भार्य्याने पूछा स्वामी इनदिनों आपको बहुत दुर्बल देखतीहूं वहबोला निशदिन मुझे राजकी चिन्ता रहती है इससे शरीर दुर्बल हुआ है और राजा आठपहर अपने ऐश आराम में रहता है वह मंत्रीकी जोरू बोली कि हे पति बहुतदिन तुमने राजकाज किया अब थोड़े दिनोंके लिये राजासे बिदा हो तीर्थयात्रा करो यह बात उसकी सुन मंत्री चुपका हो रहा फिर जब वहांसे उठाती दरबारके समयराजाके पास जा रुखसतले तीर्थ यात्रा करने निकला जाते २ समुद्र के तीर सेतुबन्ध रामेश्वरमें जा पहुंचा वहां जातेही महादेव का दर्शनकर बाहर निकलाथा कि दृष्टि उसकी समुद्रकी तरफ जा पड़ी तो क्या देखता है कि एक ऐसा कंचन का पेड़ उसमें से निकला कि जिसके जमुर्रद के पत्ते पुखराज के फूल मूंगेके फल हैं वह अतिही सुन्दर दृष्टि आया और उस वृक्ष पर अति सुन्दर नायका बीन हाथ में लिये मधुर २ कोमल सुरों से बैठी गाती है एक घड़ी के बाद वह तरवर समुद्रमें लोप होगया यह तमाशा मंत्री वहांदेख उलटा फिर अपने नगरमें आया और राजाके पासजा दण्डवत कर हाथ जोड़ बोला महाराज मैं एक अचरज देखआया हूं राजाने कहा

बयानकर दीवानने कहामहाराज अगले मनुष्य कहगये हैं जोबात किसीकी समझमें न आवै और कोई निश्चय न करै वैसीबात न कहिये परयह मैंने आंखोंसे प्रत्यक्ष देखा इससे मैं कहताहूं महाराज जहां रघुनाथजीने समुद्रपर पुलबांधा है वहां जादेखता क्याहूं कि सागर मेंसे एकसोनेका तरवर निकला वह जमुर्रदके पात पुखराजके फूलमूंगे के फलों से ऐसा लदा हुआ था जिसका वर्णन नहीं होसक्ता और उसपर महासुन्दरी स्त्री बीनहाथमें लिये मीठेमीठे सुरोंसे गाती थी एक घड़ीके बाद वह पेड़ समुद्रमें छिप गया यह बात राजा सुनदीवानको राजसौंप अकेला समुद्रके किनारे को चला कितने एक दिनों में वहां जा पहुंचा और महादेव के दर्शन को मंन्दिर में गयाज्यों पूजाकर बाहर आया कि समुद्र से वही वृक्ष नायकासमेत निकला राजा उसको देखतेही सागर में कूद उसी वृक्ष परजा बैठा वह राजा समेत पाताल को चला गया तो इसको देख वह सुन्दरी के बोली ऐ बीरपुरुष किस वास्ते तू यहां आया है राजा ने कहा मैं तेरेरूप के लालच से आयाहूं उसने कहा जो तू काली चौदशकेदिनमुझसेन मिलेतोमैंतेरेसाथ विबाहकरूं राजाने यहबात मानी उससुन्दरीनेराजासे यहबचनलेकर राजाके साथ ब्याहकिया जबअंधेरी चतुर्दशी आईतो उसने कहाऐराजा तू आज मेरे निकट मतरह यह सुनके राजा खड्ग हाथमेंले वहांसे उठा और एक किनारे जा छिप कर देखता रहा जबआधी रातहुई उस समय एक देव आया औरउसने आतेही इसेगलेसे लगाया यह देखतेही राजा खांडलेके धाया और कहा राक्षस पापी मेरे सामनेतू स्त्री को हाथ न लगा पहिले मुझसे संग्राम कर मुझे तभीतक भयथाजबतक तुझे न देखाथाअबमैंनिडरहूं इतनी बातकह खांड निकाल एकऐसा हाथ माराकि उसकाशिरधड़से सुखड़

जुदाहो जमीन पर तड़फने लगा यहदेख वह बोली कि ऐ
बीर पुरुष तूने बड़ा उपकार किया यह कहकर फिरकहा
कि न सब पहाड़ोंमें लाल होते हैं न सब शहरों में सत-
वंते आदमी न हर एक बनमें चन्दन उपजताहै न हर एक
हाथीके मस्तक में मोती होता है फिर राजा ने पूछा यह
राक्षस किसवास्ते कृष्ण चतुर्दशीको तेरेपास आया था वह
बोली मेरेपिता का नाम विद्याधर है उसकी मैं पुत्री हूं
सुन्दरी मेरानाम है और वह नियत था कि मुझ बिन मेरा
बाप भोजन न करता एकदिन भोजन की बिरयां मैं घरमें
नथी तब पिताने मुझपर क्रोधकर मुझे शाप दिया की तुझे
काली चौदशके दिन राक्षस गलेसे आनके लगायाकरे यह
सुनके मैं बोली पिता शाप तो तुमनेदिया अबमेरे ऊपरकृपा
कीजिये उसनेकहा महावीर पुरुष जबउस राक्षसको मा-
रेगा तबतू इस शापसे छूटेगी सो मैं उसशाप से छूटी और
अब मैं अपने पिताको नमस्कार करने जाऊंगी राजा बोला
जोतू मेरे उपकार को मानेतो एकबार मेरे राज्यको चलके
देख पीछे अपने पिताके दर्शनको जाइयो वहबोली कि अ-
च्छाजो आपनेकहा सो मुझे अंगीकार है फिर राजा उसे
साथले अपनी राजधानी में आया व्याहके बाजन बजनेलगे
सारे नगरमें खबर हुई कि राजा आया तब घरघर बधाई
मंगलाचार होनेलगे फिर तो सम्पूर्ण नगर के मंगल मुखी
आनके दरबारमें मुबारक बादियां देनेलगे राजाने बहुतसा
दानपुण्य किया फिरकई एक दिन पीछे वह सुन्दरीबोली
महाराज अबमैं अपने बापके यहां जाऊंगी राजाने उदास
होकर कहा अच्छा सिधारो जब इसने राजा को उदास
देखातो कहा महाराज मैं न जाऊंगी राजाने कहा किस
वास्ते तूने अपने बापके यहांका जाना बन्दकिया वहबोली
अबमैं मनुष्यकी होचुकी और पितामेरा गन्धर्व है तब मैं

जाऊं तो मेरा आदर करेगा इसलिये मैं नहीं जाती यह
सुन राजा बहुत प्रसन्नहुआ और लाखोंरुपये कादानपुण्य
किया राजा के इस अहवाल के सुनने से दीवान की छाती
फटी और मरगया इतनी बात कह बैताल बोला ऐ राजा
किसलिये वहमंत्री मरगया तब राजा बीर विक्रमादित्य
ने कहा कि मंत्रीने देखा कि राजातो ऐश करनेलगा और
राजकाज की चिन्ता सबभुलादी प्रजा अनाथ हुई अबमेरा
कहा कोई न मानेगा इसी चिन्तासे वह मरगया यह सुन
बैताल फिर उसी वृक्षपर जालटका राजा फिर उसी तरह
से कांधेपर रखले चला ॥ ११ ॥

———oo———

बारहवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐराजा बीर विक्रमादित्य चूड़ापुरनाम एक
नगर है वहांका चूड़ामणि नाम राजा था जिसके गुरुका
नाम देवस्वामी और उसके बेटेका नाम हरस्वामीथा वह
कामदेव के समान सुन्दर था और शास्त्र में बृहस्पति की
बराबर और धन उसके कुबेर कासाथा वह ब्राह्मणकी बेटी
को जिसका नाम लावण्यवती था व्याहलाया उनदोनों में
बहुत प्रीतिहुई एक दिन गरमी के मोसम में रातके समय
चौवारेकी छतपर दोनों अचेतपड़े सोतेथे संयोगवस स्त्रीके
मुंहपरसे ओढ़नी सरकगई और एक गन्धर्व विमान परबैठा
हवामें उड़ा हुआ कहीं जाता था अचानक उसकी दृष्टि
इसपर पड़ी वह विमानको नीचेलाया और उस सोती को
विमानपर रखकर लेउड़ा कितनी देरके पीछे ब्राह्मण भी
सोतेसे उठा तो देखता क्या है कि स्त्री नहीं तब घबराया
और वहांसे उतरकर सम्पूर्ण घरको ढूंढ़ा जब वह वहांभी
न मिली तो सारीनगरी की गली गली कूचा कूचा ढूंढ़ता
फिरा परंतु कहीं उसे न पाया फिर अपने जीमें कहनेलगा

कौन उसे लेगया और कहां गई निदान जब कुछ बश न चल सका तो अन्तको लाचार हो पश्चात्ताप करता हुआ घरको आया और वहां उसे फिर दुबारा भी ढूंढ़ा और न पाया जब उसबिन घर सूना दृष्टि आया तब बहुत व्याकुल और बेकली से बेबस हो हाय प्राणप्यारी हाय प्राणप्यारी कहके पुकारने लगा फिर उसके वियोगसे अति व्याकुलहो गृहस्थी छोड़ बैराग ले लंगोटीबांध भभूतमल माला पहन नगर तज तीर्थ यात्रा को निकला नगर २ गांव गांव तीर्थ करता हुआ एक नगरमें दोपहरके समय जा पहुंचा तब भूखसे निपट लाचार हुआ तो ढांक के पत्तोंका दोना बना हाथमें ले एक ब्राह्मणके घरजा उससे कहा कि मुझे भोजन भिक्षा दो, जब प्रीतिके बश आदमी होता है तब उसे धर्मजाति और खाने पीनेका कुछ बिचार नहीं रहता और निरादरहो जहां पाताहै तहांखाताहै, जब ब्राह्मणसे इसने भीखमांगी तब उसने इससे दोनाले घरमेंजा खीरसे भरलादिया यह उस दोनेकोलिये तालाबकिनारे आया वहांएक बड़हरका वृक्षथा उसीजड़पर दोनारख सरोवरमें मुंहहाथधोनेगया और उस वृक्षकी जड़से कालानाग निकल उसदोनेमें मुंहसे गरल डाल चला गया तो वह दोना सम्पूर्ण बिष से भरगया फिर यहभी हाथ मुंह धोकर आया पर उसे यह वृत्तान्त मालूम न था और भूख भी बहुत लगीथी आतेही खीरखाई और वोहीं उसे विषचढ़ा फिर इसने उस ब्राह्मणसे जाकर कहा कि तैने मुझको विष दिया और मैं अब इससे मरूंगा इतना कह घूमकर गिरा और मरगया फिर उस ब्राह्मणने इसे मुआदेख अपनी स्वकीया स्त्री को घर से निकाल दिया और कहा ब्रह्महत्यारी तू यहांसेजा इतनी

इससे उसे पाप नहीं और ब्राह्मण ने भूखा जान के भिक्षा दीथी उसेभी पाप नहीं और उसस्त्रीनेभी अनजाने खीरखाई तिसे उसे भी पाप नहीं निदान इनमें से जिसको कोई पाप लगावै वही पापीहै यह सुन बैताल फिर उसी तरवर पर जा लटका और राजाभी जा उसे उतार बांध कांधेपर रख वहां से चला ॥ १२ ॥

———०○———

तेरहवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐराजा चन्द्रहृदय नाम नगरीहै और उस जगहका रणधीर नाम राजा था उसकी नगरीमें धर्मध्वज नाम एकसेठथा और उसकी बेटीका नाम शोभनी था वह अतिसुन्दरी थी युवा उसकी दिन२ बढ़तीथी और रूपउस-का पलपल अधिकहोता था संयोग बस उसनगरी में रातों को चोरीहोनेलगी जब चोरोंके हाथ से महाजनों ने बहुत दुखपाया तब इकट्ठे हो राजाके निकट जाकर सबने कहा महाराज चोरों ने नगर में बहुत उपाधि की है हम इस शहर में अब रह नहीं सक्ते राजा ने कहा जो हुआ सो हुआ परंतु अब आगे दुःख न पावोगे मैं उनका यत्न करता हूं यह कह राजा ने बहुत से लोग बुलवा चौकी को भेजदिये और चौकी पहरे का ढब उनको बतादिया और हुक्म किया कि जहां चोरोंको पाओ बिनापूछे मारडालो लोग रातको नगरकी रखवाली करनेलगे इसपर भी चोरी होती थी तब फिर संपूर्ण साहूकार इकट्ठे होकर राजा के पास आये और बिनयकी महाराज आपने पहरुये भेजेतो भी चोर कम न हुये और नित्य चोरी होती है राजानेकहा इससमय तुमबिदाहो आजकी रातिसे नगरकी चौकी देने में निकलूंगा यह सुनके राजा से बिदा हो वे अपने २ घर

आई नगरीकी रक्षा करनेलगा इतनेमें आगे जाके देखे तो
एक चोर साम्हने से चलाआता है राजा उसेदेखकर पुकारा
तू कौन है वहबोला कि मैं चोर हूं फिर चोरने कहा तू
कौन है राजाने कहा मैंभी चोरहूं यहसुन वह प्रसन्नहो के
बोला आओ मिलकर चोरी करने चलें यहबात आपस में
ठहरा राजा और चोर बातेंकरते हुये एक महल्ले में पैठे
और कितने एक घरों में चोरीकर माल मता ले नगर के
बाहर निकल एक कुएपर आये और उसमें उतर पाताल
पुरी में जा पहुंचे वह चोर राजाको दरवाजेपर खड़ाकर
धन दौलत अपने मन्दिर में ले गया इतनेमें उसके घरमें से
एक दासी निकली वह राजा को देख के कहनेलगी महा-
राज तुम कहां इसदुष्टके साथ यहां आये अब भला इसीमें
है कि वह आनेनहीं पावै और तुमसे जहांतक भागाजावे
वहांतक भागो नहीं तो वह आतेही तुम्हें मारडालेगा
राजाने कहा मैं तो राहनहीं जानता किधरको जाऊं तो
उसनेसीधी बाट दिखादी और राजा अपनेमन्दिर को आया
दूसरे दिन राजाने सब अपनी सेना साथ ले उसकुए की
राह पातालपुरी में जाकर चोर का सम्पूर्ण घरबार घेर
लिया परंतु वह चोर किसी और राहसे निकल उस नगर
का मालिक जो दैत्य था उसके पासगया और विनयकरके कि
एक राजा मेरे मारने को ऊपर चढ़आया है सो तुम मेरी
इस समय सहायता करो नहीं तो तुम्हारी पुरी को नाश
छोड़ और नगर में जा बसता हूं यह सुन राक्षस ने प्रसन्न
होकर कहा तू मेरेलिये खाने को लाया है मैं तुझसे बहुत
प्रसन्नहुआ यह कहकर जहां राजा लड़ाकेलिये खड़ाथा
उसी था वहां वहदैत्य आ आदमियों को और घोड़ों को
खाने लगा राजा उस दैत्य की सूरत देखकर भागा और

देखने लगा निदान राजा अकेलाभागा आताथा कि चोर
ने आकर ललकारा तू राजपूत होकर लड़ाई से भागता है
यह सुनतेही राजा फिर खड़ाहुआ और दोनों सन्मुख हो
युद्ध करनेलगे निदान राजा उसे पकड़कर मुश्कें बांध नगर
में लेआया फिर उसको नहलवा धुलवा अच्छे २ वस्त्र पहिन-
ना एक ऊंट पर बिठला ढंढोरिया साथ कर सारे नगर में
फिरनेको भेजा और सूली उसके वास्ते खड़ीकरने का हुक्म
दिया इसमें शहरके लोगोंमें से जो उसे देखताथा सो कहता
था कि इसी चोरने सम्पूर्णनगर लूटाहै और अब इसे राजा
सूली दे देगा जब उस धर्मध्वज सेठ की हवेली के नीचे
वह चोरगया तब उससेठकी बेटीने ढंढोराकी आवाज सुन
अपनी दासीसे पूछा यह काहेकी डौंडीबजतीहै वह बोली
जो चोर इस नगर में चोरी करता था उसे राजा पकड़
लाया है अब सूली देगा यह सुनके देखने को वहभीदौड़
आई और चोर का रूप यौवन देखते ही मोहित होगई
और अपने बाप से आकर कहा तुम इस समय राजा के
पास जाओ और उस चोरको छुड़ालाओ सेठ बोला जिस
चोर ने राजा का संपूर्ण नगर लूटा है और जिसके लिये
सारा कटक कटा उसे मेरे कहे से क्योंकर छोड़ेगा फिर
उसने कहा जो तुम्हारे सर्वस्व दियेसे राजा उसे छोड़े तो
तुरन्त तुम उसे छुड़ालाओ और जो वह न आवेगा तो मैं
भी अपनी जान दूंगी यह सुन सेठ ने राजासे जाकर कहा
महाराज पांचलाख रुपये मुझसे लीजिये और इसचोर को
छोड़ दीजिये राजा ने कहा इस चोर ने सारा नगर लूटा
और संपूर्ण कटक इसी के कारण से नष्ट हुआ इसे मैं
किसीतरह से न छोडूंगा जब राजाने उसकी बात न मानी
तो वह लाचार फिर कर अपने घरको आया और अपनी

आई नगरीकी रक्षा करनेलगा इतनेमें आगे जाके देखे तो
एक चोर साम्ने से चलाआता है राजा उसेदेखकर पुकारा
तू कौन है वहबोला कि मैं चोर हूं फिर चोरने कहा तू
कौन है राजाने कहा मैंभी चोरहूं यहसुन वह प्रसन्न होके
बोला आओ मिलकर चोरी करने चलें यहबात आपस में
ठहरा राजा और चोर बातेंकरते हुये एक महल्ले में पैठे
और कितने एक घरों में चोरीकर माल मता ले नगर के
बाहर निकल एक कुएपर आये और उसमें उतर पाताल
पुरी में जा पहुंचे वह चोर राजाको दरवाजेपर खड़ाकर
धन दौलत अपने मन्दिर में ले गया इतनेमें उसके घरमें से
एक दासी निकली वह राजा को देख के कहनेलगी महा-
राज तुम कहां इसदुष्टके साथ यहां आये अब भला इसीमें
है कि वह आनेनहीं पावै और तुमसे जहांतक भागाजावे
वहांतक भागो नहीं तो वह आतेही तुम्हें मारडालैगा
राजाने कहा मैं तो राहनहीं जानता किधरको जाऊं तो
उसचेरीने बाट दिखादी और राजा अपनेमन्दिर को आया
दूसरे दिन राजाने सब अपनी सेना साथ ले उसकुए की
राह पातालपुरी में जाकर चोर का सम्पूर्ण घरबार घेर
लिया परंतु वह चोर किसी और राहसे निकल उस नगर
का मालिक जो देव था उसके पासगया और बिनयकीकि
एक राजा मेरे मारनेको घरपर चढ़आया है सो तुम मेरी
इस समय सहायता करो नहीं तो तुम्हारी पुरी को बास
छोड़ और नगर में जा बसता हूं यह सुन राक्षस ने प्रसन्न
होकर कहा तू मेरेलिये खानेको लाया है मैं तुझसे बहुत
प्रसन्नहुआ यह कहकर जहां राजा कटकलिये हबेलीघेरे
हुये था वहां वहदेव आ आदमियों को और घोड़ों को
खाने लगा राजा उस देव की सूरत देखकर भागा और
जिन लोगों से भागा गया वे तो बचे और बाकियों को

देवने खालियानिदान राजा अकेलाभागा आताथा कि चोर
ने आकर ललकारा तू राजपूत होकर लड़ाई से भागताहै
यह सुनतेही राजा फिर खड़ाहुवा और दोनों सम्मुख हो
युद्ध करनेलगे निदान राजा उसे बसकर मुशकेंबांध नगर
में ले आया फिर उसको नहलवा धुलवा अच्छे २ वस्त्र पहि-
ना एक ऊंट पर बिठला ढंढोरिया साथ कर सारे नगर में
फेरनेको भेजा और सूली उसके वास्ते खड़ीकरने का हुक्म
दिया इसमें शहरके लोगोंमेंसे जो उसेदेखताथा सोकहता
था कि इसी चोरने सम्पूर्णनगर लूटाहै और अब इसे राजा
सूली दे देगा जब उस धर्म ध्वज सेठ की हवेली के नीचे
वह चोरगया तब उससेठकी बेटीने ढंढोराकी आवाज सुन
अपनी दासीसे पूछा यह काहेकी डौंडीबजतीहै वह बोली
जो चोर इस नगर में चोरी करता था उसे राजा पकड़
लाया है अब सूली देगा यह सुनके देखने को वहभीदौड़
आई और चोर का रूप योवन देखते ही मोहित होगई
और अपने बाप से आकर कहा तुम इस समय राजा के
पास जाओ और उस चोरको छुड़ालाओ सेठ बोला जिस
चोर ने राजा का संपूर्ण नगर मूसा है और जिसके लिये
सारा कटक कटा उसे मेरे कहे से क्योंकर छोड़ेगा फिर
उसने कहा जो तुम्हारे सर्वस्व दियेसे राजा उसे छोड़े तो
तुरन्त तुम उसे छुड़ालाओ और जो वह न आवेगा तो मैं
भी अपनी जानदूंगी यह सुन सेठ ने राजासे जाकर कहा
महाराज पांचलाख रुपये मुझसे लीजिये और इसचोर को
छोड़ दीजिये राजा ने कहा इस चोर ने सारा नगर मूसा
और संपूर्ण लशकर इसी के कारण से नष्ट हुआ इसे मैं
किसीतरह से न छोड़ूंगा जब राजाने उसकी बात न मानी
तो वह लाचार फिर कर अपने घरको आया और अपनी
बेटीसे कहा जितना कहनेका धर्मथा मैंनेकहा परंतुराजा

ने न माना इतने अरसे में चोर को नगरी के फेरे दिलवा कर सूली पास ला खड़ा किया और चोरने उस बनिये की बेटी का अहवाल जो सुना तो पहिले खिल खिलाकर हंसा फिर डकरा डकरा रोनेलगा इतनेमें लोगोंने उसेसूली खेंचलिया और बनिये की बेटी उसके मरनेकी खबरपाकर सती होने के लिये उसी जगह पर आई और चिताबनवा उसमें बैठ उस चोर को सूलीसे उतार उसका शिर गोद में रख जलने को बैठी चाहे कि उसमें आग दिलवावे संयोग बस वहां एक देवीका मन्दिर था उसमेंसेतुरन्तदेवीनिकल कर बोली ऐ पुत्री मैं तुष्ट हुई तेरे साहस पर तू बर मांग वह बोली माता जो तू मुझसे तुष्टहुई है तो इस चोर को जी दान दे फिर देवी बोली इसीतरह से होवेगा यहकह कर पाताल से अमृत ला चोर को जिलादिया इतनी कथा कह बैताल ने पूछा ऐ राजा बतलाओ कि चोर पहले किस कारण हंसा और पीछे किस लिये रोया राजा ने कहा जिस वास्ते हंसा वह बाइसमैं जानता हूंऔर जिस वास्ते रोया वह भी मुझै मालूमहै यहसुन बैताल,चोरने जीमें बिचारा कि मरने के समय उसने मुझसे प्रीति की भगवान की गति कुछ जानी नहीं जाती कुलच्छने को दे लच्छी, कुलहीन को दे विद्या, मूर्खको दे सुन्दरस्त्री, पहाड़ पर बरसावे बर्षा,ऐसी ऐसी बातें शोचकर हंसा फिर अपने मनमें विचारा कि यह जो मेरे वास्ते अपना सर्बस्व देतीहै अब इसका मैं क्या उपकार करूंगा यह समझ कर वह रोया यह सुन बैताल फिर उसी पेड़पर जा लटका राजा फिर वहां गया और उसै खोल गठरी बांध कांधे पर रख ले चला ॥ १३ ॥

——००——

चौदहवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा बिक्रम कुसुमावती नाम एक नगरी है वहां का सुबिचारनाम राजा था जिसकी बेटी का नाम चन्द्रप्रभा था जब वह बरयोग्य हुई तब एक दिन बसन्तऋतु में सखियों को साथ ले बागकी सैरको चली वहां जनाने के बन्दोबस्त के पहले एक ब्राह्मण का लड़का बर्ष बीस एक का अति सुन्दर मनस्वीनाम कहीं से फिरताहुआ उस बागमेंआ एक वृक्षके नीचे ठंढी छांह पाकर सोरहाथा राजाके लोगों ने आ उस बाड़ी में बन्दोबस्त कियापर उस ब्राह्मणके बेटेको किसीने न देखा और वह उस वृक्षकेनीचे सोतारहा औरराजकन्या अपनेलोगों समेत बाग में आई और सहेलियोंके साथ सैर वो तमाशा देखतीहुई वहांआई जहां वह ब्राह्मणका बेटासोता थाइसका वहां पहुंचना कि वह भी लोगों के पांव के आहट से उठबैठा दोनों की चार नजरें हुईं और कामदेव के ऐसे बशहुये कि उधर ब्राह्मण का लड़का मूर्छा खा भूमिपर गिरा और इधर बेसुध हो राजाकन्या के पांव कांपने लगे पर वोंहीं उसे सखियों ने हाथोंहाथ थांभलिया निदान चंडोलमें लिटा घरको ले आई और यहां ब्राह्मण का लड़का ऐसा बेसुध पड़ा था कि अपने तन मनकी कुछ खबर न रखता था इस अरसे में दो ब्राह्मण शशी और मूलदेव नाम कामरू देश से विद्या पढ़े हुये वहां आ निकले मूलदेव ने उस ब्राह्मण के लड़के को पड़ा देखकर कहा ऐ शशी ऐसा बेसुध यह क्यों पड़ा है वह बोला नायका ने भौंकी कमान से नयनके तीरमारेहैं इसेयह बेसुध पड़ा है मूलदेवने कहा इसे उठाना चाहिये उसने कहा तुझै उठाने से क्या प्रयोजन है उसने शशी का कहना न माना और उसै पानी छिड़क कर उठाया और पूछा कि तेरी क्या दशाहुई है वह ब्राह्मण बोला दुःखउसे

कहिये जो दुख को दूरकरे और जो सुनके दूर न करसकै उस्से कहनेसे क्या लाभ है वह बोला अच्छा तू अपनी पीर हमारे आगे कह हम दूर करेंगे यह सुनके वह बोला कि अभी राज कन्या सखियों को साथ लिये आई थी सो उसके देखने से मेरी यहगति हुई है जो वह मिलैगी तोमैं अपना जीव रक्खूंगा नहीं तो प्राण तजूंगा तब वह बोला हमारे स्थान पर चल उसके मिलने का हम यत्न कर देंगे नहीं तो तुझै बहुत सा धन देंगे तब मनस्वी बोला कि संसार में भगवान ने बहुत रत्न पैदा किये हैं पर स्त्री रत्न सबसे उत्तम है और उसी के लिये मनुष्य धन की इच्छा करतेहैं जबनारीको त्यागातब धन लेके क्या करेंगे जिनको स्वरूपवान स्त्री न मिले उनसे संसारमें पशु भले हैं धर्मका फल है धन, धन का फल है सुख, और सुखका फल है नारी और जहां नारी नहीं तहां सुख कहां यह सुनके मूलदेव बोला जो तू मांगैगा सो दूंगा तब उसने कहा ऐ ब्राह्मण मुझे वही कन्या दिला दे फिर मूलदेव ने कहा अच्छा तू हमारे साथ चल तुझै वही कन्या दिलादेंगें निदान मूल-देव बहुतसी धीर्य्य देकर उसे अपने घर लेगया और वहां जाकर दो गुटके बनाये एक गुटका उस ब्राह्मण को देकर कहा जब इसे मुंहमें रक्खेगा तब तू बारह वर्ष की कन्या होजायगा और जिस समय तू इसे मुंहसे निकाल लेगातो पुरुष ज्यों का त्यों होजायगा फिर कहा तू अपने मुंह में रख उसने जो अपने मुंहमें रक्खा तौ बारहबरस की कन्या होगया और दूसरे गुटके को जो इसने मुंहमेंरक्खा तोआप अस्सी बरस का डोकरा होगया और उस कन्या को लिये हुये राजा के यहां गया राजा ने ब्राह्मण को देख दण्डवत् कर आसन बैठने को दिया और एक आसन उस लड़की को भी दिया तब ब्राह्मण ने एक श्लोक पढ़ आशीश दी कि

जिसकी शोभा तीनोंलोकमें फैल रहीहै और जिसनेबामन हो बलि को छला और बांनर साथले समुद्र का पुल बांधा और जिनने पर्वत हाथपर रखइन्द्रसे ब्रजके ग्वालबाल बचाये सोई बासुदेव तुम्हारी रक्षा करैं यह सुनकर राजा ने पूछा महाराज आप कहांसे पधारे मूलदेव ब्राह्मण बोला कि गंगा पार से मैं आया हूं और वहीं मेरा घर है मैं अपने बेटेकी बहू लेने गया था पीछे मेरे गांवमें भागड़ पड़ी सो मैं नहीं जानता कि ब्राह्मणी और मेरा पुत्र भागके कहां गये और अब मैं इसको साथ लिये हुये किसतरह ढूढूंगा इससे उचित यह है कि आपके पास इसे छोड़ जाता हूं जब तक कि मैं न आऊं तब तक इसे यत्न से रखना यह बात ब्राह्मण की सुन राजा अपने चित्तमें चिन्ता करनेलगा कि अति सुन्दरी तरुण स्त्री को मैं किस तरह रक्खूं और जो नहींरखता तो यहब्राह्मण शापदेगा तो मेरा राजभंग होगा यह अपने जीमें राजा विचार कर बोला महाराज जो आपने आज्ञा की सो मुझै अंगीकार है फिर राजा ने अपनी पुत्रीको बुलाकर कहा बेटी इस ब्राह्मण की बहू को ले जाके बहुत यत्नसेरक्खो और सोते जागते खातेपीतेचल ते फिरते क्षणभर अपने पाससे इसे जुदा मत कीजियो यह सुन राजकन्या उसब्राह्मणकी बहूका कर धर अपनेमन्दिर में लेगई और रातकेसमय दोनों एक सेजपर सोकर आपस में बातैं करने लगीं बातैं करते २ ब्राह्मण की बहू बोली हे राजकन्या तू किस दुःख के मारे अति दुर्बल हो रही है सो मुझसेकह राजपुत्री बोली एकदिन बसन्त ऋतुमें सखियों को साथले मैं बागकी सैर को गई थी वहां पर एक ब्राह्मण अति सुन्दर कामदेव के समान मैंने देखा और उसकी मेरी चार नजरें हुईं उधरवह बेहोश हुआ इधरमैं बेसुध हुई तब सखियां मेरी अवस्थादेख घरकोलेआईं और उसका

कहिये जो दुख को दूरकरे और जो सुनके दूर न करसकै
उस्से कहनेसे क्या लाभ है वह बोला अच्छा तू अपनी पीर
हमारे आगे कह हम दूर करेंगे यह सुनके वह बोला
कि अभी राज कन्या सखियों को साथ लिये आई थी सो
उसके देखने से मेरी यहगति हुई है जो वह मिलैगी तोमैं
अपना जीव रक्खूंगा नहीं तो प्राण तजूंगा तब वह बोला
हमारे स्थान पर चल उसके मिलने का हम यत्न कर देंगे
नहीं तो तुझै बहुत सा धन देंगे तब मनस्वी बोला कि
संसार में भगवान ने बहुत रत्न पैदा किये हैं पर स्त्री रत्न
सबसे उत्तम है और उसी के लिये मनुष्य धन की इच्छा
करतेहैं जबनारीको त्यागातब धन लेके क्या करेंगे जिनको
स्वरूपवान स्त्री न मिले उनसे संसारमें पशु भले हैं धर्मका
फल है धन, धन का फल है सुख, और सुखका फल है नारी
और जहां नारी नहीं तहां सुख कहां यह सुनके मूलदेव
बोला जो तू मांगैगा सो दूंगा तब उसने कहा ऐ ब्राह्मण
मुझे वही कन्या दिला दे फिर मूलदेव ने कहा अच्छा तू
हमारे साथ चल तुझै वही कन्या दिलादेंगें निदान मूल-
देव बहुतसी धीर्य्य देकर उसे अपने घर लेगया और वहां
जाकर दो गुटके बनाये एक गुटका उस ब्राह्मण को देकर
कहा जब इसे मुंहमें रक्खेगा तब तू बारह वर्ष की कन्या
होजायगा और जिस समय तू इसे मुंहसे निकाल लेगातो
पुरुष ज्यों का त्यों होजायगा फिर कहा तू अपने मुंह में
रख उसने जो अपने मुंहमें रक्खा तौ बारहबरस की कन्या
होगया और दूसरे गुटके को जो इसने मुंहमेंरक्खा तोआप
अस्सी बरस का डोकरा होगया और उस कन्या को लिये
हुये राजा के यहां गया राजा ने ब्राह्मण को देख दण्डवत्
कर आसन बैठने को दिया और एक आसन उस लड़की
को भी दिया तब ब्राह्मण ने एक श्लोक पढ़ आशीश दी कि

जिसकी शोभा तीनोंलोकमें फैल रहीहै और जिननेबामन
हो बलि को छला और बांनर साथले समुद्र का पुल बांधा
और जिनने पर्वत हाथपर रखइन्द्रसे ब्रजके ग्वालबाल बचाये
सोई बासुदेव तुम्हारी रक्षा करैं यह सुनकर राजा ने पूछा
महाराज आप कहांसे पधारे मूलदेव ब्राह्मण बोला कि
गंगा पार से मैं आया हूं और वहीं मेरा घर है मैं अपने
बेटेकी बहू लेने गया था पीछे मेरे गांवमें भागड़ पड़ी सो
मैं नहीं जानता कि ब्राह्मणी और मेरा पुत्र भागके कहां
गये और अब मैं इसको साथ लिये हुये किसतरह ढूंढूंगा
इससे उचित यह है कि आपके पास इसे छोड़ जाता हूं
जब तक कि मैं न आऊं तब तक इसे यत्न से रखना यह
बात ब्राह्मण की सुन राजा अपने चित्तमें चिन्ता करनेलगा
कि अति सुन्दरी तरुण स्त्री को मैं किस तरह रक्खूं और
जो नहींरखता तो यहब्राह्मण शापदेगा तो मेरा राजभंग
होगा यह अपने जीमें राजा विचार कर बोला महाराज
जो आपने आज्ञा की सो मुझै अंगीकार है फिर राजा ने
अपनी पुत्रीको बुलाकर कहा बेटी इस ब्राह्मण की बहू को
ले जाके बहुत यत्नसेरक्खो और सोते जागते खातेपीतेचल
ते फिरते क्षणभर अपने पाससे इसे जुदा मत कीजियो यह
सुन राजकन्या उसब्राह्मणकी बहूका कर धर अपनेमन्दिर
में लेगई और रातकेसमय दोनों एक सेजपर सोकर आपस
में बातैं करने लगीं बातैं करते २ ब्राह्मण की बहू बोली हे
राजकन्या तू किस दुःख के मारे अति दुर्बल हो रही है
सो मुझसेकह राजपुत्री बोली एकदिन बसन्त ऋतुमें सखियों
को साथले मैं बागकी सैर को गई थी वहां पर एक ब्राह्मण
अति सुन्दर कामदेव के समान मैंने देखा और उसकी
मेरी चार नजरें हुईं उधरवह बेहोश हुआ इधरमैं बेसुध
हुई तब सखियां मेरी अवस्थादेख घरकोलेआईं और उसका

माक सोंव में कुछ नहीं जानती मेरी आंखोंमें उसकी सूरत समारहीहै और मुझे खाने पीनेकी भी कुछ रुचि नहीं इसी पीरसे मेरे शरीर की यह दशा हुईहै यह सुनकेवह ब्राह्मण की बहू बोली जो तेरे प्रीतमको तुझसे मिलादूं तो तू मुझे क्या दे राजकन्या बोली कि सदा तेरीदासी होरहूंगी यह सुनके वह गुटका अपने मुंहसे निकाला फिर पुरुष होगया और वह उसे देखकर शरमाई फिर उस ब्राह्मणके लड़केने गंधर्व विवाहकी रीति से उस के साथ अपना व्याह किया और नित्यप्रति इसीतरह रातको पुरुष होता दिनको स्त्री बन रहता निदान छः महीने पीछे राजकन्या के गर्भ रहा एक दिनका वृत्तान्तहै कि राजा सारे कुटुम्बको साथलेकर दीवानके घर व्याह में गया वहां मंत्रीके बेटेने उस स्त्री भेष धारी ब्राह्मण के लड़के को देखा देखतेही मोहित होगया और अपने एक मित्रके आगे कहने लगा जो यह नारी मुझे न मिलेगी तो मैं अपना प्राण तजूंगा इस अरसे में राजा न्योता खा कुनबे समेत अपने मन्दिर को आया पर मंत्रीके बेटेकी उसके विरहके दाहसे निपटकठिन दशा हुई अन्नपानी छोड़दिया यह गतिदेख उसकेमित्रने जाकर मंत्री से कहा और दीवान ने यह अहवाल सुन जाकर राजा से कहामहाराज उसब्राह्मणकी स्त्रीकीप्रीतिमें मेरेबेटेकीबुरी दशाहै खानापीना छोड़दियाहै जो आप कृपाकरकेब्राह्मणी कोमुझेदेवें तो उसकी जानबचे यहसुन राजा क्रोध करके बोला अरे मूर्ख ऐसी अनीति करना राजाओं का धर्मनहीं है एक मनुष्यकी थातीहो और बिना आज्ञा उसकी दूसरे को देना उचित है जो तू मुझसे यह बात कहता है यह सुनके प्रधान निराश हो अपने घरको आया पर उस लड़के का दुःख देखकर उसने भी अन्न जल छोड़ दिया जब कि तीन दिन दीवानको बिना अन्नजलके बीतेतब कारबारियों

ने इकट्ठे होकर राजासे जाकर बिनय की महाराज मंत्री का पुत्र अबतब होरहा है और उसके मरने से दीवान भी न बचेगा और दीवान के मरने से राज काज न चलेगा भलाई यह है कि जो हम बिनय करें सो अंगीकार हो यह सुनकेराजाने आज्ञादी कि कहो तबउनमेंसे एकमनुष्यबोला महाराज उस बूढ़े ब्राह्मण को गये बहुत दिन हुये कि फिरा नहीं भगवान जाने मरगया या जीता है इससे उचित यह है कि ब्राह्मणकी बहूको मंत्रीके बेटेको दे अपनाराज स्थिर रखिये और कदाचित् आवै तो गांवधन दीजिये यदि इसपर राज़ी न होगा तोउसके लड़केका व्याहकरविदाकीजियेगा यह बात सुन राजाने उस ब्राह्मणकी बहूसे बुलाकर कहा तू मेरे मंत्री केपुत्रके घर जा वह बोली कि स्त्रीका धर्म नष्ट होता है अन्य पतिपाके और ब्राह्मणका धर्म जाताहै राजा की सेवा करनेसे और गायढ़ूरकी चराईसे खराब होजाती है और धन जाता है अधर्म करनेसे इतना कह फिर बोली जो महाराज तुम मुझे मंत्री के बेटे को देते हो तो उससे यह बात ठहरा लीजिये कि जो कुछ उससे मैं कहूंसो वह करे तब मैं उसके घर जाऊंगी राजा बोला कहो कि वह क्या करे उसने कहा महाराज मैं ब्राह्मणी वहचत्री इससे उचित यह है कि वह पहले सब तीर्थयात्रा करआवै तब मैं उसकेसाथ घर करूं यहबात सुनके राजाने मंत्रीकेबेटेको बुलाकर कहा पहले तूतीर्थ यात्रा करआतब उस ब्राह्मणी को तुझेदेवैंगे राजाकी बातसुन दीवानके बेटेने कहा महा-राज वह मेरे घर जा बैठ तो मैं तीर्थ को जाऊं यह बात सुन राजा ने उस ब्राह्मणी से कहा जो तुम पहले उसके घरमें जाके रहो तो वह तीर्थयात्रा को जावै यह सुन लाचार हो राजा के कहने से ब्राह्मणी उसके घरमें जा रही तब प्रधान के पुत्रने अपनी स्त्री से कहा तुम दोनों प्रसन्नता पूर्वक

सन्तुष्ट कर रहना और आपस में किसी तरह का झगड़ा
लड़ाई न करना और बिराने घर कभी न जाना इतनी
सीख दे वह तो तीर्थ यात्रा को गया और इधर उसकी
वह सौभाग्य सुन्दरी नाम ब्राह्मण की बहूको अपने साथ
ले एक बिछौने पर रातको लेटी हुई बातें इधर उधर की
करने लगी कितनी एक देर के बाद उस दीवान के पुत्रकी
बहूने वह बात कही ऐ सखी इससमय तो मैं बिरहसे जली
जाती हूं पर मतलब मेरा किस तौर हासिल हो दूसरी
बोली यदि तेरे मतलब को मैं करलाऊं तो तू मुझे क्या
दे उसने कहा सदा तेरे आगे हाथ जोड़े आज्ञाकारी रहूं
तब वह अपने मुंहसे गुटके को निकाल पुरुष बनगया और
नित्य प्रति इसीतरह रातको पुरुष बनता दिनको स्त्री फिर
तो इनदोनोंमें बड़ी प्रीतिहुई निदान इसीतरहसे छः महीने
बीते और मंत्रीका पुत्रआ पहुंचा उधर उसके आनेकी खबर
सुन मंगलाचार करने लगे और इधर ब्राह्मणकी बहूने गु-
टका मुंहमेंसे निकाल पुरुष बन खिड़की की राह महल से
निकल अपनी राहली फिर कितनी एक देर में उसमूलदेव
ब्राह्मण के पास पहुंचा कि जिसने इसे गुटका दियाथा और
उससे सब अपनी आदि अन्त की व्यवस्था कही तब मूल-
देवने सम्पूर्ण वृत्तान्त सुन कर गुटका इससे ले अपने साथी
शशीनाम ब्राह्मणको दिया और दोनोंने गुटके अपने२ मुंहमें
रख लिये एक बूढ़ा बनगया और एक बीस बरस का फिर
ये दोनों राजाके यहां गये राजाने देखतेही दण्डवत् कर
इनके बैठनेको आसनदिये और इन्होंने भी असीसदी राजा
ने इनकी कुशल क्षेम पूछ मूलदेव से कहा कि इतने दिन
तुम्हें कहां लगे ब्राह्मण बोला महाराज इसीपुत्रके ढूंढनेको
गया था सो इसे खोज कर आप के पास ले आया हूं अब
इसकी बहूको देतो मैं बहू बेटे को अपनेघर लेजाऊं तब

राजाने ब्राह्मण के आगे वह वृत्तान्त कह सुनाया ब्राह्मणने
सुनतेही अति कोपकर राजासे कहा यह कौनसा व्यवहार
है जो तुमने मेरे बेटेकी बहू और को दी अच्छा जो तुमने
चाहा सो किया पर अब मेरा शापलो तब राजाबोला कि
देवता तुम क्रोध मतकरौ जो तुम कहो सोमैं करूं ब्राह्मण
बोला अच्छा जो मेरे शापसे डरकर मेरा कहा करते हो
तौ तू अपनी पुत्री मेरे लड़के को ब्याह दे यह सुन राजाने
एक ज्योतिषी को बुलाकर शुभ लग्न मुहूर्त ठहरा अपनी
पुत्री उस ब्राह्मण के लड़के से ब्याहदी फिर यह वहां से
राजकन्या को दान दहेज समेत ले राजासे बिदाहो अपने
गांवमें आया यह खबर सुन वह मनस्वी ब्राह्मण भी वहां
आ उससे झगड़ने लगा कि मेरी स्त्री मुझे दे शशीनाम
ब्राह्मण बोला मैं दश पंचों में ब्याह कर लाया हूं यह स्त्री
मेरी है उसने कहा इसे तो मेरा गर्भ रहा तेरी किस तरह
से यह स्त्री होगी और आपस में विवाद करने लगे मूलदेव
ने इन दोनों को बहुत समझाया परन्तु किसीने उसका
कहना न माना इतनी कथा कह बैताल बोला ऐराजाबीर
बिक्रमादित्य कहो वह भार्या किसकी हुई राजानेकहा वह
स्त्री शशी ब्राह्मणकी हुई बैताल बोला गर्भ उस ब्राह्मणका
सो इसकी किस तरह हुई राजाने कहा कि उस ब्राह्मण
का पेटरखवाया हुआ किसी को मालूम न हुआ और उसने
दश पंचों में बैठके ब्याह किया इसलिये इसीकी स्त्री ठहरी
और वह लड़काभी इसीको क्रियाकर्मका अधिकारी होगा
यह बात सुन बैताल उसी रूखमें जालटका फिर राजागया
और बैतालको बांध कांधे पर रख ले चला ॥ १४ ॥

———oo———

पन्द्रहवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा हिमाचल नाम एक पर्वतहै तहां

गन्धर्वों का नगर है और वहांका राज्य जीमूतकेतु करता था एक समय उसने पुत्रके हेतु कल्प वृक्षकी बहुत सी पूजा की तब कल्पवृक्ष प्रसन्नहो बोला ऐ राजा तेरी सेवा देखके संतुष्ट हुआ जो तू चाहै सो वरमांग राजाने कहाकि एकपुत्र मुझे दो जो मेरा राज और नाम रहै उसने कहा ऐसाही होगा कितने दिनोंके बाद राजा के बेटा हुआ उसे बड़ी खुशी हुई और बहुत सा पुण्य कर ब्राह्मणोंको बुला उसका नाम करणकिया ब्राह्मणोंने उसका नाम जीमूतवाहन धरा जब वह बारह बर्षका हुआ तब उसके पिता ने बड़ी धूमसे उसका व्याह किया जीमूतवाहन शिवकी पूजा करने लगा और शास्त्र सब पढ़के बड़ाही ज्ञानी ध्यानी साहसी शूरवीर धर्मात्मापण्डितहुआ उससमय उसकी बराबर कोई नथा और जितने उसके राजमें लोगथे वे सब अपने२ धर्ममें सावधान थे जब वह जवान हुआ तो उसनेभी कल्प वृक्षकी बहुत सेवा की तब कल्पवृक्षने प्रसन्न हो उससे कहा जिस बातकी तुम्हें इच्छा हो सो मांग मैं तुझे दूं जीमूतवाहन बोला जोतुम मुझसे प्रसन्न हुये हो तौ मेरी सब प्रजा का दरिद्र दूर करो और जितने लोग मेरे राज्यमें हैं सब माल दौलत से बराबर होजावैं तब कल्पवृक्ष ने वरदिया तो सब लोगों के पास इतनाधन होगया कि कोई किसी का हुक्म न मानता था और कोई किसीका काम न करता जबउस राजाके लोग ऐसे होगये तब जो भाई बंधु उस राजाके थे वे आपसमें बिचार करनेलगे कि बाप बेटे तो दोनों धर्म के बसहुये और लोग इनका हुक्म नहीं मानते इससे उत्तम यह है कि इन दोनोंको पकड़के क़ैद कीजिये और राज्य इनका छीन लीजिये निदान राजा तो उन्हीं की तरफ से गाफिलथा और उन्होंने आपसमें मनसूबाबांध फौजले राजा का मन्दिरजा घेरा जबयह खबर राजाको पहुंची तबराजा

ने अपने बेटेसेकहा अब क्याकरें राजकुमारबोला महाराज आपयहां बिराजिये आपके धर्मसे अभीजाके मारे लेताहूं राजाने कहा ऐ पुत्र यह शरीर अनित्य है और धनभीस्थिर नहीं है मनुष्य जन्मातो मृत्यु भी उसके साथही है इससे अब राज छोड़ धर्म का कार्य्य कियाचाहिये ऐसे शरीर के कारण और इस राज्य के वास्ते महापाप करना उचित नहीं क्योंकि राजा युधिष्ठिर भी महाभारत करके पीछे पछताये थे यह सुन उसके बेटेने कहा अच्छा राज अपना गोतियों को दीजिये और आपचलके तपस्या कीजिये सब इबात ठहराय भाई भतीजों को बुलवा राज दे दोनों बाप बेटे मलयाचल पर्वत के ऊपर गये और वहां जा कुटी बना- रहने लगे जीमूतवाहन से और एक ऋषि के बेटे से मि- त्रता हुई एक दिन उस पर्वत के ऊपर राजा का बेटा और ऋषि का पुत्र दोनों सैर के वास्ते गये वहां भवानी का मन्दिर दृष्टि आया उस मन्दिर में एक राज कन्या बीन लिये हुये देवीके आगे गारही थी उस कन्या की ओर जी- मूतवाहन की चार नजरें हुईं और दोनों की लगन लग गई पर राजकन्या मन मार लाज की मारी अपने घर को पधारी और इधर यह भी उस ऋषिके बेटे की शर्मके मारे अपने स्थान पर आया वह रात उन दोनोंको बड़ी बेकली से कटी प्रभातके होतेहीउधरसे राजकन्या देवीके मन्दिर को गई और इधर से राज कुमार नेभी जाते देखाकि राज कन्या जाती है तब इसने उसकी सखीसे पूछा यह किसकी कन्याहै सखीने कहा यह मलयकेतु राजा की पुत्रीहै मल- यावती इसका नामहै और अभी कुमारीहै यह कह फिर सखीने इस राज पुत्रसे पूछा कहो सुन्दर पुरुष तुम कहां से आयेहोतुम्हारा क्यानाम है यह बोला विद्याधरों का राजा जीमूतकेतु नाम है तिसकामैं सुतहूं और जीमूतवाहनमेरी

नाम है राज्यके भंग होने से पिता पुत्र हम दोनों यहां आनके
रहे हैं फिर सखीने यह सुनकर सब बातें राजकन्यासे कही
यह सुन राजकन्या अपने जीमें बहुत दुःख पाय घरको आई और
रातको चिन्ता करके सोरहीपर यह दशा उसकी देख सखी
ने यह वृत्तान्त उसकी माताके आगे प्रकट किया रानीने सुन
कर राजा के आगे वर्णन किया और कहा महाराज पुत्री
आपकी वर योग्य हुई है इसका वर क्यों नहीं ढूंढ़ते यह सुन
के राजाने अपने जीमें चिन्ता कर उसी समय मित्रावसु नाम
अपने पुत्र को बुलाकर कहा बेटा अपनी बहन का वर ढूंढ़
लाओ तब वह बोला कि महाराज गन्धर्वों का राजा जीमू-
तकेतु नाम तिसका पुत्र जीमूतवाहन नाम राज छोड़ पितापुत्र
दोनों सुना है कि यहां आये हैं यह सुन मलयकेतु राजाने
कहा यह पुत्री जीमूतवाहन को दूंगा इतना कह बेटे को
आज्ञादी कि पुत्र जीमूतवाहन राजकुमार को राजाकेपास
से जाकर बुलालाओ मित्रवसु राजाका हुक्म पाकर उसी स-
कानपर गया और वहां जाकर उसके पितासे कहा अपनेपुत्र
को हमारे साथ करदो कि हमारे पिताने कन्यादान देने
को बुलाया है यह सुनके राजा जीमूतकेतु ने अपने बेटे
को साथ कर दिया और वह तब यहां आया मलयकेतु राजाने
उसका गन्धर्व विवाह कर दिया जब इसका ब्याह हो-
चुका तब दुलहिन को और मित्रावसु को अपने स्थान पर
लेकर आया फिर इन तीनों ने राजा को दण्डवत की और
राजा ने भी उन्हें आशीष दी वह दिन तो योंही बीता
दूसरे दिन प्रातःकाल को उठते ही दोनों राजकुमार
मलयागिरि पर्वत पर फिरने को गये वहां जाकर जीमूत-
वाहन क्या देखता है कि एक सफेद ढेर ऊंचासा है तब
इसने अपने साले से पूछा भाई यह धौला२ ढेर कैसा दृष्टि
आता है वह बोला पाताललोक से करोड़ों नागकुमार यहां

आते हैं तिन्हें गरुड़ आनके खाता है यह उन्हीं के हाड़ों
का ढेर है यह सुनके जीमूतवाहनने साले से कहा मित्र
तुम घरजाके भोजन करो क्योंकि मैं इससमय अपनी नित्य
पूजा करता हूं मेरे पूजा करने का अब समय हुआ है यह
सुनके वह तो गया और जीमूतवाहन आगे को ज्यों बढ़ा
त्यों रोने की आवाज आनेलगी उसी आवाज की धुनिपर
चला चला वहां जो पहुंचा तो क्या देखता है कि एक बु-
ढ़िया दुःख से व्याकुल हो रोती है उसके पास जा पूछा हे
माता तू किसकारण रोती है तब वह बोली शंखचूड़ नाम
नाग जो मेरा बेटा है तिसकी आज बारी है उसे गरुड़ आ
खावैगा इस दुःख से मैं रोती हूं इसने कहा हे माता मत
रो तेरे पुत्रके बदले मैं अपना प्राण दूंगा बुढ़िया बोली बेटा
ऐसा मत कीजिये तूही मेरा शंखचूड़ है यह कहती थी कि
शंखचूड़ भी आन पहुंचा और उसने सुनके कहा हे महा-
राज मुझसे दरिद्री बहुत से पैदा होते हैं और मरते हैं पर
आपसे धर्मात्मा दयावन्त संसार में घड़ी घड़ी पैदा नहीं
होते इससे आप मेरे पलटे अपना जी न दीजिये क्योंकि आ-
पके जीते रहनेसे लाखों आदमियोंका उपकार होगा और
मेरा जीना मरना दोनों बराबर हैं तब जीमूतवाहन बोला
कि यह सत पुरुषों का धर्म नहीं है जो मुंह से कहकर न
करैं तू जहां से आया है वहीं को जा यह सुन शंखचूड़ तो
देवीके दर्शन को गया और आकाश से गरुड़ उतरा इतने
में राजकुमार देखता क्या है कि पांव तो उसके चार २
बांस बराबर हैं और ताड़सी लम्बी चोंच है पहाड़के समान
पेट फाटक के मानिन्द आंखें और बड़ा से बार एका एकी
चोंच पसार राजपुत्र पर दौड़ा पहले राजपुत्र ने अपने तईं
बचाया पर दूसरीबार वह चोंचमें रख इसको ले उड़ा और
चक्कर मारनेलगा इतने में एक बाजूबन्द कि उसके नग पर

राजा का नाम खुदा हुआ था वह खुलकर लोहूभरा राज-
कन्या के सन्मुख गिरा वह उसको देखकर मूर्छा खा गिर-
पड़ी जब एकघड़ी के बाद चेती तो उसने सब वृत्तान्त अपने
माता पिताको कहला भेजा वे यह विपत्ति सुनकर आये
और गहना रुधिर भरा देख रोये और तीनों आदमी ढूंढ़-
ने को निकले कि रस्तेमें इन्हें शंखचूड़भी मिला और उनसे
बढ़कर अकेला वहां गया जहां राजकुमार को देखा था
और पुकार २ कहनेलगा ऐ गरुड़ छोड़दे २ यहतेरा भक्ष्य
नहीं शंखचूड़ मेरा नाम है मैं तेरा भक्ष्य हूं यह सुन कर
गरुड़ घबराकर गिरा और अपने जीमें शोचा कि ब्राह्मण
वा क्षत्री मैंने खाया यह क्या किया फिर इस राजपुत्र से
कहनेलगा ऐ पुरुष सच्च कह किसलिये अपना जी देता है
राजकुमार बोला ऐ गरुड़ वृक्ष छाया करते हैं औरों के
ऊपर और आप धूप में बैठे फूलते फलते हैं पराये वास्ते
अच्छे पुरुषों का और वृक्षों का यही धर्म है जो यह देह
औरों के काम न आवै तो इस शरीर से क्या प्रयोजन है
दृष्टान्त प्रसिद्ध है कि ज्यों २ चन्दन को घिसते हैं त्यों २
दूनो २ सुगन्ध देता है और ज्यों २ छील २ काट २ टुकड़े
करते हैं त्यों २ ऊख अधिक २ स्वाद देतीहै ज्यों २ कंचन
को जलाते है त्यों २ अतिसुन्दर होता जाताहै उत्तम लोग
जो हैं सो प्राण जाने से भी अपना स्वभाव नहींछोड़ते उन्हें
किसी ने भला कहा तो क्या और बुरा कहा तो क्या जो
दौलत रही तो क्या जो न रही तो क्या अभीमरे तो क्या
और मुद्दत के बाद मरे तो क्या जो मनुष्य न्यायकी राह
से चलते हैं कुछ हो और राहपर पांव नहींरखते तो क्या
हुआ जो मोटे हुये या दुबले निदान जिसके शरीरसे उप-
कार न हो उसका जीना निष्फल है और बिरानेअर्थ जि-
सका जीव है उन्हों का जीना सुफल है योंतो कुत्ता कौवा

भी अपना तन पालता है जो ब्राह्मण गौ मित्र स्त्रीके वास्ते
अथवा औरों के वास्ते जी देते हैं सो निश्चय सदा बैकुंठ
बास करते हैं गरुड़ बोला जगमें सब अपने प्राण की रक्षा
करते हैं और अपना जी दे दूसरे के जीके बचानेवाले संसार
में बिरलेही होते हैं यह कह गरुड़ बोला बरमांग मैं तेरे
साहस पर संतुष्टहुआ यह सुनके जीमूतबाहन ने कहा है
देव जो तुम मेरे ऊपर प्रसन्नहुये हो तो अब नागों को न
खाओ और जो खाये हैं उन्हें जिला दो यह सुन गरुड़ ने
पताल से अमृत लाकर सांपों के हाड़ों पर छिड़का कि
फिर वेजी उठे और इससे कहा ऐ जीमूतबाहन मेरे प्रसाद
से तेरा गयाहुआ राज फिर तुझे मिलेगा यह वरदे गरुड़
अपने स्थानपर गया और शंखचूड़भी अपने धामगया और
जीमूतबाहनभी वहांसे चला कि राहमें उसका ससुर और
सासु और स्त्रीमिलीं फिर उनसमेत अपने बापके पासआया
जब यह अहवाल सुना तो उसके चचा और चचेरे भाई
और सारे कुटुम्ब के लोग मिलने को आये और पांचों पड़
इन्हें लेजा राजपर बिठाया इतनी कथाकह बैतालने पूछा
ऐ राजा इनमें से सत किसका अधिक हुआ राजा बीर-
विक्रमादित्य बोला शंखचूड़का बैताल ने कहा किस तरह
राजा ने कहा गया हुआ शंखचूड़ फिर जीवदेने को आया
और गरुड़ केखाने से इसे बचाया बैताल बोला कि जिसने
परायेलिये अपनी जानदीउसका सतक्यों न अधिक हुआ
राजाने कहा जीमूतबाहन जातका क्षत्री है उसे जीदेनेका
अभ्यास होरहाहै इससे उसे जानदेना कुछ कठिन न मालूम
दिया यह सुन बैताल फिरउसी पेड़ में जा लटका और राजा
वहां जा उसे बांध कांधे पर रख ले चला ॥ १५ ॥

नाम है राज्यके भंगहोने से पिता पुत्र हमदोनों यहां आनके रहे हैं फिर सखीने यह सुनकर सब बातें राजकन्यासे कही यहसुन राजकन्या अपने जीमेंबहुत दुःखपायघरको आई और रातको चिन्ता करके सोरहीपर यहदशा उसकी देख सखा ने वह वृत्तान्त उसकी माताके आगे प्रकट किया रानीने सुन कर राजा के आगे वर्णन किया और कहा महाराज पुत्री आपकी वर योग्य हुईहै इसका वरक्यों नहींढूढ़ते यहसुन के राजाने अपने जीमें चिन्ता करउसी समय मित्रावसु नाम अपने पुत्र को बुलाकर कहाबेटा अपनीबहन का वर ढूढ़- लाओतब वहबोला कि महाराज गन्धर्वों का राजा जीमू- तकेतु नाम तिसका पुत्र जीमूतवाहन नाम राजछोड़ पितापुत्र दोनों सुना है कि यहां आये हैं यह सुन मलयकेतु राजाने कहा यह पुत्री जीमूतवाहन को दूंगा इतना कह बेटे को आज्ञादी कि पुत्र जीमूतवाहन राजकुमार को राजाकेपास से जाकर बुलालाओ मित्रवसु राजाकाहुक्म पाकर उसी म- कानपर गया और वहां जाकर उसके पितासे कहा अपनेपुत्र को हमारे साथ करदो कि हमारे पिताने कन्यादान देने को बुलाया है यह सुनके राजा जीमूतकेतु ने अपने बेटे को साथकर दिया और वह तबयहां आया मलयकेतुराजाने उसका गन्धर्व विवाह कर दिया जब इसका ब्याह हो- चुका तब दुलहिन को और मित्रावसु को अपने स्थान पर लेकर आया फिर इन तीनों ने राजा को दण्डवत की और राजा ने भी उन्हें आशीश दी वह दिन तो योंही बीता दूसरे दिन प्रातःकाल को उठते ही दोनों राजकुमार मलयागिरि पर्वत पर फिरने को गये वहां जाकर जीमूत- वाहन क्या देखता है कि एक सपेद ढेर ऊंचासा है तब इसने अपने साले से पूछा भाई यह धौला२ ढेरकैसा दृष्टि आता है वह बोला पाताललोकसे करोड़ों नागकुमार यहां

आते हैं तिन्हें गरुड़ आनके खाता है यह उन्हीं के हाड़ों का ढेर है यह सुनके जीमूत वाहनने साले से कहा मित्र तुम घरजाके भोजन करो क्योंकि मैं इससमय अपनी नित्य पूजा करताहूं मेरे पूजा करने का अब समय हुआ है यह सुनके वहतो गया और जीमूतवाहन आगे को ज्यों बढ़ा त्यों रोने की आवाज आनेलगी उसी आवाज की धुनिपर चला चला वहां जो पहुंचा तो क्या देखता है कि एक बु- ढ़िया दुःख से व्याकुल हो रोती है उसके पास जा पूछा हे माता तू किसकारण रोती है तबवह बोली शंखचूड़नाम नाग जो मेरा बेटा है तिसकी आज बारी है उसे गरुड़ आ खावैगा इस दुःख से मैं रोती हूं इसने कहा हे माता मत रो तेरे पुत्रके बदले मैं अपना प्राणदूंगा बुढ़िया बोली बेटा ऐसा मत कीजिये तूही मेरा शंखचूड़ है यह कहती थी कि शंखचूड़ भी आन पहुंचा और उसने सुनके कहा हे महा- राज मुझसे दरिद्री बहुत से पैदाहोते हैं और मरते हैं पर आपसे धर्मात्मा दयावन्त संसार में घड़ी घड़ी पैदा नहीं होते इससे आपमेरे पलटे अपनाजी मदीजिये क्योंकि आ- पके जीते रहनेसे लाखों आदमियोंका उपकारहोगा और मेरा जीना मरना दोनों बराबर है तब जीमूतवाहन बोला कि यह सत पुरुषों का धर्म नहींहै जो मुहसे कहकर न करैं तू जहां से आया है वहीं को जा यहसुन शंखचूड़ तो देवीके दर्शन को गया और आकाश से गरुड़ उतरा इतने में राजकुमार देखता क्या है कि पांव तो उसके चार२ बांस बराबर हैं और ताड़सी लम्बी चोंच है पहाड़के समान पेट फाटक के मानिन्द आंखें और घटा से बाल एका एकी चोंच पसार राजपुत्र पर दौड़ा पहले राजपुत्र ने अपने तईं बचाया पर दूसरीबार वह चोंचमें रख इसको ले उड़ाओर चक्कर मारनेलगा इतने में एक बाजूबन्द कि उसके नग पर

राजा का नाम सुदाकुआ था वह खुलकर लोहूभरा राज-
कन्या के सन्मुख गिरा वह उसको देखकर मूर्छा खा गिर-
पड़ी बर एकघड़ी के बाद चेती तो उसने सब वृत्तान्त अपने
माता पिताको कहला भेजा वे यह विपत्ति सुनकर आये
और गहना रुधिर भरादेख रोवे और तीनों आदमीढूंढ़-
ने को निकले कि रस्तेमें इन्हें शंखचूड़भी मिला और उनसे
बढ़कर अकेला वहां गया जहां राजकुमार को देखा था
और पुकार २ कहनेलगा ऐ गरुड़ छोड़दे २ यहतेरा भक्ष्य
नहीं शंखचूड़ मेरा नाम है मैं तेरा भक्ष्य हूं यह सुन कर
गरुड़ घबराकर गिरा और अपने जीमें शोचा कि ब्राह्मण
या क्षत्री मैंने खाया यह क्या किया फिर इस राजपुत्र से
कहनेलगा ऐ पुरुष सच कह किसलिये अपना जी देता है
राजकुमार बोला ऐ गरुड़ वृक्ष छाया करते हैं औरों के
ऊपर और आप धूप में बैठे फूलते फलते हैं पराये वास्ते
अच्छे पुरुषों का और वृक्षों का यही धर्म है जो यह देह
औरों के काम न आवै तो इस शरीर से क्या प्रयोजन है
दृष्टान्त प्रसिद्ध है कि ज्यों २ चन्दन को घिसते हैं त्यों २
दूनो २ सुगन्ध देता है और ज्यों २ छील २ काट २ टुकड़े
करते हैं त्यों २ ऊख अधिक २ स्वाद देतीहै ज्यों २ कंचन
को जलाते है त्यों २ अतिसुन्दर होता जाताहै उत्तम लोग
जो हैं सो प्राण जाने से भी अपना स्वभाव नहींछोड़ते उन्हें
किसी ने भला कहा तो क्या और बुरा कहा तो क्या जो
दौलत रही तो क्या जो न रही तो क्या अभीमरे तो क्या
और मुद्दत के बाद मरे तो क्या जो मनुष्य न्यायकी राह
से चलते हैं कुछ हो और राहपर पांव नहींरखते तो क्या
हुआ जो मोटे हुये या दुबले निदान जिसके शरीरसे उप-
कार न हो उसका जीना निष्फल है और बिरानेअर्थ जि-
सका जीव है उन्हीं का जीना सुफल है योंतो कुत्ता कौवा

भी अपना तन पालता है जो ब्राह्मण गौ मित्र स्त्रीके वास्ते
अथवा औरों के वास्ते जी देते हैं सो निश्चय सदा बैकुंठ
वास करते हैं गरुड़ बोला जगमें सब अपने प्राण की रक्षा
करते हैं और अपना जी दे दूसरे के जीके बचानेवाले संसार
में बिरलेही होते हैं यह कह गरुड़ बोला बरमांग मैं तेरे
साहस पर संतुष्टहुआ यह सुनके जीमूतबाहन ने कहा है
देव जो तुम मेरे ऊपर प्रसन्नहुये हो तो अब नागों को न
खाओ और जो खाये हैं उन्हें जिला दो यह सुन गरुड़ ने
पताल से अमृत लाकर सांपों के हाड़ों पर छिड़का कि
फिर वेजी उठे और इससे कहा ऐ जीमूतबाहन मेरे प्रसाद
से तेरा गयाहुआ राज फिर तुझे मिलेगा यह वरदे गरुड़
अपने स्थानपर गया और शंखचूड़भी अपने धामगया और
जीमूतबाहनभी वहांसे चला कि राहमें उसका ससुर और
सासु और स्त्रीमिलीं फिर उनसमेत अपने बापके पासआया
जब यह अहवाल सुना तो उसके चचा और चचेरे भाई
और सारे कुटुम्ब के लोग मिलने को आये और पांओं पड़
इन्हें लेजा राजपर बिठाया इतनी कथाकह बैतालने पूछा
ऐ राजा इनमें से सत किसका अधिक हुआ राजा बीर-
विक्रमादित्य बोला शंखचूड़का बैताल ने कहा किस तरह
राजा ने कहा गया हुआ शंखचूड़ फिर जीवदेने को आया
और गरुड़ केखाने से इसे बचाया बैताल बोला कि जिसने
परायेलिये अपनी जानदीउसका सतक्यों न अधिक हुआ
राजाने कहा जीमूतबाहन जातका क्षत्री है उसे जीदेनेका
अभ्यास होरहाहै इससे उसे जानदेना कुछ कठिन न मालूम
दिया यह सुन बैताल फिरउसी पेड़ में जा लटका और राजा
वहां जा उसे बांध कांधे पर रख ले चला ॥ १५ ॥

——oo——

सोलहवीं कहानी॥

बैताल बोला ऐ राजा बीर बिक्रमादित्य चन्द्रशेखर नाम एक नगरहै वहांका रहने वाला रत्नदत्त सेठथा उसके एक बेटी थी उसका नाम उन्मादिनी था जब वह नौ यौवना हुई तब उसने अपने वहांके राजासे जाकर कहा महाराज मेरे घर में एक कन्या है जो आप को उसकी चाह हो तो लीजिये नहीं तो मैं और किसीको दूं यह सुन राजाने दो तीन प्राचीन दासों को बुलाकर कहा इससेठ की पुत्री के लक्षण देखआओ वे राजाकी आज्ञासे सेठके घर आये और उस लड़की का रूप देख सभी मोहित हुये रूप ऐसा था मानो अंधेरे घरका उजालाहै आंखें ऋगकीसी, चोटी नागिन की, भवें कमानसी, नाककीर कीसी, दांतकीबत्तीसी मोतियों कीसी लड़ी, होठ कुंदरू के मानिन्द, गला कपोतकासा कमर चीते कीसी हाथ पांव कोमल कमल से चन्द्रमुखी चम्पाक बदनी हंस गवनी कोकिलबैनी जिसके रूपको देख इन्द्रकी अपसरा भी लजाई इसप्रकार की सुन्दरी सब सुखक्षण भर देख उन्होंने आपस में विचार किया कि ऐसी जो नारी राजा के घरमें जायगी तो राजा इसके आधीन होवैगा और राज पाट कीचिन्ता कुछन करेगा इससे भला यह है कि राजा से कहिये वह कुलक्षणी है आपके योग्य नहीं यह बिचार कर वहां से राजा के पास आकर उन्होंने यह निवेदन किया महाराज उस कन्या को हमने देखा वह आपके योग्य नहीं है यहसुनके राजाने सेठसे कहा मैं ब्याह न करूंगा फिर सेठ ने अपने घर आ क्या काम किया कि बलभद्र जो राजा का सेनापति था उसके साथ अपनी पुत्री का बिवाह कर दिया वह उसके घर में रहने लगी एक दिन का हाल है कि राजा की सवारी उस राहसे निकली और वह भी उस समय श्रृंगार किये अपने कोठे पर खड़ी

थी संयोग बस राजा की और उसकीचार नजरें हुईं राजा अपने मन में कहने लगा यह देवकन्या है या अप्सरा है या नरकन्या है निदान उसका रूप देख मोहित होगया और वहां से निपट बे करार हो अपने मन्दिर को आया तोराजाकामुंहदेखद्वारपालबोला महाराज आपके शरीरमें क्या बिथा है राजा ने कहा आज मैंने आते हुये बाट में एक कोठेपर सुन्दर स्त्री देखीहै मैं नहीं जानता हूं कि वह देव कन्या है या परी है अथवा नर कन्या है कि उसके रूपने एकाएक मेरा मन मोहि लिया इसी बेकल हूं यह सुनके दरवानने बिनय की महाराज उसी सेठ की लड़की है जो आप का सेनापति बल भद्र है वह उसे ब्याह लाया है राजा ने कहा मैंने जिन लोगों को लक्षण देखने भेजा था उन्होंने हमसे छल किया यह कह राजा ने चोपदार को आज्ञा दी कि उन्हें जल्दी ले आवो राजाकी यह आज्ञा पा चोपदार उन्हें बुलालाया जब वे राजा के सन्मुख आये तो राजा ने कहा मैंने जिस लिये तुम्हें भेजा था और जो मेरी इच्छा थी सो तुमने न की और अपने जीसे एक बात झूठी बना कर मुझे उत्तर दिया और आज मैंने अपनी आंखों से उसे देखा वह ऐसी सुन्दर नारी सब गुण पूरी है कि इस समय उससी मिलनी कठिन है यह सुनके उन्होंने कहा महाराजजो आप कहते हैं सो सचहै परहम ने उसे कुलक्षणी जिसवास्ते हुजूरमें बिनय की सो वह सुहा आप सुनिये आपसमें हमने यह बिचारा कि ऐसी सुन्दर स्त्री जो महाराज के घरमें जायगी तो महाराज देखतेही उसके बश होंगे और राजकाज सब छोड़ देंगेतो राजभंग होगा इस भयसे हमने ऐसा बनाकर कहा था यह सुनकर राजाने उन्हें तो कहा तुम सच कहते हो पर उसकीयाद में राजा को निपट बेचैनी थी और सब लोगोंपर राजा की

हेकरारी प्रकट थी इतने में बलभद्र भी आपहुंचा और उसने हाथ जोड़राजा के सामने खड़े होकर विनय की हे पृथ्वीनाथ मैं आपका दासहूं यह आपकी दासी है और उसके हेत आप इतना कष्ट पावें इससे महाराज आप आज्ञा दीजिये कि वह हाजिर हो यह बात सुन राजा बहुत क्रोध करके बोला बिरानी स्त्रीके पास जाना बड़ा अधर्म है यह बातक्या तूनेकहो क्या मैं अधर्मी हूं जो अधर्म करूं बिरानी स्त्री माताके समान है और बिराना धन माटीके बराबरहै सुनो भाई जैसा अपनाजी आदमी समझै वैसाही सबका जी समझे फिर बलभद्र बोला वह मेरी दासी है जब मैंने आपको दी फिर बिरानी स्त्री क्योंकरहुई राजाने कहा जिस कामके करने से संसार में कलंकलगे सो काम मैंन करूंगा फिर सेनापति ने विनय किया महाराज उसे मैं घरसे निकाल और जगह रख वेश्या कर आपके पास लाऊंगा तब राजाने कहा जो तू सती नारी को वेश्या करेगा तो मैं तुझे बड़ादण्ड दूंगा यह कह राजा उसकी यादमें चिन्ता करके दशदिन में मरगया फिर बलभद्र सेनापति ने अपने गुरूसे जाकर पूछा मेरास्वामी उन्मादिनी के कारण मुआ अब मुझे क्या करना उचित है सो आज्ञा कीजिये उसने कहा सेवकका धर्म यह है कि स्वामी के पीछे अपना जी दे यह सुनके बखशी वहां गया जहां राजा के तईं जलाने को ले गये थे जितनी बेर में राजा की चिता तैयार हुई उसने भी स्नान पूजा से छुट्टी की और जब चितामें आग दी तब वह भी चिता के पास गया और सूर्य्य के साम्ने हाथ जोड़ कर कहनेलगा ऐ सूर्य देवता मैं मन बच कर्म करके यही कामना मांगता हूं कि जन्म २ इसी स्वामी को पाऊं और तेरा गुण गाऊं इतना कह दण्डवत कर आग में कूदपड़ा यह खबर सुन उन्मादिनी अपने गुरूके पासगई और उससे

सब हाल कहके पूछा महाराज स्त्री का धर्म क्या है उसने कहा माता पिताने जिसको अपनी कन्या दी उसीकी सेवा करने से वह कुलवंती कहलाती है और धर्म शास्त्र में ऐसा लिखा है कि जो नारी अपने स्वामी के जीते तप ब्रतकरती है वह अपने स्वामीकी अवस्था कम करती है और अंतकाल में नरकमें पड़ती है और उत्तम यह है कि कैसाही स्वामी हीन हो उसी की सेवा करने से इसकी मुक्ति होती है और जो नारी स्मशान में सती होने की कामना कर जितने पांव ज़मीन पर रखती है उतने अश्वमेध यज्ञ करने का फल होताहै इसमें कुछ सन्देह नहीं और सती होनेके समान नारी का कोई धर्म नहीं यह सुन वह दण्डवत कर अपने घरको आई और स्नानध्यान कर बहुतसा दान ब्राह्मणों को दे चिता पास जा एक परिक्रमा कर बोली कि हेनाथ मैं जन्म २ दासीतेरी हूं इतना कह यह भी आग में जा बैठी और जल गई इतनी कथा कह बैताल बोला ऐ राजा इन तीनोंमें किसका सत अधिक हुआ राजा बीर बिक्रमादित्य ने कहा उसराजा का बैताल ने कहा किसतरह राजाबोला सेनापति की दी हुई स्त्री को छोड़ा और उसीके वास्ते जान दी पर धर्म रक्खा स्वामी के लिये सेवक को जी देना उचित है और पतिके लिये स्त्री को सतीहोना उचितहै इस कारण राजा का सत अधिक हुआ बैताल इतना सुन उसी तरवर में जा लटका राजा भी पीछे २ जा फिर उसे बांध कांधेपर रख ले चला ॥ १६ ॥

———००———

सत्रहवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा उज्जैन नगरी का महासेन नाम राजाथा और वहांका बासी देवशर्मा ब्राह्मणथा जिसकेबेटे का नाम गुणाकर था वह ज्वारी हुआ यहां तक कि जो

कुछ उस ब्राह्मण का धनथा सो जुएमें हार दिया तब सारे
कुनबे के लोगों ने गुणाकर को घरसे निकाल दिया और
इसेकुछ बन न आया लाचार हो वहांसे चला तो कितने
एक दिनों में एक शहर में आया वहां देखता क्या है कि
एक योगी धूनी लगाये हुए बैठा है उसे दंडवत कर यहभी
वहां बैठगया योगीने इससे पूछा तू कुछ खायगा इसनेकहा
महाराज दोगेतो क्यों न खाऊंगा योगीने एक आदमीकी
खोपड़ी में खाना भरके इसे लादिया इसने देखकर कहाइस
कपाल का अन्न मैं न खाऊंगा जब इन्ने भोजन न किया
तब योगीने ऐसा मंत्र पढ़ा कि एक यक्षिणी हाथ जोड़ आनके
प्रकट हुई और बोली महाराज जो आज्ञा हो सो करूं
योगी ने कहा इस ब्राह्मण को इच्छा भोजन दे इतना सुन
के एक अच्छा सा मन्दिर बना उसमें सब सुख के सामान
रखके इसे यहां से अपने साथ ले गई और एक चौकी पर
बैठा भांति भांति के व्यंजन और पकवान थाल भर २ उसके
सामने रक्खे उसने मन मान्ता जो भाया सोखाया और इस-
के बाद पानदान इसके सम्मुख रखदिया और केसर चन्दन
गुलाब में घिसकर उसके बदनमें लगाया फिर अच्छे २ वस्त्र
सुगन्धों से बसाकर पहना फूलों की माला गले में डाल वहां
से पलंग पर जा बिठाया इतने में सांझ हुई और यह भी
अपनी तैयारी कर सेज पर जा बैठी और उस ब्राह्मण ने
सारी रैन सुख चैन से काटी जबभोर हुआ तो वह यक्षिणी
अपने स्थान पर गई तब इसने योगी से आनकर कहा कि
स्वामी वह तो चली गई अब मैं क्या करूं योगी बोला वह
विद्याके बल से आईथी जिसे विद्या आती है उसके पास
रहती है इसने कहा महाराज वह विद्या मुझे दो तो मैं
साधूं तब योगी ने एक मंत्र उसको दिया और कहा कि इस
मंत्र को चालीस दिन आधीरात के समय जल में बैठ एक

चित्त होके साध इसी तरह से वह साधने को जाया करता
और अनेक २ तरह के भय दृष्टि आते पर यह किसी से न
डरता जब कि वह मुहत होचुकी तो इसने योगीसे आकर
कहा कि महाराज जितने दिन आपने कहे थे मैं साध आया
उसने कहा इतने दिन अब आग में बैठकर साध इसनेकहा
महाराज एकबार अपने कुटुम्ब से मिल आऊं फिर आके
साधूंगा यह योगी से कह बिदा हो अपने घरको गया
और कुनबे कें लोगों ने इसे जो देखा तो गले लगा लगा
रोने लगे और इसके बापने कहा ऐ गुणाकर इतने दिनों
तू कहां था और किसवास्ते घरको बिसारा ऐ पुत्र ऐसे
कहा है किजो पतिब्रता स्त्रीको छोड़के जुदारहता है और
युवा स्त्री को पीठ देता है अथवा जो जिसे चाहता है वह
उसे नहीं चाहता तो चांडालके समान होता है और ऐसे
कहाहै कि गृहस्तीधर्मकेबराबरकोईधर्मनहीं और घरवाली
स्त्री की बराबर कोई संसारमें सुख देनेवाली स्त्री नहीं और
जो माता पिता की निन्दा करता है सो अधम नर है और
उसकी गति मुक्ति कभी नहीं होती ऐसा शास्त्रमें कहाहै
तब गुणाकर बोला कि यह शरीर रक्त और मांसका बना
हुआ है सो कीड़ों की खान है और स्वभाव इसका यह है
कि एक दिन इसकी खबर न लीजे तो दुर्गन्ध आती है जो
ऐसे शरीर से प्रीति करते हैं सो मूर्ख हैं और जो इससे
हित नहीं करते वे पण्डित हैं और इस शरीर का यही
धर्म है कि बारबार जन्म लेता है और मरता है ऐसे शरीर
काक्या भरोसा कीजिये इसेबहुतेरापवित्र कीजियेपर यह
पवित्र नहीं होता जैसे मलका भरा घड़ा ऊपर के धोने से
पाक नहीं होता और कोयलेका कोई बहुतेरा धोवे पर वह
धौला नहीं होता और जिस शरीर में मल का सोत सदा
बहा करे वह किस तरह से शुद्ध होसक्ता है इतना कह

फिर बोला कि किसकी माता और बाप किसकी जोरू
किसका भाई इस संसारकी यही रीति है कि कितनेआते
हैं और कितने जाते हैं जो यज्ञ और होमके करने वाले
हैं सो अग्नि को ईश्वर जानते हैं और जो बुद्धिहीन हैं सो
प्रतिमा कर भगवान को मानतेहैं और योगीलोग अपनेघट
में ही हरिको जानते हैं ऐसे गृहस्थी धर्मको मैं न करूंगा
और योगाभ्यास करूंगा इतना कह उसने घरसे बिदाले
योगीके पास अग्निमें बैठ मंत्र साधा पर यक्षिणी न आई तब
योगीके पास गया और योगीने उससे कहा विद्या तुझे न
आई फिर उसने कहा महाराज हां न आई इतनी कथा
कह बैताल बोला कि ऐराजा कहो किसकारण उसे विद्या
न आई राजा बोला वह साधक दुचित्ता हुआ इसलिये न
आईऔर ऐसे कहा है कि एक चित्त होनेसे मंत्रसिद्धहोता
है और दुचित्ताहोने से नहीं होता और ऐसे भी कहा है
जो दानके हीन हैं उनकी कीर्त्ति नहीं होती और जो सतसे
हीन हैं उन्हें लाज नहीं जो न्याय से हीन हैं तिन्हें लक्ष्मी
नहीं मिलती और जो ध्यानसे हीन हैं तिन्हें भगवान नहीं
मिलता यह सुन बैताल ने कहा जो साधक मंत्र सिद्ध करने
के लिये आग में बैठा वह किसतरह दुचित्ता हुआ राजाने
कहा मंत्र साधने के समय जब वह अपने कुटुम्ब से मिलने
गया उस समय योगी ने क्रोध कर अपने मनमें कहा कि
ऐसे दुचित्त साधक को मैंने विद्या क्यों सिखाई इसलिये
उसे विद्या न आई और ऐसे कहा है कि मनुष्य कितनाही
पराक्रम करे पर कर्म उसके साथ रहता है और कितनाही
काम अपनी बुद्धि से करे पर कर्म का लिखाही मिलता है
यह सुनकर बैताल फिर उसीवृक्षपर जा लटका और राजा
भी उसके पीछे जा उसे बांधकांधे पर रख लेचला ॥ १७ ॥

———oo———

अठारहवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा कुबलपुर नाम एकनगर है वहां
के राजा का नाम सुदच्चो था और उस नगरमें धनाक्ष नाम
एक सेठ भी रहता था उसकी पुत्री का नाम धनवती था
छोटी उमर में उसका व्याह एक गौरीदत्त नाम बनिये से
करदिया कितने दिनों के पीछे एक लड़की उसके हुई नाम
उसका मोहनी रक्खा जब वह कई वर्ष की हुई तब बाप
उसका मर गया और उस बनिये के भाई बन्दों ने उसका
सर्वस्व छीन लिया वह लाचार हो अपनी बेटी का हाथ
पकड़ अंधेरी रात के समय उस घरसे निकल अपने माता
पिता के घर चली थोड़ी दूर जाकर राह भूल एक मरघट
में जा निकली वहां एक चोर शूली पर टंगा हुआ था
अचानक इसका पांव उसके पांव में लगा वह बोला इस
समय मुझे किन्ने दुख दिया तब यह बोली मैंने जानकर
तुझे दुःख नहीं दिया मेरा अपराध क्षमा कर उसने
कहा दुख और सुख कोई किसी को नहीं देता जैसा
विधाता उसके कर्म्म में लिख देता है वैसाही होता
है और जो मनुष्य कहते हैं कि यह काम हमने किया
सो बुद्धिहीन हैं क्योंकि मनुष्य कर्म के तागे में बंधे हुये हैं
वह जहां २ चाहता है तहां २ खैंच ले जाता है विधाता
की बात कुछ जानी नहीं जाती क्योंकि मनुष्य अपनेमनमें
कुछ बिचारते हैं और वह कुछ और कर देता है तब धन-
वती बोली ऐ पुरुष तू कौन है उसने कहा मैं चोर हूं
तीसरा दिन शूली पर मुझको हुआ है और जान नहीं
निकलती वह बोली किस कारण उसने कहा बिना व्याह
हूं यदि तू अपनी कन्या मुझे व्याह दे तो करोड़ अशरफी
तुझे दूं विदित है कि पाप का मूल लोभ और व्याधि का
मूल रस और दुख का मूल नेह है जो इन तीनोंकोछोड़े सो

सुख से रहे पर ये हर एक से छूट नहीं सक्ते अन्तकाल लालच के मारे धनवती ने कन्या देने की इच्छा की और पूछा कि वह चाहती हूं कि तेरे पुत्र हो पर किसतरहसे होगा उसने कहा कि यह जिस समय में जवान होगी उस समय एक सुन्दर ब्राह्मण को बुलाकर पांचसौ मोहर दे उसके पास रखियो इस तरह पर इस के बेटा होगायह सुनके धनवती ने लड़की को सूली के गिर्द चार फेरे कर ब्याहकर दिया तब चोरने उससे कहा कि पूर्व दिशा इन्दारे कुयें के पास एक बड़का वृक्ष है उसके नीचे वे अशरफियां गड़ी हुई हैं तू जाके ले ले यह कहके उसका प्राण निकल गया यह उधर को चली और वहां पहुंच कर उसमें से थोड़ी अशरफियां ले अपने माता पिता के घर आई उनसे यह वृत्तान्त कह उनको अपने साथ ले स्वामी के देश में लाई फिर एक बड़ी सी हवेलीबना उसमें रहने लगी और वह लड़की दिन २ बढ़ने लगी जब यौवनवती हुई तब एक दिन सखी को साथ ले कोठे पर खड़ी बाट निहार रही थी कि इतनेमें एक जवान ब्राह्मण उस राह में आ निकला और यह उसे देख काम के वश होकर सखी से बोली कि ऐ आली इस पुरुष को मेरी माता के पास ले जा यह सुन वह ब्राह्मण को उसकी माता के पास लेगई वह उसे देखकर बोली मेरी बेटी जवान है जो तू इसके पास रहेगा तौ मैं पुत्र के निमित्त पांचसौ अशरफी तुझे दूंगी यह सुन के उसने कहा मैं रहूंगा ये बातें करते थे कि इतने मेंसांझ हुई तो इच्छा भोजन दिया उसने ब्यालूकिया दृष्टान्त प्रसिद्ध है कि भोग आठ प्रकार का है एक सुगन्ध दूसरा बनिता तीसरेवस्त्र चौथेगीत पांचवेंपान छठे भोजन सातवें शय्या आठवें आभूषण ये सब वहां मौजूद थे निदान जब पहर रात आई तब उसने रंग महल में जा उसके साथ

सारी रैन आनन्द से काटी जब भोर हुआ तब वह अपने घरगया और यह उठके अपनी सखियोंके पासआई तबउसमें से एकनेपूछा कि कहो रातको प्रीतमके साथ क्या२ आनन्द किये उसने कहा जिस समय कि मैं उसकेपास जा बैठीमेरे जी में एक धड़का मालूम हुआ थाजब कि उसने मुसकरा के मेरा हाथ पकड़ लिया मैं उसके वश हो गई और मुझे कुछ खबर न रही कि क्या हुआ और ऐसे कहा है कि एक नामी दूसरे शूरमा तीसरे चतुर चौथे सरदार पांचवे सखी छठे गुणवान सातवेंस्त्री रचकहो ऐसे पुरुषको नारी इस जन्म में तो क्या उस जन्म में भी नहीं भूलती लाभ यह हुवा कि उसी रात इसे गर्भ रहा जब कि दिन पूरे हुये एक पुत्र पैदा हुआ छठी की रातको उसकी माताने सपने में देखा कि एक योगी जिसके शिरपर जटा माथे पर चांद उज्ज्वल भभूत मले श्वेत जनेऊ पहने श्वेत कमलके आसन पर बैठा सपेद सांपोंकी माला पहिने मुण्डमाल गले मेंडाले एक हाथ में खप्पर दूसरे में त्रिशूल लिये हुये महा भयावनी सूरत बनाये उसकेआगे आ कहने लगाकि कल आधीरात के समय एक पिटारे में हजार मोहर का तोड़ा और इस लड़के को बन्द कर राजाके द्वार पर रख आ यह देखतेही उसकी आंख खुल गईऔरसबेरा हुये अपनीमाके आगे इसने सब वृत्तान्त कहा यह सुनके दूसरे दिनउसकी माता उसी तरह पिटारे में उस बालक को बन्द कर राजा के द्वारपर रख आई इधर राजा ने रात को स्वप्न देखा कि दश भुजा पांच शिर हर एक शिरमें तीन तीन आंखेंऔर हर एक शिर पर एक एक चांद दांत बड़े बड़े त्रिशूलहाथ में लिये अति डरावनी सूरत इसके साम्ने आनके बोला कि ऐ राजा तेरे द्वारपर एक पिटारा रक्खाहै उसमें जोलड़का है उसे तू लेआ वही तेरा राज रक्खेगा यहसुनतेही राजा

की आंखखुल गई तब रानीसे सब अहवाल कहा फिर वहांसे उठ दरवाजेपर आ देखा कि पिटारा धराहै ज्योंहीपिटारे को खोलकर देखातो उसमें एक बालक और हजारमोहर का तोड़ा धरा है उस बालकको आप उठालिया औरहार पाल से कहा कि इस तोड़े कोउठा ला फिर महल में जा बालकको रानी की गोदमें दिया इतने में प्रभात हुआ तो राजाने बाहर आ पण्डितोंसे और ज्योतिषियों से बुला के पूछा कि कहो इस बालकमें राज्य लक्षण क्या२ हैं तब उन पण्डितों में से एक सामुद्रिक जाने वाला ब्राह्मण बोला महाराज इस बालक में तीन लक्षण तो प्रत्यक्ष दीखते हैं एक तो बड़ी छाती दूसरेऊंचा ललाट तीसरे बड़ाचिहरा सिवा इसके महाराज बत्तीस लक्षण पुरुष के जो कहे हैं सो सब इसमेंहैं इसे निःसंदेह रहिये यहराज करैगा यह सुनराजाने प्रसन्न हो मोतियोंका हार अपने गलेसेउतार उस ब्राह्मणको दिया और सब ब्राह्मणोंको बहुतसा दानदे हुक्म किया इस लड़केका नामरक्खो तब पण्डितों ने कहा महाराज आप गांठजोड़ कर बैठिये और महारानी गोदमें बालकले बैठें औरसबमांगलिकलोगोंकोबुलाकरमंगलाचार करवाओ तब हम शास्त्र की रीति से नाम करण करैंयह सुन राजानेदीवानकोबुला आज्ञादी कि जोये कहैं सोकरो दीवानने बालकके होनेकी उसी समयनगर में डौंड़ी खुशी की फिरवादी यह सुनके सब मंगलामुखी आये और घर२ से बधाई आनेलगीं राजाके मंदिरमें आनंदके बाजन बाजने लगे और मंगलाचार होने लगे फिर राजा रानी गोद मेंपुत्र को ले चौक पर आ बैठे और ब्राह्मण बेद पढ़ने लगे उन ब्राह्मणों मेंसे एक ज्योतिषीने शुभ घड़ी लग्न मुहूर्त विचार उस बालक का नाम हरदत्त रक्खाफिर वहदिनदिन बढ़ने लगा निदान वह नव वर्ष की उमरमें छओं शास्त्र चौदहों

विद्यापढ़कर पण्डित हुआ इसमें भगवान का चाहा यों हुआ कि उस के माता पितामरगये वह राजगद्दी पर बैठा और धर्म राज करनेलगा कई एक वर्षके पीछे एकदिनवह राजा अपने मनमें चिन्ता करनेलगा कि मैंने मा बाप के यहां जन्मलेके उनके निमित्त क्या किया कहावत है कि जो दयावन्त होते हैं वे सबपर दया करते हैं वेईज्ञानीहैं और उन्हीं को बैकुंठहोता है और जिनका मनशुद्ध नहीं तिनका दान पूजा तप तीर्थ करना शास्त्र सुन्ना सब वृथा है और जो श्रद्धा हीन डिम्भ समेत श्राद्धकरते हैं तिनका निष्फल होता है और पितृ उनके निराश जाते हैं यह बात राजाने शोच समझ कर बिचारा कि अब पितृ कर्म किया चाहिये फिर राजा हरदत्त गया में गया और अपने पितरों के नाम ले फलगू नदी के किनारे पिण्ड देने लगा तो उस नदी में से तीनों के हाथ निकले यह देख अपने जीमें घबराया कि मैं किसके हाथ में पिण्डदूं और किसके हाथ में न दूं इतनी कथा कह बैताल बोला कि ऐ राजा विक्रम उन तीनों में से किसे पिण्ड देना उचित था तब राजा ने कहा चोर को फिर बैताल बोला किस कारण तब राजाने कहा उसमें से ब्राह्मण का बीज तो मोल लिया गया और राजाने हजार अशरफी लेके पाला इस वास्ते उन दोनों को पिण्ड का अधिकार न हुआ इतनी बात सुन फिर बैताल उसी तरवर पर जा लटका और राजा उसे वहां से ले चला ॥ १८ ॥

उन्नीसवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा चित्रकूट नाम एक नगर है वहां का रूपदत्त नाम राजा एक दिन अकेलासवार हो शिकार को गया सो भूला हुआ एक महा बनमें जा निकला वहां जाके देखता क्या है कि एक बड़ासा तालाव है उसमेंकमल

फूल रहे हैं और भांति भांति के पक्षी कलोल कर रहे हैं तालाब के चारों ओर वृक्षों की घनी घनी छाया में ठंढीर हवा सुगन्धोंके साथ आरही है यहभी धूप गरमीकामारा हुआ घोड़े को एक वृक्षमें बांध जीनपोश बिछाकर बैठगया घड़ी एक बीतीथी कि एक ऋषिकन्या अति सुन्दरी योवन-वती तहां पुष्पलेने को आई उसे फूल तोड़ते हुये देख राजा अति काम के वशहुआ जब वह फूल तोड़के अपने स्थानको चली तब राजा बोला कि यह तुम्हारा कैसाआचार हैकि हम तुम्हारे आश्रममें अतिथि आये और तुम हमारी सेवा न करो यह सुनके वह फिर खड़ीहुई तब राजाने कहा कि ऐसे कहते हैं कि उत्तम बरण के घर जो नीच बरण भी अतिथि आवे तो वह भी पूजनीय है और चोर हो या चांडाल शत्रुहो या पितृघातक होपर जोवहभी अपनेघर आवै तो उसकी भी पूजा करनी उचित है क्योंकि अतिथि सब का गुरू है इस तरह से जब राजाने कहा तब वह खड़ी हुई फिर तो दोनों आंखें लड़ानेलगे इसमें वह मुनि भी आ पहुंचा राजा ने उस तपस्वी को देख नमस्कार किया और उसने आशीर्वाददिया कि चिरंजीवरहो इतना कह राजा से पूछा कि यहां किस कारण आयेहो राजाने कहा महाराज शिकार खेलनेआयाहूं तपस्वी बोला किसलिये तू महा पाप करता है ऐसा कहा है कि एक जना पाप करता है और अनेक जने उसकेपाप का फल भुगतते हैं राजानेकहा कि महाराज मुझपर कृपा करके धर्म अधर्म का बिचार कहो तब वह मुनि बोला सुनिये महाराज जो जीव तृण जल खा बनबास करते हैं तिनके मारने से बड़ा अधर्म होता है और पशु पक्षी मनुष्य के प्रतिपाल करने का बड़ाधर्म है और ऐसा कहा है कि जो भय मानकर शरण आये को निर्भयकर देते हैं सो महादान का फलपाते हैं और ऐसा

कहा है कि क्षमा बराबर तपनहीं और संतोष समान सुख मित्रता तुल्य धननहीं और दयासम धर्म और जो नर अपने धर्म में सावधान हैं और धन गुण विद्या यश प्रभुता पाय अभिमान नहीं करते और जो अपनी स्त्री से संतुष्ट हैं और सत्यवादी हैं सो अन्तकाल मुक्तगतिपाते हैं और जो जटा-धारी वस्त्रहीन निरायुद्ध को मारते हैं वे लोग अन्त समय नरक भोग करते हैं और जो राजा प्रजा के दुख दाइयों को नहीं दण्ड देता वह भी नरक भुगतताहै और जोराज-पत्नीया मित्रकी स्त्रीया कन्याया आठनौ महीनेकीगर्भिणी स्त्रीसे भोग करतेहैं सो महा नरकमें पड़तेहैं ऐसा धर्मशास्त्र मेंकहा है यह सुन राजाने कहा आजतक अनजान से जो पाप किया सो किया फिर भगवान ने चाहातोमैंनकरूंगा राजाके इस कहने से मुनिने प्रसन्न होके कहाकि जो तूवर मांगे सो दूं मैं तुझसे बहुत संतुष्ट हुआ तब राजा ने कहा महाराज जो तुम मुझ पर तुष्ट हुये तो अपनी कन्या मुझे दो यह सुनके मुनि ने अपनी पुत्री राजाको गन्धर्ब बिवाह की रीति से ब्याह दी और आप अपने स्थान को गया फिर राजऋषि कन्या ले अपने नगर की तरफकोचला किरास्ते में अनुमान आधी दूरके सूर्य अस्तहुआ और चन्द्रमा उदय हुआ तब राजा एकवृक्ष घनासा देखउसके नीचे उतरघोड़ा उसकी जड़से बांध आप जीनपोश बिछा दोनों सो रहे फिर दो पहर रात के समय एक ब्रह्म राक्षस ने आ राजा को जगा कर कहा कि हे राजा मैं तेरी स्त्री को खाऊंगा राजा ने कहा ऐसा मत कर जो तू मांगेगा सोमैं दूंगा तब राक्षस ने कहा कि ऐ राजा जो सात वर्ष के ब्राह्मण के लड़के का शिर काट कर अपने हाथ से मुझे देतो मैं इसे न खाऊं राजाने कहा ऐसेहीमैं करूंगा पर आज केसातवें दिन तू मेरे नगर में आइयो मैं तुझे दूंगा इसी तरह से

राजा को बचन बन्द कर राक्षस अपने स्थान को गया और भोर हुये राजा भी अपने महल में पहुंचा मंत्री ने सुनके बहुत सी खुशी की और आके भेंट दी और राजा ने मंत्रीसे वह वृत्तान्त कहकर पूछा कि सातवें दिन राक्षस आवेगा कहो उसका यत्न क्या करें मंत्री ने कहा महाराज आप किसी बातकी चिन्ता न कीजिये भगवान सब भला करेगा इतना कह मंत्रीसवामन कंचन का एकपुतला बनवा उसमें जवाहिर जड़वा एक छकड़ेपर रखवा चौराहे में खड़ा करवा कर उसके रखवालों से कहा कि जोकोई इसके देखनेको आवेयही उससे कहो कि जो ब्राह्मणअपने सात वर्ष के लड़केका राजाको शिर काटकर दे सो इसे ले यह कह कर चला आया फिर लोग जो उसके देखने को आतेथे उससे चौकीदार यही कहते थेदो दिन तो योंही बीते पर तीसरे दिन उसी नगर का एक दुर्बलसा ब्राह्मण कि जिसके तीन बेटेथे वह यह बात सुनघरमें आ ब्राह्मणी से कहने लगा कि एक पुत्र अपना राजा को बलि के वास्ते दें तो सवामन सोने का पुतला जड़ाऊ घरमें आवे यहसुन ब्राह्मणी बोली कि छोटे लड़केको मैंन दूंगी ब्राह्मणने कहा बड़े को मैं न दूंगा यह बात सुनमझिलेने कहा कि पिता मेरेतई दीजिये उसनेकहा अच्छा फिर ब्राह्मण बोला कि संसार में धनहीं मूल है और धनहीन को सुख कहांऔर जो दरिद्री हुआ उसका संसार में आना वृथा है इतना कह मझिले लड़के कोले जा चौकीदारों को दे उसपुतले को अपने घर ले आया और इधर उस लड़के को लोगमंत्री के पास ले आये फिर जब सात दिन बीत गये वह राक्षस भी आया राजा ने चन्दन अक्षत फूल धूप दीप नैवेद्य फल पान बस्त्रले उसकी पूजा की और उसलड़के को बुलाखड्ग हाथ में ले बलि देने को खड़ा हुआ इसमें पहिले तो हंसा

पीछे रोया इतने में राजाने खड्ग मारा किशिर जुदाहोगया सच है जो ज्ञानी कहगये हैं स्त्री कि संसारमें दुःखकी खानि है और बिपत्ति का घर साहस की गिराने वाली हैं और मोह की करने वाली धर्म को हरने वाली ऐसी विषकी जड़ है उसे उत्तम किन्ने कहा है और ऐसा कहा है कि आपदा के लिये धन रखिये और धन देके स्त्री की रक्षा कीजिये और धन स्त्री को देके अपने जी को बचाइये इतनी कथा कह बैताल बोला हे राजा मरने के समय आदमी रोता है तू इसकी व्यवस्था बता कि वह हंसा क्यों राजा ने कहा यह विचार के वह हंसा कि बालकपनमें माता रक्षा करती है और बड़ेहुये से पिता पालता है और समय असमय में प्रजा की राजा सहाय करता है संसार की यह रीति है और मेरा यह हाल है कि माता पिता ने धन के लोभ से राजाको दिया और यह खड्ग लिये मारने को खड़ा है और देवता को बलिकी इच्छा है दया किसी को भी न आई यह सुन बैताल उसी वृक्ष पर जा लटका और राजा भी वहीं झटपट पहुंचा और उसे बांध कांधे पर रख ले चला॥ १९॥

———oo———

बीसवीं कहानी॥

बैताल बोला ऐ राजा विशाल पुर नाम एक नगर है वहां के राजा का नाम बिपुलेश्वर था उसके नगर में एक बनियां था जिस का नाम अर्थदत्त और उसकी बेटी का नाम अनंगमंजरीथा ब्याह उसका कमल पुरके सुन्नी नाम बनियेसे कर दिया था कितने एकदिनोंके पीछेवह बनियां समुद्रपार बणिजको गया और यहां जब यह जवान हुई तब एक दिन अपने चौबारे पर खड़ी हुई रास्ते का तमाशा देखती थी कि इसमें एक ब्राह्मण का पुत्र कमलाकर नाम

चला जाता था इनदोनों की चारनजरें ऊईं और देखतेही मोहित होगये फिर घड़ी एक के पीछे सूरत संभाल ब्राह्मण का बेटा बिरह से व्याकुल हो अपने मित्र के घर गया और वहां यह भी उसके वियोग की पीर से निपट दुःख में थी कि इतने में सखी ने आनके उठाया पर इसे कुछ अपनी सुधि न थी फिर उसने गुलाब छिड़का और सुगन्धों को सुंघाया कि इतनेमें इसै होश आया और बोली कि ऐ कामदेव महादेव ने तुझे जलाकर भस्म किया तिसपर भी तू अपनी खुटाई से नहीं चूकता और बिन अपराध अब-लाओंको दुःख देताहै ये बातें कर रही थी कि सांझ ऊई और चांददृष्टि आया तब चांदनीकी ओर देख केबोली कि हे चन्द्रमा हमसुनतेथे कि तुममें अमृतहै और किरनों की राहसे अमृत बर्षातेहो सोआज मुझपर तुमभी विष बर्षाने लगे फिर सखी से कहा कि यहां से मुझे उठाकर ले चल कि मैं चांदनी से जली मरती हूं तब वह उसे उठाकर चौबारे पर ले गई और कहा तुझे ऐसी बातें कहतेलाज नहीं आती तब उन्ने कहा ऐ सखी मैं सब जानती हूं पर मन्मथने मुझे मारके निर्लज्ज किया और मैं धीरज बहुतेरा करती हूं पर बिरह की आगसे ज्यों २ जलती हूं त्यों २ मुझे घर बिष सा दृष्टि आता है सखी बोली कि तू खातिर जमारख मैं तेरा सब दुःख दूर करूंगी इतना कह सखी अपने घर गई और इसने अपने जीमें विचारा कि इस शरीर को उसके कारण तजूं और फिर के जन्म ले उससे मिलसुख भोग करूं यह कामना कर गले में फांसी डाल चाहै कि खैंचे इतनेमें सखी आ पहुंची और इसने झट इसके गले से रस्सी निकाल कर कहा जीने से सब कुछ है मरने से नहीं वह बोली कि ऐसे दुःख पानेसे मरना भलाहै सखीने कहा एक घड़ी धीर्य्य धर मैं उसको जाकर ले आती हूं इतना

...ह वहां गई जहां कमलाकर था फिर उसे छिपकर देखा ...ो वह भी बिरह से व्याकुल हो रहा है और उसका मित्र गुलाब के पानी से चन्दन घिस २ उसके बदन में ...गाता है और केले के कोमल २ पत्तों से पवन कर रहा ... तिस पर भी बिरह की आग से वह घबरा कर जलाही ...ला पुकारता है और मित्र से कहता है कि बिष लाटे ... अपना प्राण त्याग कर इस कष्ट से छूटूं इसकी यह ...था देख उसने अपने जी में कहा कैसाही साहसी पंडित ...तुर विवेकी धीर मनुष्य हो पर कामदेव उसे एक क्षण ... बिकल करदेता है इतना अपने मनमें विचार सखी ने ...से कहा ऐ कमलाकर तेरे तईं अनंगमंजरी ने कहा है ...क तू आके मुझै जीदानदे इसने कहा यह तो उसने मुझे ...ीदान दिया इतना कह उठ खड़ा ऊआ और सखी इसे ...पने साथ लिये ऊये उसके पास गई यह वहां जाके देखै ...ा वह मरी ऊई पड़ी है फिर इसने भी एक आहका नारा ...ारा कि उसके साथ इसका दम निकल गया और जब ...वह ऊई तो उसके घरके लोग इन दोनोंको मरघटमें लेगये ...ौर चिता चुनकर उन्हें रख कर आग लगाई थी कि इस ... उसका पति भी परदेश से मरघटकी राह आनिकला ...ब लोगों के रोने का शब्द सुन कर यह वहां गया ...ा देखता क्या है कि इसकी स्त्री पर पुरुष के साथ जलती ... यह भी बिरह से व्याकुल हो उसी आग में जल कर मर ...या यह खबर नगर के लोग सुन आपस में कहने लगे कि ...सा अचरज न आंखों देखा न कानों सुना इतनी कथा ...ह बैताल बोला ऐ राजा इन तीनों में से कौनसा अ-...धिक कामी ऊआ राजा बोला कि उसका पति अधिक ...ामी ऊआ बैताल ने कहा किस कारण राजा ने कहा ...उसने अपनी रानीको और के अर्थ मरीदेख क्रोध त्यागकर

उसके प्रेम में मग्न हो जी दिया वह अधिक कामी हुआ यह बात सुन बैताल फिर उसी वृक्ष परजा लटका राजा भी वहीं जा उसे बांध कांधेपर रख ले चला २० ॥

———०८———

इक्कीसवीं कहानी ॥

बैतालबोला ऐ राजा जयस्थल नाम नगरहै वहांका वर्द्धमान नाम राजाथा उसके नगरमें विष्णुस्वामी नाम ब्राह्मण था उसके चार बेटे थे एक ज्वारी दूसरा कसबी बाज तीसरा छिनला चौथा नास्तिक एक दिन वह ब्राह्मण अपने बेटोंको समझाने लगा कि जो कोई जुआ खेलता है उसके घर में लक्ष्मी नहीं रहती यह सुन वह ज्वारी अपने जी में बहुत दुःखी हुआ और फिर उसने कहा कि राजनीति में ऐसे लिखताहै कि ज्वारीके नाक कान काट देशसे निकाल देना इसी लिये उत्तमहै कि और लोग जुआ न खेलें और ज्वारी के जोरू लड़कों को घरमें होते भी घर में न जानिये क्योंकि नहीं मालूम किस समय हार दे और जो वेश्याके चरित्रों पर मोहित होते हैं सो अपने जीको दुःख बिसाहते हैंऔर कसबी के वश में हो सर्वस्व अपना दे अंतको चोरी करते हैं और ऐसे कहा है कि जो स्त्री आदमी के मनको एक घड़ी में मोह ले ऐसी स्त्री से ज्ञानी दूर रहते हैं और अज्ञानी उससे प्रीति कर अपना सत शील यश आचार विचार नेम धर्म सब खोते हैं और उसको अपने गुरू का उपदेश भला नहीं लगता और ऐसे कहा है कि जिसने अपनी लाजखोई दूसरेको वह कब बेहुरमत करनेसे डरता है और मसल है जो बिलाव अपने बच्चे को खाता है सो चूहे कब छोड़ेगा फिर कहने लगा कि जिन्हों ने बालकपने में विद्या न पढ़ी और जवानी में काम से आतुर हो यौवन के गर्व में रहे सो वृद्धिकाल में पछताकर हिरस की

आगमें जलताहै यह बात सुन उन चारोंनेआपसमें विचार कर कहा कि विद्याहीन पुरुष के जीने से मरना भला है इससे उत्तम यह है कि विदेश में जाकर विद्या पढ़िये यह बात आपस में ठान वे एक और नगर में गये और कितने एक दिनों में पढ़के पण्डित हो अपने घर को चले राह में देखते क्या हैं कि एक कंजर मरे हुये शेर की हड्डी चमड़ा जुदा कर गठरी बांध चाहे कि लेजाय इसमें इन्हों ने आपस में कहा कि आओ अपनी विद्या अज़मावें यह ठहराय एकने उसेबुलाकर कुछदिया और वह मोटले उसे बिदा किया और रस्ते से किनारे हो उस मोट को खोल एक ने सारी हड्डियां कई जगह लगा मंत्र पढ़ छीटा मारा किवे हाड़ लग गये दूसरेने इसी तरह से उनहड्डियों पर मांस जमा दिया तीसरेने उसी भांतिसे मांस परचाम बिठा दिया चौथे ने इसी रीति से उसे जिला दिया फिर वह उठतेही इन चारों को खागया इतनीकथा कह बैताल बोला ऐ राजा उन चारों में कौन अधिक मूर्ख था राजा विक्रम ने कहा जिसने उसे जिला दिया सोई बड़ा मूर्खथा और ऐसा कहा है कि बुद्धि बिना विद्या किसी काम की नहीं बल्कि विद्या से बुद्धि उत्तम है और बुद्धि हीन इसी तरह से मरते हैं जैसे सिंह के जिलाने वाले मरे यह सुन बैताल उसी वृक्ष पर जा लटका फिर राजा उसी तरहबांध कांधे पर रख ले चला २१ ॥

———००———

बाईसवीं कहानी ॥

बैताल बोला ऐ राजा विश्वपुरनाम एक नगरहैवहांका बिदग्ध नाम राजा थाउसके नगरमें नारायणनाम ब्राह्मणथा वह एक दिनअपनेमन में चिन्ताकरनेलगा कि मेराशरीर वृद्ध हुआ और मैं दूसरे की कायामें पैठनेकी विद्याजानता

हूं इससे उचित यह है कि इस पुरानी देह को छोड़ और
किसी युवा के शरीर में जाके भोग करूं जब वह यह
अपने जी में बिचार कर चुका और एक तरुण शरीर में
पैठने लगा तो पहले रोया और पीछे हंसा फिर उस में
पैठकर अपने घरमें आया परंतु इसके सारे कुटुम्ब केलोग
उसके कर्तब कोजानते थे फिर उनके आगेकहने लगा कि
अब मैं योगी हुआ इतना कहके पढ़ने लगा कि आशा के
सरोवर को तपस्या के तेज से सुखा तिसमें मन को रख
के शिथिल करे सो योगी चतुर कहावै और यह गति
संसार के लोगों की है कि अंग गले मुण्ड हिले दांत गिरे
बूढ़े हो लाठी ले फिरें तौ भी तृष्णा नहीं मरती और इसी
तरह से काल चला जाता है दिन हुआ रात हुई महीना
हुआ वर्ष हुआ बूढ़ाहुआ और कुछनहीं मालूम किकौन
हूं और लोग कौनहैं और कौन किसलिये किसीका शोक
करता है एक आता है एक जाता है और अन्तकाल सब
जीव जानेवाले हैं इनमें से एक न रहेगा अनेक अनेक मन
हैं और अनेक २ मोहहैं भांति २ के पाखण्ड महाने रचे हैं
पर बुद्धिमान इनसे बचे आशा और तृष्णा को मार शिर
मुड़ा हाथमें दण्ड कमण्डल ले काम क्रोध को मार योगी
हो नंगे पांव तीर्थ २ डोलते फिरते हैं सो मोक्ष पदार्थ पाते
हैं और यह संसार स्वप्न की तरह है इसमें किसकी खुशी
कीजिये और किसका गम और केलेके गाभे की तरह सं-
सार है इसमें सार कुछ नहीं और धन यौवन बिद्या का
जो गर्ब करते हैं सो अज्ञान हैं और जो योगी हो कमंडल
हाथ मेंले बार बार भीख मांग दूध घी चीनीसे अपने शरीर
को पुष्ट कर कामातुर हो स्त्री से भोग करते हैं सो अपना
योग खोते हैं इतनापढ़कर वह बोला कि अब मैं तीर्थयात्रा
करूंगा यह बात सुन उसके कुटुम्ब के लोग बहुत प्रसन्नहुये

इतनी कहानी कह बैताल बोला ऐ राजा किस कारण
वह रोया और किस कारण हंसा तब राजा ने कहा कि
बालकपन काम का प्यार और जवानी का सुख याद कर
और इतने दिनों उस देह के रहने के मोहसे रोया और
अपनी बिद्या सिद्ध करके नई काया में पैठने की खुशी से
हंसा यह बातसुन बैताल उसीपेड़पर जालटका फिरराजा
उसी तरह से बांध कांधे पर रख लेचला ॥ २२ ॥

———oo———

तेईसवीं कहानी ॥

बैतालबोला ऐराजा धर्मपुर नामनगर वहांका धर्म ध्वज
नामराजा उसके शहरमें गोबिन्दनाम ब्राह्मण चारोंवेदछवो
शास्त्रका जान्नेवालाथा और अपनेधर्म कर्ममें सावधान और
हरिदत्त सोमदत्त यज्ञदत्त ब्रह्मदत्त उसके चारबेटे थे बड़ेप-
ण्डित बड़े चतुर और बापकी आज्ञामें सदारहतेथे कितने
एकदिन पीछे बड़ाबेटा उसका मरगया और वह भी उसके
दुःखसे मरनेलगा तिससमय वहांके राजाका पुरोहित बिष्णु
शर्मा आनकर उसैसमझाने लगा कि यहमनुष्य जिससमय
माताकेगर्भमें आताहै पहिलेवहीं दुःखपाताहै दूसरे बाला
पनमें अनेकअनेक रोगोंसे सताया जाता है अपना दुखदर्द
नहीं कहसक्ता तीसरे जावानीमें कामके बशहो प्रियतमके
बियोगसे दुखसहताहै चौथेबूढ़ाहो अपनेशरीरके निर्बलहोने
से दुःखमें पड़ताहै गरजसंसारमें जन्मलेनेसे बड़ेदुःख होतेहैं
और सुखथोड़ा क्योंकि यहसंसार दुःखका मूलहै अगरकोई
वृक्षकी फुनगपर जा चढ़ै या पहाड़ की चोटी पर जा बैठै
या पानीमें छिपरहै या लोहेके पिंजरेमें घुसरहै या पातालमें
जा छिपै तौभी कालनहीं छोड़ता और पण्डितमूर्ख धनवान्
निर्धनज्ञानी अज्ञानी बलवान निर्बल कैसाही कोई होवे पर
यहसर्बभक्षी काल किसीको नहींछोड़ता तबसौ वर्षकी म-

मुष्यकी आयुर्बलहै तिसमेंसे आधीतो रातमें जातीहै और
आधीकी आधीबाल और वृद्ध अवस्था में गई जो रही सो
बिवाद बियोग शोकमें बीततीहै और जीव जोहै पानीकी
तरंग की तरह चंचलहै इससे इस मनुष्यको सुखकहां और
अब कलियुगके समय सत्यवादी मनुष्य मिलने दुर्लभहैं और
दिनबदिन देश उजड़तेहैं राजालोभी होतेहैं पृथ्वी मंदफल
देती है चोर दुराचौरी पृथ्वीमें उपाधि करते हैं और धर्म
में तपसत संसारमें थोड़ा रहा है राजा कुटिल ब्राह्मण लाल
ची लोग स्त्रीके बश हुएस्त्री चंचल हुई पिता की निंदा पुत्र
करने लगे और मित्र शत्रुता और देखो जिसका मामा क-
न्हैया और पिता अर्जुन तिस अभिमन्यु को भी कालने न छोड़ा
और जिससमय मनुष्यको यमले जाताहै लक्ष्मी उसके घरमें
रहती है और मा बाप जोरू लड़का भाई बंधु कोई काम
नहीं आता भलाई बुराई पाप पुण्यही साथ जाता है और
बेई कुनबेके लोग उसे मरघटमें ले जला देते हैं और देखो
इधर रात ब्यतीत होती है उधर दिन आता है इधरचांद
अस्त होताहै उधर सूर्यउदय ऐसेही जवानी जातीहै बुढ़ा-
पा आताहै इसीतरह से कालबीता चलाआता है पर यह
देखकर भी इस मनुष्यको ज्ञाननहीं होता और देखो सत-
युगमें मान्धाता ऐसा राजा जिसने धर्मके यशसेसारी पृथ्वी
को छा दिया था और त्रेता में श्रीरामचन्द्र राजा कि जि-
न्होंने समुद्र का पुल बांधि लंकासा गढ़ तोड़ रावण को
मारा और द्वापर में युधिष्ठिर ने ऐसा राज किया कि जि-
सका यश अबतक लोग गाते हैं पर काल ने उन्हें भी न
छोड़ा और आकाशके उड़ने वाले पक्षी और समुद्रके रहने
वाले जीव समय पाय वेभी आपत्ति में आ पड़ते हैं इस
संसारमें आके दुख से कोई नहीं छूटा इसका सोच करना
वृथा है इससे उत्तम यह है कि धर्मकाज कीजिये इसतरह

से जब विष्णु शर्मा ने समझाया तब उस ब्राह्मण के जी में
आया कि पुण्यकाज कीजिये यहमनमें सोच अपने बेटों से
कहा कि मैं यज्ञकरने बैठताहूं तुम समुद्रसे जाकर कछुआ
लेआओ अपनेबापकी आज्ञा पा एक धीवरसे जाकर उन्हों
ने कहा कि एक रुपैया ले और कच्छपपकड़ दे उसनेलिया
और पकड़दिया तब उनमेंसे बड़े भाईने मझले से कहा तू
उठाले उसने छोटे से कहा भाई तू उठाले उसने कहा मैं
इसे न छुऊंगा मेरेहाथमें दुर्गन्धआवेगी और मैं भोजनक-
रने में चतुरहूं मंझलाबोला मैं स्त्रीरखनेमें चतुरहूं बड़ेने कहा
मैं सेजपर सोनेमें चतुरहूं इसतरह तीनोंविबाद करने लगे
और कछुयेको वहीं छोड़ झगड़ते हुये राजाके द्वारपर जा
द्वारपालसे कहा कि तीन ब्राह्मण नालिशी आयेहैं यहजा
के तू राजासे कह यह सुनके दरवान ने राजाको खबर दी
राजाने बुलवाकर पूछा कि तुम किसवास्ते आपस में झग-
ड़ते हो तब उनमेंसे छोटा बोला कि महाराज मैं भोजनमें
चतुर हूं मंझले ने कहा कि पृथ्वी नाथ मैं नारी चतुर हूं
बड़ेनेकहा मैं शय्याचतुर हूं यहसुन राजाने कहा कितुम
अपनी २ परीक्षादो इन्होंने कहा बहुत अच्छा राजाने अपने
रसोइये को बुलाकर कहा कि भांति २ के व्यंजन और प-
कवानबना इसब्राह्मणको अच्छीतरह भोजन करवाओ यह
सुन रसोइये ने जा रसोई तैयार कर उस भोजन चतुर को
लेजा थालपरस बिठलाया चाहै कि वह ग्रासउठा मुंहमें दें
त इसमें दुर्गन्ध आई उसेछोड़ हाथधो राजाके पासआया
राजा ने पूछा कि तूने सुखसे भोजन किया तब उसने कहा
कि महाराज अन्नमें दुर्गन्ध आई मैंने भोजन न किया फिर
राजाने कहा दुर्गन्धका कारण कह उसने कहा महाराज
मरघट की भूमिके चांवल थे मुरदे की बू उसमेंसे आई थी
इसकारण न खाया यह सुनके राजाने अपने भंडारी को

बुलाकर पूछा चरि थे किस गांव के चावल थे उसने कहा महाराज शिवपुर के राजाने कहा वहां के, किसान को बु-लाओ तब भंडारीने उसगांवके जमींदार को हुजूरमें बुलाया राजाने पूछा ये किसभूमिके चावलहैं उसनेकहा महाराज श्मशान के हैं यह सुनके राजाने उस ब्राह्मण के लड़के से कहा कि तू सच भोजन चतुर है फिर नारीचतुर को बु-लवा एकमकान में पलंग बिछवा घर सुघीके सामान रख एक अच्छीस्त्रीकोबुलवा उसकेपास करदिया और वे दोनों बैठे हुये आपस में बातें करनेलगे राजा छिपके झरोखे से देखनेलगा और उसब्राह्मण ने चाहा कि उसका बोसः ले इसमें उसके मुंह की बास या मुंह फेर सो रहा राजा ने यह चरित्र देख अपने मन्दिरमें आकर आरामकिया भोरके समयउठसभामेंजा उसब्राह्मणको बुलाकरपूछा किहेब्राह्मण आजकी रात तू ने सुखसे काटी उसने कहा महाराज सुख न पाया फिर राजानेकहा किसकारण ब्राह्मणनेकहा उसके मुखसे बकरीकी गन्ध आतीथी इससे मेराजीव बहुतबेचैन रहा यह सुन राजाने कुटनी को बुलाकर पूछा कि इसे तू कहांसेलाईथी और यहकौनहै उसनेकहा मेरीबहिन की बेटीहै जबतीन महीनेकीथी तबइसकी मामरगई और मैंने इसेबकरीकादूध पिलापिला करपालाहै यहसुनराजानेकहा अब तू नारीचतुरहै फिरसेजचतुरको अर्द्धेर बिछौने करवा पलंगपर सुलवाया प्रभातहुयेराजाने उसेबुलाकरपूछा कि रातभर सुखसे सोया उसने कहा महाराज रातभर नींद आई यहसुन राजानेकहा किसकारण उसनेकहा महा-राज इसकीसातवीं तहमें एकबालहै वह मेरीपीठमें चुभता था इससे नींद न आई यहसुनराजा ने उस सातवींतह में देखातो एकबाल निकला तब उससे कहा कितू सच सेज चतुरहै इतनीबात कहि बैतालने पूछा ऐराजा उनतीनोंमें

कौन अति चतुरहै राजाने कहाजो सेज चतुर है यह सुन बैताल फिर उसी वृक्षपर जा लटका राजा भी वहींजा उसे बांध कांधेपर रखले चला ॥ २३ ॥

चौवीसवीं कहानी ॥

बैतालने कहा ऐराजा कलिंगदेश में एक यज्ञशर्मानाम ब्राह्मण तिसकीस्त्रीका नाम सोमदत्ता अतिरूपवती थीवह ब्राह्मण यज्ञ करनेलगा इसमें उसस्त्री के एक सुन्दर लड़का हुआ जब वह पांच वर्षका हुआ तब बाप उसका शास्त्र पढ़ानेलगा बारहवर्ष की उमरमें वह सबशास्त्र पढ़के बड़ा पण्डितहुआ और सदा अपने बापकी सेवामें रहनेलगा कुछ दिनके बीते वहलड़का मरगया उसके शोकमें उसकेमाता पिता चिल्ला २ रोनेलगे यह खबर पा सारे कुनबे के लोग धाये और उसलड़के को अरथीमें बांधकर श्मशानमें लेगये और वहांजा उसेदेख आपसमें कहनेलगे देखो मुयेपर भी सुन्दर लगताहै इसीतरह से बातें करते थे और चिता चु-नतेथे कि वहां एकयोगी भी बैठा तपस्याकर रहाथा यह तसुन वह अपनेजीमें विचारनेलगा कि मेराशरीर अति वृद्धहुआ जोइस लड़केके शरीरमें पैठूं तो सुखभोग योगकरूं यह सोचकर वहउस लड़के के शरीर में पैठगया करवटले राम कृष्णकहि ऐसा उठबैठा जैसेकोई सोतेसे उठबैठे यह देख तमामलोग अचंभेमें हो अपने २ घरआये और उसके को यह अचरज देखकर वैराग्यहुआ पहिले हंसा पीछे याइतनीकथाकहि बैतालबोला ऐराजाविक्रम कहोवह क्योंहंसा और क्योंरोया तबराजाने कहाकि योगीकोइसके शरीरमें जातेदेख और यहविद्या सीखकरहंसा और अपने शरीरके छोड़नेकेमोहसेरोया कि एकदिन इसीतरहमुझे भी अपनाशरीर छोड़नापड़ेगा यहसुन बैतालफिर उसीवृक्ष

परजा लटका और राजाभी पीछेजा उसेबांधकांधे पररखले
चला ॥ २४ ॥

पच्चीसवीं कहानी ॥

बैतालबोला ऐराजा दक्षिणदिशामें धर्मपुरनगर है वहां
के राजाका नाम महाबल है एक समय उसीदेश का एक
और राजा फौजले चढ़आया और उसकानगर आन घेरा
कितनेएक दिनों लड़तारहा जबसेना इसकी मिलगई और
कुछ कटगई तबलाचारहो रातमें रानीको बेटी समेत साथ
ले बनमें निकलगया जबकई एक कोस बनमें पहुंचातो प्र-
भातहुआ और एकगांव नजरआया तब रानी और राजा
कन्याको एक पेड़तले बिठला आप गांवकी तरफ खानेका
कुछसामान लेनेचलाथा कि इतनेमें भीलोंने आनघेरा और
कहा हथियार डालदे यहसुनके राजाने तीरमारना शुरूअ-
किया और उधरसे उन्होंने इसतरह एक पहर लड़ाई की
और कितने एक लोग भीलोंके मारेगये इतने में एकतीर
राजाके माथेमें ऐसालगा कि भैराके गिरपड़ा और एक [illegible]
आ राजाका शिरकाट लियाजब रानी और राज कन्या [illegible]
अपने राजाको मुआ देखा तो रोती पीटती उलटी बनके [illegible]
चलीं इसीतरह से कोशदो एक चल मादी होके बैठीं और
अनेक२ भांतिकी चिन्ता करनेलगीं इतनेमें चन्द्रसेन राजा
और उसका बेटा दोनों शिकार खेलतेहुये उसीओर [illegible]
निकले और दोनोंके पांवके चिन्हदेख राजाने अपने [illegible]
कहा कि इस महाबनमें आदमीके पांवके निशान क[illegible]
आये राजपुत्रने कहा महाराज येचरण चिन्ह स्त्रियोंके है
पुरुषका पांवऐसा छोटानहीं होता राजाने कहासच ऐसा
कोमलचरण पुरुषका नहीं होता फिर राज कुमारने कहा
इसी समय गईहैं राजाने कहाचलो इसबनमें ढूंढेंजोमिलें

तो जिसका यहबड़ा पांवहै सोतुझेदूंगा और दूसरीमैंलूंगा
इस तरह आपस में बचन बन्दहो आगे जा देखें तो दोनों
बैठी हुई हैं उन्हें देख खुशहो अपने २ घोड़ेपर बिठा घरले
आये रानी को राज कुंवर ने रक्खा और राजकन्या को
राजाने इतनी कथा कहिकर बैताल बोला ऐराजा विक्रम
उनदोनों के लड़कों का आपसमें क्या नाता होगा यह सुन
राजा अज्ञानहो चुपरहा फिर बैताल खुशहो बोला कि ऐ
राजा मैंतेरा धीरज और साहसदेख अति प्रसन्नहुआ पर
एकबात मैंकहता हूं सोतू सुन कि जिसके शरीर के रोम
समान कांटों के और देह काठसी और नाम शान्ति शील
सोतेरे नगरमें आया है और तुझे उसने मेरे लेने को भेजा
है आपबैठा मरघटमें मंत्रजगा रहा है और तुझेमारा चा-
हता है इसलिये मैंजता देता हूं कि जब पूजाकर चुकेगा
तब तुझसे कहेगा कि ऐ राजा तू आकर योग कर तब तू
कहियो मैं सब राजाओंका राजाहूं और सब राजा मुझे
[illegible]नके दण्डवत् करतेहैं मैंने आजतक किसीको दण्डवत्
[illegible]हीं की और मैं नहीं जानता आप गुरू हैं कृपा करके
[illegible]बादीजिये तो मैंकरूं जब वह दण्डवत्करै तबऐसा खड्ग
[illegible]ारियो कि शिर जुदा होजाय तब तू अखंड राज्यकरेगा
[illegible]ार जो तू यह न करेगा तो वह तुझे मार अचल राज्य
करेगा इतनी बात राजाको चिता बैताल उस मुर्देके देह
[illegible] निकल कर चला गया और कुछ रात रहते वह मुरदा
[illegible]ाजा ने योगी के आगे रख दिया योगी ने उसको
[illegible] खुश हो राजा की बहुत सी बड़ाई की फिर मंत्र
[illegible]ढ़ उस मुरदे को जगाया होम कर बलि दिया और द-
क्षिणकी तरफ बैठजितना कुछ सरंजाम तैयार कियाथा सो
अपने देवता को चढ़ा दिया और पानफूल धूपदीप नैवेद्य
दे पूजा कर राजा से कहा कि तू दण्डवत कर तेरा बड़ा

तेज प्रताप होगा और अष्टसिद्धि नवनिद्धि सदा तेरे घरमें रहैंगी यह सुन राजा ने बैताल की बात याद कर हाथ जोड़ निपट अधीनता से कहा कि महाराज मैं प्रणाम करने नहीं जानता पर आप गुरु हैं जो कृपा करके सिखाइये तो मैं करूं यह सुन योगी ने ज्यों हीं दण्डवत करने को शिर झुकाया त्योंहीं राजा ने एक खड्ग मारा कि शिर जुदा होगया और बैताल ने आन फूलों का मेंह बर्षाया ऐसा कहा है कि जो अपने तईं मारा चाहे उसके मारने से अधर्म नहीं उस समय राजाका साहस देख इन्द्र समेत सब देवता अपने अपने बिमानों पर बैठ वहां जय २ कार करने लगे और राजा इन्द्र ने प्रसन्न हो राजा बीर बिक्रमादित्य से कहा कि वर मांग तब राजाने हाथ जोड़ कर कहा महाराज यह कथा मेरी संसार में प्रसिद्ध हो इन्द्रने कहा कि जबतक चांद सूर्य पृथ्वी आकाश स्थिर हैं तब तक यहकथा प्रसिद्ध रहेगी और तू सर्वभूमिका राजा होगा इतना कह राजा इन्द्र अपने स्थान को गया और राजा ने उन दोनों लोथों को ले उसतेल के कड़ाव में डा[illegible] दिया तब वे दोनों बीर आ हाजिर हुये और कहने [illegible] कि हमें क्या आज्ञा है राजाने कहा जब मैं याद करूं त[illegible] तुम आना इसतरह से उनसे बचन ले राजा अपनेघर आ[illegible] राज करने लगा ऐसा कहा है कि पण्डित हो या मूर्[illegible] या लड़का हो या जवान जो बुद्धिमान होगा उस[illegible] जयहोगी ॥ २५ ॥

इति बैताल पचीसी सम्पूर्ण ॥

———००———

पुस्तकों की फ़ेहरिस्त ॥

नामपुस्तक	नामपुस्तक	नामपुस्तक
छठीं तिथि बोध	बिहारी सतसई सटीक	कीतयाहिनाई काग़ज़की
सातवींपुस्तकमालदत्ताक्षत	अपूर्व कथा	परमार्थ सार नागरी
भरतरी गीत	वैष्णवी संध्या	जातकचंद्रिका नागरी
कथा सत्यनारायण स०	विद्यार्थीकी प्रथम पुस्तक	रामाभिषेक नाटक
शार्ङ्गधर सटीक	बिश्राम सागर	इंद्र सभा नागरी
सिद्धान्त चन्द्रिका	राम लगन	भगवतगीताविष्णु सहस्र
मुहूर्त्त गणपति	मनुस्मृति उर्दू टीका	नाम सहित
शनिश्चर को कथा	बागो बहार नागरी	लघु जातक भाषा टीका
अमर कोष प्रथम काण्ड	गुलसनोबर नागरी	सहित
तथा तीनों काण्ड	बारहमासाबलदेवप्रसाद	कल्पसूत्र
भाषा टीका सहित	कथा चित्रगुप्त	जगत बिनोद
अनेकार्थ प्रकाश	प्रबोधचंद्रोदय नाटक	भाषा जातकालंकार
तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	भजनावली	ज्ञान स्वरोदय
राम कलेवा	गीतगोबिन्द सटीक	निघंट भाषा
आनन्दाम्बुत वर्षिणी	कृष्ण बाललीला	सुखसागर
गंगालहरी	कृष्ण सागर	व्रजबिलास
[illegible]हावली रत्नावली	कायस्थ दर्पण	सिंहासनबतीसी
चित्रचन्द्रिका	हारीत स्मृति नागरी	शुकबहत्तरी
कविकुल कल्पतरु भाषा	भगवत्गीता सटीक ना०	छन्दोर्णव पिंगल
स्त्री दर्पण	सहस्त्ररजनीचरित्रजो उर्दू	बालाबोध
संग्रह शिरोमणि	अलिफ़लैलासेतर्जुमा हुई	हिदायतनामामालगुज़ारी
[illegible]र्चन	रामायण राम बिलास	हिदायतनामाबन्दोबस्त
[illegible] बिहार बिन्द्राबन	कल्प सूत्र भाषा नागरी	देवीभागवत नागरी
[illegible] कल्प वल्ली	यमुना लहरी	भगवती गीता
श्री [illegible]जी मूल	कमीसन बड़ोदा	ताजीरात हिन्द अर्थात्
गुलबकावली	षट्पंचाशिका	ऐक्ट ४५ सन् १८६० ई०
प्रेम रत्न	विनय पत्रिका नागरी	ऐक्ट २५ सन् १८६१ ई०
बिजयमुक्तावली	रामायणबड़ी मोटेअक्षरों	ज़ाबिते फ़ौजदारी

पुस्तकों की फेहरिस्त ॥

नामपुस्तक	नामपुस्तक	नामपुस्तक
मजमूआऐक्टलगान अवध	इंगलिस्तानका इतिहास	लंका काण्ड
जिसके साथ नीचे लिखे	गणित लता २ भाग	उत्तर काण्ड,
हुये ऐक्ट संयुक्त हैं।	तथा ३	अक्षरारम्भ
ऐक्ट १९ सन् १८६३ ई०	गणित प्रकाश १ भाग.	भाषातत्व दीपिका
ऐक्ट १४ सन् १८६५ ई०	तथा २भाग	बाला भूषण
ऐक्ट १६ सन् १८६५ ई०	तथा ३ भाग	हिदायत नामा मु
ऐक्टनम्बर२६ सन्१८६६ई०	तथा ४ भाग	शान् हल्काबन्दी
ऐक्ट २० सन् १८६६ ई०	क्षेत्र चन्द्रिका २ भाग	शिक्षावली
ऐक्ट २४ सन् १८७० ई०	रेखा गणित १ भाग	भोजप्रबन्ध सार
ऐक्ट १० सन् १८५९ ई०	तथा २ भाग	राजनीति
ऐक्ट ५ सन् १८६१ ई०	बीज गणित १ भाग	स्त्रियों की हितोप
ऐक्ट १० सन् १८६२ ई०	तथा दूसरा भाग	धात्वर्णव
ऐक्ट १८ सन् १८६९ ई०	सूरज पुरकी कहानी	अवध का भूगोल
ऐक्ट २६ सन् १८६७ ई०	विद्याचक्र	अक्षरावली
ऐक्टनम्बर१९ सन्१८६०ई०	भूगोल तत्व	पशुचिकित्सा
क़वायद रेलवे और उस	पदार्थ विद्यासार	कवितरत्नाकर
के साथ कानून भी हैं।	वर्ण प्रकाशिका	भूगोल दर्पण
ऐक्ट १८ सन् १८७३ ई०	मंगल कोष	महाभारथ भाषा १
अर्थात् क़ानून लगानमु-	पत्र दीपिका	जो किताबें छपर
मालिकमग़रबीवशिमाली	भरत खण्डिका	अमीर हमजा
ऐक्ट ११ सन् १८७४ ई०	क्षेत्रप्रकाश	व्रतार्कभाषाटीका
ऐक्ट १० सन् १८७२ ई०	पशुहितैषिणी	निर्णयसिन्धु
सर्टिफिकेट तालीमकी	रामायण सातो काण्ड	योग वाशिष्ठ भाष
पुस्तकें	बाल काण्ड	अति शुद्ध देव
अक्षर दीपिका	अयोध्या काण्ड	भाषा में रूपता
विद्यांकुर	आरण्य काण्ड	विद्वन्मोदतरंगिणी
बालबोध	किष्किन्धाकाण्ड	पद्य संग्रह
भाषा चंद्रोदय	सुन्दर काण्ड	गीतावली भाषा
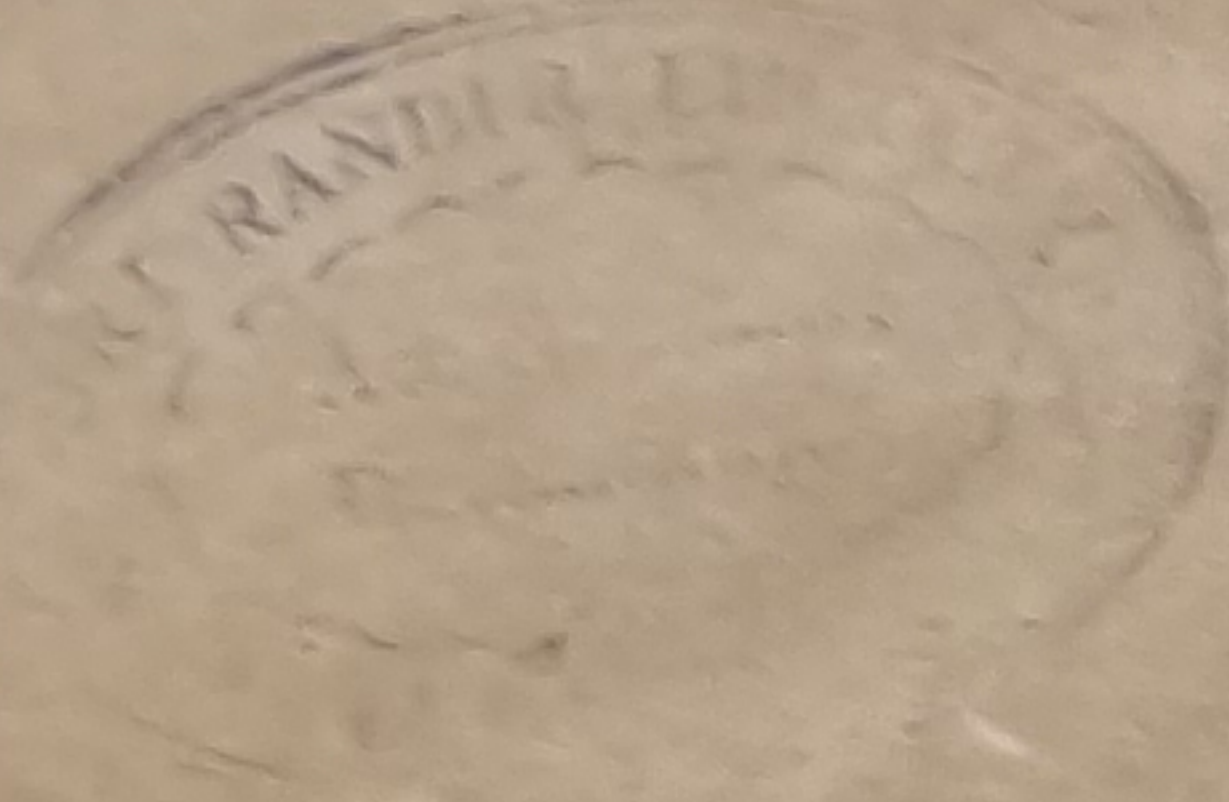
Para Trimshika

कश्मीर- संस्कृतग्रन्थावलि

श्री परात्रिंशिका।

सन् 1918

Desh-o-Pardesh.

देशोपदेश- नर्ममालाग्रन्थौ

ई 1923